Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सूची

1. श्रीमती आशा देवी	–	अध्यक्ष
2. श्री राधेश्याम गुप्ता	–	उपाध्यक्ष
3. श्री दीपक गोयल	–	सचिव
4. कु॰ पुष्पा शर्मा	–	सदस्य
5. डॉ॰ मधु गर्ग	–	सदस्य
6. श्री अनिल खण्डेलवाल	–	सदस्य
7. श्री असलूब अहमद	–	सदस्य
8. श्री अवि प्रकाश मित्तल	–	सदस्य
9. डॉ॰ एल. सी. गौड़	–	प्राचार्य
10. डॉ॰ वाई के गुप्ता	–	शिक्षक प्रतिनिधि
11. डॉ॰ अन्तिमा कुलश्रेष्ठ	–	शिक्षक प्रतिनिधि
12. डॉ॰ सुरेन्द्र सिंह	–	शिक्षक प्रतिनिधि
13. डॉ॰ बी. डी. उपाध्याय	–	शिक्षक प्रतिनिधि
14. डॉ॰ बी. डी. गुप्ता	–	शिक्षाविद्
15. डॉ॰ धर्मेन्द्र गोयल	–	शिक्षाविद्
16. श्री मनोज यादव	–	तृतीय श्रेणी (कर्मचारी प्रतिनिधि)

Scanned by CamScanner

2005-06

ज्ञान-पुष्प

प्रथम प्रसून

संरक्षक : **डॉ० एल० सी० गौड़**, प्राचार्य

प्रधान सम्पादक :

डॉ० योगेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता वाणिज्य संकाय

सम्पादक मण्डल

डॉ० अन्तिमा कुलश्रेष्ठ

डॉ० सुरेन्द्र सिंह यादव

डॉ० बी०डी० उपाध्याय

ज्ञान महाविद्यालय

आगरा रोड, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

विविध संदेश / व्यक्तित्व एवं कृतित्व / सम्पादकीय
पृष्ठ 1 - 15

क्रम०	विवरण	लेखक	पृष्ठ सं०
1.	सरस्वती वन्दना	कमलेश कुमार पाण्डेय	16
2.	हमारा महाविद्यालय	कृष्ण कुमार कश्यप	17
3.	सफलता की कुंजी	बृजेश कुमार शर्मा	18
4.	शिक्षा का निजीकरण : कितना उचित, कितना अनुचित	सन्तोष डागर	19-21
5.	शोध एवं शोधार्थी	डॉ० जयप्रकाश गुप्ता	22-25
6.	नैतिक मूल्यों का संरक्षण क्यों ? कैसे ?	चितरंजन तिवारी	26-29
7.	भगवान को चुनौती	ललितेन्द्र कुमार	29
8.	मौसी क्यों समझती ? कटु दुश्मन	सूरज पाल सिंह	30
9.	नाम बताओ तो जानें	कृष्ण कुमार कश्यप	30
10.	शीर्षक "जरूरत है पत्नी की"	श्वेत कुमार	31
	● शायरी	श्वेत कुमार	31
11.	हार नहीं होती	लवनीश जैन	32
12.	आश्चर्यजनक तथ्य	आकाश कुमार शर्मा	32
13.	पहेलियाँ	नीरज माहेश्वरी	32
14.	विद्यालय एक परिवार	शिवांगी शर्मा	33-34
15.	प्रयास को सर्वाधिक महत्व दीजिये	पूजा रानी	35
16.	गायत्री मंत्र	रामनिवास वर्मा	35
17.	लाभ किसका - दुःख का या सुख का	श्रीमती रीमा अग्रवाल	36-37
	● गम	श्रीमती रीमा अग्रवाल	37

Scanned by CamScanner

18.	नैतिक मूल्य	गोपाल कृष्ण गौतम	38–40
19.	साक्षरता	कु० दुर्गेश शर्मा	41
20.	साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई	अलका केसरी	42–44
21.	समाज में दामाद की स्थिति	सुमन	
22.	पाण्डुलिपियों की सुरक्षा तथा बचाव के उपाय	डॉ० कुसुमलता	45–48
23.	निरक्षरता – मानव जाति के लिए अभिशाप	महीपाल सिंह	49–53
24.	देश के नौजवान साथियों को संदेश	सन्तोष कुमार गौतम	54
25.	छात्र शक्ति	ओमेन्द्र कुमार	54
26.	अलीगढ़ नगर	ओमेन्द्र कुमार	55–60
27.	जीवन	सतेन्द्र कुमार	61–63
28.	बेकारी	सतेन्द्र कुमार	64
29.	शिक्षा	प्रीति कौशिक	64
30.	सदी व शताब्दी	डॉ० योगेश कुमार गुप्ता	65–70
31.	प्रबंधिका (कहानी)	धीरज यादव	71–77
32.	समय का सदुपयोग	डी.के. रावत	78–79
33.	देश–भक्ति गीत	अखलेश कुमार राजपूत	80
34.	India-Vision 2020	Deepak Goel	81–83
35.	Value of Education	Dr. Yogesh Kumar	84
36.	The Rule of Earthworms for Human Health	Dr. Mamta Sharma	85–86
37.	Friendship	Vandana Tomar	86
38.	INDIA-as a paradise	Dr. Bharat Bhushan	87–90
39.	Education for all	Dr. Keerti Upadhyay	91–92
40.	Please Pay Attention	Priyanka Gaur	92
41.	Literature and Life	Km. Archana Agrawal	93

Scanned by CamScanner

42.	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान– बढ़ता महत्व एवं रोजगार संभावनायें	डॉ० कुसुमलता शर्मा	94-96
43.	पुस्तकालय का महत्व	डॉ० शिवदत्त शर्मा	97-99
44.	INDIA-A Multifaceted Destination	Dr. Jugendra Sharma	100-101
45.	India	Dr. B.D. Gupta	102-105
46.	Rules of Living	Farazuddin	105
47.	Friend and Friendship	Ashok Km. Yadav	106
48.	Our Last Wish	Priyanka Gaur	106
49.	Jokes	Shwet Kumar	107-108
50.	Believeness	Rahul Gupta	108
51.	Smile	Vikas Juneja	109
52.	A Teacher	Km. Durgesh Sharma-II	109
53.	Chartered Accountancy	Sumit Manglam	110
55.	छात्र–संघ 2004–2005	–	111
56.	छात्र–संघ 2005–2006	डॉ० योगेश कुमार गुप्ता	112
57.	शैक्षिक भ्रमण कुमाऊ मण्डल	ब्रजेश कुमार	113-120
58.	खेलों की महत्ता	डॉ० योगेश कुमार गुप्ता	121
59.	माँ	सुमन	122
60.	दुनियां	प्रेक्षा	122
61.	क्या प्रभावशाली शिक्षण के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है ?	सुरेन्द्र बाबू चेतक	123-124
62.	Education ?	Sandhya Singh	125
63.	Allergy	Dr. Antima Kulshrestha	126
64.	Students and Politics	Brajesh Kumar Sharma	127
65.	Value of Time	Lalitendra Kumar	127
66.	Humanism of Mahatma Gandhi	Pawan Kumar	128

Scanned by CamScanner

संस्थापक

पुण्य-श्लोक

स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी

उदय
सन् 1923

अवसान
सन् 2002

Scanned by CamScanner

Our Tribute to

LATE Dr. GYANENDRA GOEL

Founder
Gyan Mahavidhyalaya, Aligarh

Vision of Dr. Goel was to ensure all round development of Gyan Mahavidyalaya, Aligarh in field of Higher/Professional education.

Above philosophy of Dr. Goel is charter of whole Gyan Mahavidyalaya family. We pray to the Almighty to give us the desired power to follow the path enlightened by Dr. Goel to achieve the goal.

This will be a better way to pay respectful homage to Dr. Goel by Gyan Mahavidyalaya family members. May God provide peace to the noble soul.

Scanned by CamScanner

CH. BIJENDRA SINGH
Member of Parliament
(Lok Sabha)

सत्यमेव जयते

43, 45, South Avenue
New Delhi - 110011
Phone : 23019414

6, Kismor Nagar, ITI Road, Aligarh
Phone : (0571) 2501740, 2402020

संदेश

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ के संस्थापक दिवस समारोह दिनांक 11-09-2005 में भाग लेकर मुझे विशेष हर्ष का अनुभव हुआ । उक्त संस्थान में वाणिज्य, विज्ञान व शिक्षा संकायों में विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन हो रहा है, जो क्षेत्र के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य का कारण बनेगा । महाविद्यालय की माँ सरस्वती पुस्तकालय एवं विभिन्न प्रयोगशालाओं को आधुनिक साज-सज्जा के साथ देखकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई । भवन विस्तार की प्रक्रिया सतत् रूप से चल रही है, इसने भी मुझे प्रभावित किया है । कार्यक्रम की सफलता हेतु मैं महाविद्यालय प्रबन्धन, प्राचार्य, प्रवक्तागण, स्टाफ के सभी सदस्यगण एवं समस्त विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ और महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास हेतु उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ ।

चौ० बिजेन्द्र सिंह
सांसद

Scanned by CamScanner

Phones : 23019080
23012692
23019606
Extn. 472

ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

24, Akbar Road, New Delhi-110011

Vivek Bansal
Secretary
(M.L.A., Aligarh)

"AYODHYA KUTI"
Marris Road, Aligarh - 202 001
Ph. : 0571-2403302, 2403476, 2400777

बधाई संदेश

"ज्ञान पुष्प" पत्रिका का ज्ञान महाविद्यालय में इस वर्ष से प्रकाशन होना मेरे लिए बहुत हर्ष की बात है, पत्रिका समाज का मार्गदर्शन करने में अपना बहुमूल्य योगदान देगी ऐसा मुझे विश्वास है ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करते हुये पत्रिका परिवार को बहुत-बहुत बधाई ।

शुभकामनाओं सहित !

सेवा में,

डॉ० योगेश कुमार गुप्ता
प्रधान सम्पादक,
ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड
अलीगढ़

विवेक बंसल
विधायक

Scanned by CamScanner

श्याम सुन्दर शर्मा
पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री

मंत्री
उत्तर प्रदेश

दूरभाष : 2237101 (का०)
सी. एच. 3420
2236853 (आ०)
उत्तर प्रदेश शासन
नवीन भवन, 8-द

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ द्वारा वार्षिक पत्रिका "ज्ञान-पुष्प" का प्रकाशन किया जा रहा है ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों को गति मिलेगी ।

वार्षिक पत्रिका "ज्ञान-पुष्प" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं ।

(श्याम सुन्दर शर्मा)
पूर्व मंत्री
उच्च शिक्षा, उ० प्र०

Scanned by CamScanner

डॉ. गिरीश चन्द्र सक्सैना
पूर्व कुलपति

फैक्स : 520051
कार्यालय : 520051, 358669
निवास : 352139

डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
(पूर्ववर्ती आगरा विश्वविद्यालय, आगरा)

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपका महाविद्यालय, अपनी वार्षिक पत्रिका "ज्ञानपुष्प" का प्रकाशन करने जा रहा है।

छात्र-छात्राओं में अपार क्षमताएं एवं संभावनाएं निहित होती हैं। पत्रिका के माध्यम से उनकी सृजनात्मक प्रतिभा विकसित कर उनके जीवन का सर्वांगीण विकास तथा चरित्र-निर्माण किया जा सकता है, जिससे वे एक श्रेष्ठ नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र-सेवा में तत्पर होते हैं।

मैं इस अवसर पर समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अपनी शुभ-कामनाएं देते हुए, पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(जी०सी० सक्सैना)

Scanned by CamScanner

Principal's Message

Publication of Mahavidyalaya magazine entitled. "GYAN-PUSHP" is a matter of great pleasure to me. I observe its applicability in the hands of the readers through views outlined by our staff and students.

I believe that it is a team work. I wish to appreciate the efforts of Dr. Yogesh Kumar Gupta alongwith his team of colleagues and students who not only collected the material of Gyan Pushp but also summarised the same in presentable form. Co-operation of all who helped any way in compiling the college magazine is thankfully acknowledged.

Dr. L.C. Gaur
Principal

Scanned by CamScanner

कर्मयोगी डा० ज्ञानेन्द्र गोयल

(व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

डा० ज्ञानेन्द्र गोयल का जन्म 11 सितम्बर 1924 को पिता प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व समाजसेवी डा० रघुनन्दन प्रसाद व माता सरस्वती के यहाँ मेरठ जिले के मवाना में हुआ ।

आपने प्राथमिक शिक्षा मवाना में ग्रहण करने के उपरान्त बी.एस.सी. की उपाधि सेंटजोंस कालेज, आगरा से प्राप्त की । आपने सरोजिनी नायडू मैडीकल कालेज, आगरा के शुरूआती द्वितीय बैच से एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त की । इसके बाद आपने अमृतसर मैडीकल कालेज से डी.टी.डी. की उपाधि लेकर टी.बी. में विशेष योग्यता प्राप्त की । आपने अमेरिका के विख्यात सर्जन डा० जोंस से फेंफड़ों की शल्य चिकित्सा में महारत हासिल करके, फेंफड़ों की शल्य चिकित्सा में प्रथम भारतीय सर्जन बनने का गौरव प्राप्त किया ।

सन् 1952 में आपने क्षय चिकित्सालय के रूप में माँ सरस्वती टी.बी. अस्पताल की स्थापना की जोकि मथुरा के जयसिंहपुरा में अनवरत रूप से उनकी स्मृतियों को संजोये हुए संचालित है ।

आपने अपने इस अस्पताल के माध्यम से बृज क्षेत्र व आगरा मंडल के लाखों टी.बी. रोग से ग्रसित रोगियों को लाभ पहुँचाया । आपने अपने अन्तिम समय तक क्षय रोगियों को अनवरत सेवायें देकर क्षय चिकित्सा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए । आपने अनेकों बार अर्न्तराष्ट्रीय क्षय रोग सम्मेलनों में भाग लिया ।

सन् 1959 में अखिल भारतीय इंडियन मैडीकल एसोसिएशन के प्रतिनिधि के रूप में यूरोप के कई देशों के दौरे पर गये । आपके द्वारा लिखित Fight Against Tuberculosis in India के द्वारा भारतवर्ष में टी.बी. रोग की रोकथाम एवम् उपचार के बारे में अपने विचार दुनियाँ के सामने प्रस्तुत किए । आपके उन विचारों से अर्न्तराष्ट्रीय चिकित्सकों ने प्रेरणा लेकर उन सुझावों को टी.बी. के उपचार में शामिल किया ।

समाज सेवी–: राष्ट्रीय, अर्न्तराष्ट्रीय कार्यों व चिकित्सक के व्यस्ततम जीवन से समय निकालकर अपने मथुरा में रोटरी व

Scanned by CamScanner

लायन्स क्लब की स्थापना में अपना विशेष योगदान दिया और अनेकों वर्ष तक उनके अध्यक्ष पद पर रहकर समाज सेवा में भी अग्रणी भूमिका निभाते रहे। आपने मथुरा में इंडियन मैडीकल एसोसिएशन की भी स्थापना की व अनेकों वर्ष तक उसकी अध्यक्षता भी करते रहे ।

सन् 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान आपने काफी तादाद में औषधियाँ व सहायता सामिग्री जवानों के लिए भेजी । जिसकी सराहना भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा की गई ।

साहित्यिक सेवा :- आप साहित्यिक, संगीत व आध्यात्मिक गतिविधियों से भी जुड़े रहे जिसके वशीभूत आप समय-समय पर कवि गोष्ठीयों व आध्यात्म चर्चाओं आदि के योगदान व आयोजनों में अग्रणी भूमिका निभाते रहे ।

आपने नई पीढ़ी के उत्थान के लिए एक ज्ञानवर्धक पत्रिका "न्यू स्टैप" का प्रकाशन 1964 में शुरु किया व अनेक कहानियाँ, उपन्यास आदि लिखे जिसमें श्वेत जूही, टूटा धागा आदि अनन्त, अवन्तिका, तीन पडौसिन एक महरी, परिवर्तित दायरे आदि प्रमुख हैं ।

आपकी इन लेखन शैली से प्रभावित होकर प्रसिद्ध गाँधी वादी काका कालेलकर द्वारा सराहना की गई । आप अपने अन्तिम समय में एक नई पुस्तक "आस्था एवं मानसिक द्वन्द के प्रकाशन में व्यस्त थे ।

शैक्षणिक सेवा :- आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी रुचि होने के कारण मवाना, मेरठ, अलीगढ़, मथुरा जनपद की अनेक शैक्षणिक संस्थाओं के विकास में आपका विशेष योगदान किया ।

आप मवाना, मेरठ जनपद के आर्य कन्या विद्यालय, आर्य कन्या इंटर कालेज, ए. एस. इन्टर कालेज व ए. एस. डिग्री कालेज आदि सभी शिक्षण संस्थाओं में प्राथमिक, संस्थापक आजीवन सदस्य रहे ।

आपने अपने महलवाला स्थित पैत्रिक आवास को बच्चों के स्कूल में परिवर्तित कर वहाँ की ग्राम पंचायत को दान कर दिया ।

आप मवाना में अखिल भारतीय वैश्य राजवंश के प्रथम आजीवन सदस्य भी रहे । आप राजवंश धर्मशाला मवाना के विकास व उत्थान में भी समय-समय पर विशेष योगदान देते रहे ।

Scanned by CamScanner

अलीगढ़ में आपके द्वारा "श्री डाट पब्लिक स्कूल" 1972 में प्रारम्भ किया गया। ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 1998 में अलीगढ़ में की गई जो डा० बी.आर. अम्बेदकर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।

आप अपने अन्तिम समय में भी बी. एड. कालेज की स्थापना में प्रयासरत थे। आपके द्वारा भारत में गुर्दे व पित्त की पथरी का बिना आपरेशन इलाज के लिए प्रथम Lithotripsy मशीन की स्थापना मुम्बई में सन 1977 में की गई जिससे हजारों लोग लाभान्वित हुए।

आपने All diagnostic Facilities under one rough के सिद्धान्त को भारत में पहली बार अंजाम दिया।

आपके अधिकतर विकास कार्य डा० रघुनन्दन प्रसाद गोयल चैरीटेबल ट्रस्ट की छत्रछाया में फलते फूलते रहे हैं।

आपकी पत्नी श्रीमती स्वराजलता गोयल ने आपकी चिकित्सीय सेवाओं व समाज सेवाओं में हमेशा कंधा से कंधा मिलाकर योगदान किया हैं। अपितु आपको इसके लिए प्रेरित करती रहीं हैं। वे आज भी समाज सेवा में बृज क्षेत्र व अखिल भारतीय स्तर पर विशेष आयामों पर अग्रणी रूप से सक्रिय हैं। तथा समाज सेवा व महिला उत्थान आदि गतिविधियों में पूर्ण रूप से समर्पित हैं।

डा० ज्ञानेन्द्र गोयल व श्रीमती स्वराजलता गोयल के चार पुत्र व पौत्र भी सभी अपने-अपने क्षेत्र में उच्च शिखर पर हैं। तथा आपकी प्रेरणा से कर्म के साथ-साथ समाज सेवा में अग्रणी रहते हैं। ज्येष्ठ पुत्र व तीसरे पुत्र श्री दीपक गोयल व लाल गोयल अग्रणी व्यवसायी हैं जो भारतवर्ष के साथ-साथ अन्य देशों में भी अपने व्यवसाय की शाखाऐं फैलाये हुए हैं। इनकी पत्नियाँ भी इनके व्यवसाय में अग्रणी रूप से संचालन करती हैं। द्वितीय पुत्र श्री चाँद गोयल आई. ए. एस. जोकि महाराष्ट्र सरकार में सचिव पद पर हैं और उनकी पत्नी श्रीमती श्रीदेवी गोयल आई. पी. एस. जोकि मुम्बई में आई. जी. पुलिस के पद पर कार्यरत हैं इनके कनिष्ठ पुत्र व पुत्रवधू डा० रमेन गोयल व मधु गोयल मुम्बई अस्पताल में कार्यरत हैं।

इस प्रकार से ऐसे विलक्षण बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डा० ज्ञानेन्द्र गोयल अपने में एक संस्था थे।

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय...

– डॉ० योगेश कुमार गुप्ता

किसी भी शिक्षा संस्था की प्रमुख पहचान होती है उसकी पत्रिका। "ज्ञान-पुष्प" का मंद, शीतल, स्वच्छ, मुद और मंगल प्रदाता प्रवाह सभी को मेधावान बनायेगा । इस दृढ़ विश्वास के संबल से प्रत्येक उर्जित प्राण पाठकों को प्रथम अंक में "ज्ञान-पुष्प" परिवार की ओर से विनत बधाई है। ज्ञान महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास तथा नवोत्थान की सूचक वार्षिक पत्रिका इस संस्था के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों की युगीन संचेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सार्वजनिक तथा स्वतंत्र मंच है ।

इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1998 में स्व० श्री (डॉ०) ज्ञानेन्द्र गोयल जी के द्वारा ज्ञान महाविद्यालय के रूप में की गयी । सन् 2005 में नई प्रतिभाओं को प्रेरित और अंकुरित करने वाली ही नहीं यथोचित पहचान प्रदान करने वाली यह पत्रिका "ज्ञान-पुष्प" के नाम से प्रथम अंक के प्रकाशन में आदरणीय प्राचार्य जी डॉ० एल.सी. गौड़ तथा महाविद्यालय सचिव श्री दीपक गोयल जी का रचनात्मक निर्देशन अति महत्वपूर्ण रहा, जिनका कि हम आभार व्यक्त करते हैं।

इस अंक में कुछ रचनायें ऐसे लेखकों की हैं जिनका वर्तमान में इस महाविद्यालय से कोई सम्बन्ध नहीं । इस महाविद्यालय के वे पूर्व छात्र यदि आज एक महत्वपूर्ण स्थान बना सके हैं तो यह वर्तमान विद्यार्थियों के लिये प्रेरक का काम करेगा और वे प्रयत्नशील होंगे कि भविष्य में उनसे भी आगे

Scanned by CamScanner

तक की मंजिल पार करें । यदि ऐसा हुआ तो हमारा एक बहुत बड़ा लक्ष्य पूरा होगा।

अधिक से अधिक रचनाकारों की रचनाओं को पत्रिका में स्थान देने का प्रयास किया गया है किन्तु फिर भी पत्रिका में स्थान सीमित होने तथा रचना को प्रकाशन योग्य न पाये जाने के कारण जिन विद्यार्थियों की रचनायें पत्रिका में प्रकाशित नहीं हो सकी हैं वे निराश न हों, निरन्तर लिखते रहें और अपनी लेखन-क्षमता में निखार लाने का प्रयास करें । उन्हें हमारी शुभकामनायें हैं ।

अन्त में, मुझे यह स्वीकार करते हुए अत्यन्त गर्व का अनुभव हो रहा है कि अपनी पूर्णाहूति के साथ प्रस्तुत "ज्ञान-पुष्प" पत्रिका महाविद्यालय परिवार की रचनात्मक उपलब्धि है जिसका उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के छात्रों के रचनाधर्मी सार्थक प्रयासों को उजागर करते हुए आवश्यक गति प्रदान करना भी है । इस अंक के सम्पादन में पूरे सम्पादक मण्डल का पूरा-पूरा सहयोग मुझे मिला है और यह मेरा सौभाग्य है । मैं तो यह भी कहना चाहता हूँ कि इस अंक में जो कुछ श्रेष्ठ है वह सब लेखकों, प्राचार्य जी की प्रेरणा, सम्पादक मण्डल के सदस्यों और मुद्रक के अनूठे योगदान का फल है और जो कुछ त्रुटियाँ या दोष रह गये हैं वे सब मेरे हिस्से के हैं । समग्रतः पत्रिका कैसी बन पड़ी है, इसका निर्णय लेखक-पाठक स्वयं करेंगे ही, अतः इस सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है ।

Scanned by CamScanner

सरस्वती वन्दना

हे हंसवाहिनी ! वर देना, अज्ञान तिमिर को हर लेना ।
इक ज्योति-पुंज विद्या-धन का, अँधियारे मन में कर देना ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

हर घर में नव-प्रभात आये, जग में न कोई हो अज्ञानी ।
वर आज यही हम माँगेंगे, अपने मन में है यह ठानी ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

हे वीणा पाणि करो करुणा, तेरे दर का हूँ मैं याचक ।
कुछ शब्द माँगता है तुमसे, वाणी विहीन है यह बालक ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

गिरा-ज्ञान देकर मुझको, इस असमंजस को दूर करो ।
मेरी वाणी में हे करुणे, फूलों का मीठा शहद भरो ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

बालक पर संकट जब पड़ता, उपचार करे माँ की ममता ।
माताओं की माता हो तुम, कर सकता कौन तेरी समता ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

हैं कितने कवि और कथाकार, शारदा-कृपा के आभारी ।
तेरी करुणा के छाँव तले, है टिकी हुई वसुधा सारी ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

दस्यु-दास था वाल्मीकि, बन गया राम-गुण का गायक ।
मूढ़-बुद्धि था कालिदास, बन गया जो कवि-कुल का नायक ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

तेरी दया दृष्टि पाकर माँ, मूक सप्तसुर पा जाता ।
संसार-सरोवर में अपरा, वह ज्ञान-कमल बिखर जाता ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

हम बच्चे तेरे अज्ञानी, तू माँ हम सबकी ज्ञानमयी ।
ज्ञानदीप प्रज्ज्वलित करो, है अभिलाषा यह नयी-नयी ।।
हे हंसवाहिनी वर देना............... ।

– कमलेश कुमार पाण्डेय 'कमल'
बी.एड.

*

कालेज के शिक्षकगण व अभिभावकगण

कालेज के छात्र एवं छात्राऐं

Scanned by CamScanner

हमारा महाविद्यालय

कविता

पढ़ने वाले पढ़ो कहीं पर, कोई किसी का जोर नहीं।
ज्ञान महाविद्यालय जैसा, अन्य कोई महाविद्यालय नहीं॥

प्रोग्राम स्थल पर प्राचार्य जी, अच्छी बातें बताते हो।
सच्चा जीवन किसको कहते, इसका ज्ञान कराते हो॥

खुद ही केवल खाना-पीना, मानव जीवन का अर्थ नहीं।
खुद ही हम सुख का भोग करें, जो मानव जीवन का मर्म नहीं॥

बच्चों में मानव जीवन है मिलता बार-बार नहीं।
ज्ञान महाविद्यालय जैसा, अन्य कोई महाविद्यालय नहीं॥

इस महाविद्यालय का रहता है, शत-प्रतिशत परिणाम है।
पढ़ने वाले पढ़ो कहीं पर, कोई किसी का जोर नहीं॥

सादा जीवन उच्च विचारों की मूर्ति हैं प्राचार्य जी।
महाविद्यालय में गंगा पीयूष को वे प्रवाहित कराते जी॥

शुभ चिंतक डॉ० वाई.के. गुप्ता हों, वे हमको खेल खिलाते हों।
जैसा अवसर यहाँ पढ़ने को, वैसा मिलता कहीं नहीं।
ज्ञान महाविद्यालय जैसा, अन्य कोई महाविद्यालय नहीं॥

– कृष्ण कुमार कश्यप
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

*

'सफलता की कुंजी'

जिंदगी सिर्फ मौज मस्ती और खुशी नहीं है। इसमें ऐसी घटनाएँ भी हो जाती हैं जो कभी सोची न गई हों ? कई बार सब कुछ उलट–पुलट हो जाता है। अच्छे लोगों के जीवन में भी बुरी बातें हो जाती हैं। कुछ चीजें हमारे बस के बाहर होती हैं। जैसे– अपाहिजता या दूसरा कोई पैदायशी दोष। हम न तो अपने माँ–बाप का चुनाव कर सकते हैं और न ही उन हालात का जिनमें हमारा जन्म होता है। इसलिए अगर इस तरह की कोई कमी रह जाती है, तो यह दुख की बात है। अगर ऐसा हो जाए तो क्या करें, बैठकर रोएँ या जो कुछ संभव है, वह करें ? यही वह चुनाव है जो हमें करना है। साफ मौसम में बहुत सी नावें हर दिशा में चलती दिखती हैं। ऐसा क्यों है ? हालांकि हवा एक ही दिशा में चल रही है, फिर भी नावें अलग–अलग दिशाओं में जा रही हैं तो अन्तर क्या है ? यह इस बात पर निर्भर है कि पाल किस तरह से लगाए हैं और यह फैसला नाविक द्वारा लिया जाता है। यही बात हमारी जिंदगी पर भी लागू होती है। हम हवा का रूख तो नहीं चुन सकते मगर नाव में पाल अपनी मर्जी से जरूर लगा सकते हैं। जिंदगी में हम हालात तो नहीं चुन सकते मगर अपना नजरिया तो जरूर चुन सकते हैं। चुनाव हमारा है, चाहे हम हालात पर विजय पायें या हालात का शिकार बनें। हमारी स्थिति नहीं, बल्कि किसी स्थिति में हम अपने आपको कैसे संभालते हैं और ढालते हैं उसी से हमारी सफलता तय होती है। बारिश और धूप दोनों के मिलने से इन्द्रधनुष बनता है। हमारा जीवन भी इससे अलग नहीं है। इसमें खुशियाँ और गम दोनों हैं, अच्छाई और बुराई है, अंधेरा है और उजाला है। अगर हम मुश्किलों का सामना कर सकते हैं तो इससे हम मजबूत बनते हैं। हम अपनी जिंदगी में घटने वाली सभी घटनाओं को कन्ट्रोल तो नहीं कर सकते हैं, लेकिन उनसे निपटने का तरीका जरूर हमारे हाथ में होता है।

– बृजेश कुमार शर्मा
पूर्व छात्र

*

Scanned by CamScanner

शिक्षा का निजीकरण : कितना उचित, कितना अनुचित

भारतवर्ष में जब गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी तब वे गुरुकुल राजा के अधीन हुआ करते थे। विद्यार्थियों से शिक्षा शुल्क भी नहीं लिया जाता था और आचार्यों को राजा की ओर से ही वेतन की सुविधा होती थी। यह परम्परा भारत में मुसलमानों के आने तक चलती थी। लेकिन मुसलमानों के आने के बाद थोड़ा--बहुत अन्तर पड़ा। फिर भी गुरुकुलों की शिक्षा व्यवस्था पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। सर्वाधिक परिवर्तन शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों के आने के बाद दिखाई दिया। शिक्षा का निजीकरण देखा जाय तो अंग्रेजों की देन है। यों तो निजीकरण की नीति देश को लाभ कम शायद हानि ही होगी।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि अंग्रेजों ने भारत में सबसे पहले यहाँ के राजकुमारों के लिए अलग अजमेर का मेयो कॉलेज, जयपुर का महारानी गायत्री देवी कॉलेज, ग्वालियर का सिंधिया कॉलेज आदि की व्यवस्था की। इन विद्यालयों में राज परिवार के बच्चे तथा समाज के उच्च वर्ग के बच्चे भी शिक्षा प्राप्ति करने के अधिकारी थे। सारा खर्चा राजाओं के जिम्मे थे। इन विद्यालयों के उत्तर में उसी समय अन्य बच्चों के लिए पब्लिक स्कूल प्रारम्भ किये गये। इन स्कूलों में किसी भी वर्ग के बच्चों को पढ़ने का अधिकार था। यह स्कूल सरकार की नीतियों के तहत एवं सरकार के खर्चे पर चलने वाले स्कूल थे। उस समय विद्यालयों की संख्या कम ही थी। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही तेजी से शिक्षा का निजीकरण हुआ। क्योंकि जहाँ और उद्योग विकसित हुए वहीं उद्योगपतियों ने शिक्षा को अपने उद्योग का सबसे अच्छा माध्यम माना। उस समय देश में निरक्षकों की संख्या बहुत अधिक थी इसीलिए साक्षरता अभियान का प्रारम्भ हुआ और ऐसे पूँजीपतियों की बन आयी। उन्हें लगा कि धर्नाजन का यह एक बहुत अच्छा माध्यम है। देखने में यह लगेगा कि देश का भला हो रहा है और हमारा भी लाभ होगा। इस प्रकार पूँजीपतियों ने एक तीर से दो निशाने साधे। अंग्रेजों के प्रति बढ़ती रुचि ने अग्नि में आहुति का काम किया। धड़ाधड़ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खुलने लगे। आज देश भर में इन विद्यालयों की कमी नहीं है। इसके अतिरिक्त ईसाई

Scanned by CamScanner

मिशनरियों द्वारा सारे देश में विद्यालय चल ही रहे थे, जहाँ शिक्षा का माध्यम तो अंग्रेजी थी ही साथ ही वहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थियों को मानसिक रूप से भी अंग्रेज बना दिया जाता है ।

उन विद्यालयों की नीति के परिणाम स्वरूप देश के प्रतिष्ठित वर्ग के बच्चे देश में शिक्षा प्राप्त करके विदेशों की तरफ मुड़ गये । क्योंकि उन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करके उनके मन मस्तिष्क को अपने देश और देश की संस्कृति से पूरी तरह अलग कर दिया जाता है । भारत की सन्तान भारत को हेय दृष्टि से देखती है । पहले केवल मिशनरी स्कूलों में ही ऐसा वातावरण था । लेकिन उस प्रकार की शिक्षा पद्धति के प्रति बढ़ती भारतीयों की रुचि ने पब्लिक स्कूलों का भी निजीकरण कर दिया । आज शिक्षा की बागडोर धनपतियों के हाथ में है और शिक्षा मंत्रालय धनपतियों के हाथों की कठपुतली बने हैं; जैसे चाहते हैं, वैसे ही चलाते हैं ।

ये धनपति भारतीय जनता की इच्छा और आवश्यकता से भली भाँति परिचित हैं । वे जानते हैं कि भारतीय जनता पूरी तरह से गुमराह होने के कारण ऊपरी चमक– दमक वाले और अधिक फीस तथा अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में ही अपने बच्चों को भेजना पसन्द करेगी । जनता की इसी मानसिकता का धनपतियों ने लाभ उठाया । और धनपति ही नहीं आज जिसके पास चार पैसे हैं, वो उनको सोलह बत्तीस बनाने के लिए शिक्षा को ही सबसे अच्छा व्यवसाय समझता है । अधिकारियों को प्रसन्न करके विद्यालय खोल लेना फिर विद्यालय को जिस बोर्ड से चाहे उसे मान्यता दिला लेना इन लोगों के लिए कुछ मुश्किल नहीं है । शिक्षा के निजीकरण में जितना हाथ धनपतियों का है उससे बड़ा हाथ सरकार का है ।

जिस प्रकार अन्य उद्योगों में प्रतियोगिता बढ़ने के कारण गुणवत्ता को विकसित करने की चेष्टा की जाती है । तथा अपने को अधिकतम उत्तम दिखाने के लिए अनेक प्रकार के हथकन्डे अपनाये जाते हैं । वही स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में देखने को मिलती है । सरकार स्वयं शिक्षा के भार को वहन नहीं कर सकी । उद्योगपतियों को धनपतियों की शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा का निजीकरण होना अवश्यम्भावी था । सच तो यह है कि शिक्षा भी वर्तमान समय में एक उत्पाद बनकर रह गयी है । यदि हम

Scanned by CamScanner

दुष्परिणामों की बात करने लगें तो इसका कोई अन्त नहीं ।

यदि हम इस व्यवस्था की लाभ की बात करें तो केवल एक ही कारण या परिणाम ही समझ में आता है कि अपने बच्चों को प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ा सकें, कम से कम वे तो अपने बच्चों को भेजते ही हैं । शिक्षा के निजीकरण की प्रथा के विकास का एक और महत्वपूर्ण कारण है तकनीकी ज्ञान की सुविधायें यह विद्यालय जितनी जुटा पाते हैं, इतनी सुविधायें सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध नहीं होती हैं । इसीलिए इन विद्यालयों की माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । दूसरी एक बहुत बड़ी समस्या है कि समाज का प्रतिष्ठित अथवा धनी वर्ग अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में ही भेजना पसन्द करता है क्योंकि इनकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है जबकि सरकारी स्कूलों में मातृभाषा है । नतीजतन इन विद्यालयों में उस वर्ग के बच्चे पढ़ने के लिए जाते हैं । जिनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि में शिक्षा का अभाव तो होता ही है । वैसे भी शिक्षा का परिवेश नहीं है । एक पिछड़ेपन से ग्रसित परिवार का बच्चा जब विद्यालय आता है तो अपने उसी संस्कार को साथ ले आता है । इस विशेष प्रकार के बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं रखते हैं । इसीलिए उनका बौद्धिक स्तर कम ही होता है । इन सरकारी विद्यालयों के अध्यापक अपने आपको सरकारी नौकर समझते हैं । उन्हें मालूम है कि वे बच्चें साथ श्रम करें या न करें उन्हें समय पर वेतन भी मिलेगा और सरकार द्वारा दिये जाने वाले सभी लाभ भी समय पर मिलेंगे। ऐसे भी सरकारी स्कूल मिल जाते हैं । जहाँ अध्यापकों की संख्या स्कूल आने वाले छात्रों से अधिक होती है । शिक्षिकाएँ सर्दियों के दिनों में बुनाई करती हैं । कक्षा में बच्चे एक दूसरे से कुश्ती लड़ते हैं । और शिक्षक बाहर बैठकर बातें करते हैं । ऐसे विद्यालयों का भविष्य तो अन्धकार में है ही, उससे अधिक अन्धकारमय भविष्य इन बच्चों का है । यदि सरकार अपने विद्यालयों के शिक्षा स्तर की ओर ध्यान दें तो वह निजी विद्यालयों पर भी अपना अंकुश लगा सकती है । सरकारी तंत्र का कुछ तो महत्व है । शिक्षा के अधिकारीगण विद्यालयों को मनमानी करने से रोकें, बरसाती मेढकों की तरह के विद्यालयों के खुलने चलने पर पाबन्दी लगायें, उनके लिए कुछ नियम निश्चित किये जायें तो शायद शिक्षा के निजीकरण से देश को अधिक लाभ होगा। दोष निजीकरण का नहीं है, दोष व्यवस्था में है ।

– सन्तोष डागर
प्रवक्ता, विज्ञान संकाय

✻

शोध एवं शोधार्थी

शोध का अर्थ है पूर्व में ज्ञात तथ्यों का पुनः अध्ययन कर उनकी विश्लेषणात्मक व्याख्या करना तथा नवीन तथ्यों के आधार पर उन्हें नये आयाम प्रदान करना। आदिकाल से ही मानव नवीनीकरण हेतु अत्यधिक जिज्ञासु एवं उत्सुक रहा है। आज की खोज एवं पहिये के निर्माण ने मानव की उत्सुकता को और अधिक बढ़ा दिया था। नयी सोच व कल्पनाओं में मानव विचरण करने लगा तथा शोध के क्षेत्र में एक के बाद एक लगातार कदम बढ़ते चले गये। विज्ञान के क्षेत्र में जेम्सवाट द्वारा भाप के इंजन का विकास, न्यूटन द्वारा गुरुत्वाकर्षण के नियम का प्रतिपादन एवं नक्षत्र विज्ञान, जीव विज्ञान व वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न जीव-जन्तुओं के अध्ययन एवं चिकित्सा के क्षेत्र में नयी-नयी तकनीकि एवं औषधियों का आविष्कार शोध के क्षेत्र में शोधार्थियों की उत्सुकता के प्रतीक है।

बीसवीं सदी में शोध ने बहुत तीव्र गति प्राप्त की। एडीसन ने बल्व का निर्माण किया। शौकले ने ट्रांजिस्टर का निर्माण किया। विद्युत रेल इंजन का विकास, विद्युत का उत्पादन, थर्मल पावर स्टेशन, यूरेनियम से ऊर्जा प्राप्त करना आदि बीसवीं सदी की ही देन है। शोध में गुणात्मक वृद्धि हेतु नयी-नयी प्रयोगशाला की स्थापना की गयी, जैसे नेशनल फिजीकल लैबोरेट्री दिल्ली, शाह इंस्टीट्यूट कलकत्ता आदि इक्कीसवीं सदी में शोध के क्षेत्र में क्रान्ति आयी है। कम्प्यूटर तकनीकि ने हलचल मचा दी है। जिन घटनाओं की कल्पना भी नहीं की थी, उनको प्रस्तुत किया है। आज एक कमरे में बैठकर सम्पूर्ण विश्व के साथ सम्पर्क स्थापित किया जाता है। एक दूसरे के शोध एवं विकास के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की जाती है। ऐसे चमत्कारिक वातावरण में विश्व विद्यालयी एवं महाविद्यालयी शोधार्थी की क्या स्थिति है? यह पुनः एक शोध का विषय है।

शोध के क्षेत्र में शोधार्थी का प्रथम कदम उसे यह जानने को प्रेरित करता है कि इस विशेष विषय क्षेत्र में आज तक के शोध की क्या स्थिति है? इस स्थिति को

Scanned by CamScanner

जानने के बाद ही वह आगे कार्य करने की स्थिति में आ पाता है । सामान्यत: एक स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त व्यक्ति शोध के लिए उपयुक्त माना जाता है । परन्तु सामान्यत: सभी विश्व विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम इस प्रकार के हैं कि स्नातकोत्तर स्तर पर भी लगभग 1960 तक के आविष्कारों का ही अध्ययन कराया जाता है । शोधार्थी के समक्ष यह एक जटिल समस्या है कि 1960 से अब तक लगभग 55 वर्षों में क्या हुआ है ? उसे यह ज्ञात ही नहीं होता । विशेषत: विज्ञान के क्षत्र के शोधार्थियों को इस समयान्तराल के आविष्कारों की जानकारी आवश्यक है । उसका अधिकांश समय इसी की जानकारी प्राप्त करने में व्यतीत है । अब उसके सामने शोध कार्य शीघ्र पूरा करने की मजबूरी होती है । अत: स्वाभाविक है, शोधकार्य में गुणवत्ता नहीं आ पाती । इसके लिए विश्वविद्यालयों को चाहिए कि उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार हो कि उसमें आधुनिक तथ्यों का भी समावेश हो तथा प्रतिवर्ष पाठ्यक्रम का पुनर्वलोकन कर उसमें संशोधन होता रहे । जिससे स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन के पश्चात शोध में प्रवेश करने वाले शोधार्थी को वास्तविक शोध कार्य हेतु समुचित समय मिल सके ।

भारत में शोधकार्य को डिग्री प्रदान करने की व्यवस्था ने भी शोधकार्य की गुणवत्ता में अवरोध खड़ाकर दिया है । शोधार्थी शीघ्रतिशीघ्र डिग्री प्राप्त करना चाहता है । जबकि विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्र में शोधकार्य का डिग्री से मापन ठीक नहीं है । उसके लिए राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में शोधकार्य का प्रकाशन होना चाहिए । डिग्री प्राप्ति की ललक ने शोध क्षेत्र में अनैतिक कार्यों को बढ़ावा दिया है तथा क्वालिटी को कम कर क्वान्टिटी को बढ़ा दिया है । जिससे वास्तविक शोधार्थीहीनता का शिकार हो जाता है । शोध के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य न हो पाने के पीछे और भी बहुत से कारण हैं जो कि इसमें बाधक हैं जैसे बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी आदि । इस समय रोजगार की समस्या एक ज्वलन्त समस्या है । अत: शिक्षार्थी शीघ्रताशीघ्र रोजगार प्राप्त करना चाहता है । जब वह स्नातकोत्तर परीक्षा पास करता है, तब उस समय उसके मनमस्तिष्क पर विभिन्न रोजगारों की परीक्षा में बैठने एवं उत्तीर्ण करने की कल्पना होती है । इस समय

Scanned by CamScanner

शिक्षार्थी उस चौराहे पर खड़ा होता है कि मैं क्या करूँ ? वह बिना सोचे समझे एवं एकाग्रता बनाये ही विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग लेता है लेकिन चारों ओर उसे असफलता ही असफलता मिलती है और वह धीरे–धीरे आर्थिक एवं मानसिक रूप से परेशान होने लगता है और प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग लेने की आयु सीमा भी समाप्त हो जाती है, ऐसे समय में शिक्षार्थी अपने परिवार, समाज का एक उपहास बन जाता है । सभी पारिवारिक एवं सामाजिक सदस्य उसकी वास्तविक समस्याओं से अनभिज्ञ होते हैं । अतः वह हर समय यही सोचता है कि मेरी आयु सीमा समाप्त होती जा रही है, अब मैं क्या करूँ ? अतः इसी समय वह शोध क्षेत्र में प्रवेश लेने का मन बना लेता है । शिक्षार्थी विषय विशेषज्ञ (सुपरवाइजर) से सम्पर्क करता है और वह शोध कार्य करने की अपनी इच्छा प्रकट करता है । सुपरवाइजर शिक्षार्थी को इस क्षेत्र के बारे में प्रारम्भिक जानकारी देता है और निर्देश देता है कि यह बड़ा ही व्यापक क्षेत्र है । जिसकी समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है । अतः शिक्षार्थी अपने सुपरवाइजर के आदेशों के पालन की जिम्मेदारी लेते हुये शोध क्षेत्र में प्रवेश लेता है । शोधार्थी को प्रवेश उपरान्त विभिन्न पुस्तकालयों एवं विषय विशेषज्ञों से बार–बार सम्पर्क करना पड़ता है, विषय के बारे में उसे गहन अध्ययन करना पड़ता है । दूसरी ओर उसकी आयु सीमा बढ़ती जाती है एवं प्रत्येक स्थान पर रिश्वतखोरी के कारण उसका मन हर समय विचलित रहता है । एक शोधार्थी यह भी सोचता है कि दूसरे शोधार्थी ने कुछ भी कार्य अपने हाथ से नहीं किया लेकिन उसका शोध समय सीमा के अन्दर से लिपिबद्ध हो गया है अतः उसके दिमाग पर यह कार्य एक बोझ बन जाता है । जब शोधार्थी का शोध ग्रन्थ विश्व विद्यालय में जमा हो जाता है और उसे पी. एच.डी. की उपाधि से विभूषित कर दिया जाता है तो वह अपने दिमाग में अभियान करता है और वह रोजगार की तलाश में निकलता है लेकिन उसे फिर भी कहीं रोजगार नहीं मिलता है । अतः वह फिर एक बार यही सोचने पर मजबूर हो जाता है कि मैं अब क्या करूँ ?

अतः शोध क्षेत्र की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए इस क्षेत्र में परिवर्तन करना जरुरी है । आज की बढ़ती बेरोजगारी, रिश्वतखोरी, जनसंख्या, अपनापन की

Scanned by CamScanner

समस्या दृष्टिगत रखते हुये सरकार को शोधार्थी के जीवन से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए । शोध क्षेत्रों के वास्तविक सुधार के लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने होंगे, जिससे कि शोधार्थी अपना कार्य मन लगाकर तत्परता से करें तभी इस क्षेत्र में वास्तविक विकास सम्भव हो सकेगा अन्यथा शोध कार्य केवल उपाधि प्राप्त करने तक ही सीमित रह जायेगा ।

अतः आधुनिक समय में शोध के क्षेत्र में सम्पूर्ण आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शोध की विषय वस्तु का संकलन करना चाहिए, जिससे इस क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभाओं का पदार्पण हो सके । समय–समय पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में विचार गोष्ठियों का आयोजन एवं शोधकर्त्ताओं के विचारों को आदान–प्रदान का संकलन एवं उसका मूल्यांकन होना चाहिए एवं भारत सरकार को सभी शोधार्थियों के लिए अलग से मानदेय एवं बजट की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सके एवं शोधार्थियों को भारत सरकार द्वारा अपने सम्पूर्ण खर्चे पर विदेशों में शोध कार्य से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजना चाहिए, जिससे हमारे देश में हो रहे शोध कार्यों की गुणवत्ता में निखार आ सके एवं शोध के क्षेत्र में हमारे देश का नाम गौरवान्वित हो सके ।

शोध एक चिन्तन क्षेत्र है, जिसमें विचारों व कल्पनाओं का सागर उमड़ता है, भावनायें जागृत होती हैं । किसी अद्‌भुत निष्कर्ष की संभावनाओं से मन प्रफुल्लित होता है । जब तक ऐसे संकेत शोधार्थी अनुभव न करें तो समझना चाहिए कि वह शोध के लिए अयोग्य है । उसे इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए । शोध तो एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें शोधार्थी को उन्मुक्त होकर परिणाम की बिना अपेक्षा किये कदम पर कदम आगे बढ़ाते जाना है । अयोग्य शोधार्थियों की संख्या में वृद्धि नहीं होनी चाहिए अन्यथा योग्य शोधार्थियों के लिए और अधिक व्यवधान उत्पन्न हो जायेगा । इस क्षेत्र में ऐसे कदम उठाने होंगे जिससे उपाधियों की संख्या की अपेक्षा शोध की गुणवत्ता में सुधार हो ।

– डॉ० जयप्रकाश गुप्ता
प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
डी.एस. कॉलेज, अलीगढ़

*

Scanned by CamScanner

नैतिक मूल्यों का संरक्षण क्यों? कैसे?

यहाँ भारत का एक प्रसंग– कौरव, पाण्डव सभा में उपस्थित है। भीष्म, द्रोण, युधिष्ठिर जैसे विद्वान एवं धनुर्धर सभा में विराजमान हैं। दु:शासन द्रौपदी को शिखाओं से पकड़कर धकेलते हुए सभा में लाता है तथाकथित नैतिक मूल्यों के संरक्षण आदर्श वीर पुरुष शान्त बैठे हैं। द्रौपदी– एक महिला का चीरहरण होता है, अपमानित किया जाता है। भगवान कृष्ण की उपस्थिति एक असहाय महिला की रक्षा का कारक बनती है। लेकिन इससे उपजती है एक प्रतिशोध की ज्वाला और फिर परिणति महाराज का युद्ध–विनाश, महाविनाश। आप इसे इतिहास की एक घटना मात्र कह सकते हैं। लेकिन इस प्रकार की ऐतिहासिक घटनाएँ हमें सोचने के लिए मजबूर करती हैं कि समाज में जब–जब नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है तब–तब इसी प्रकार समाज को संकटों एवं आपदाओं का सामना करना पड़ा है। आज के परिवेश में तो समाज में पता नहीं कितने दु:शासन हैं जो महिलाओं का चीर हरण ही नहीं वरन् शील हरण भी कर रहे हैं। प्रजा के भाग्य नियन्ता बन बैठे अनेक सत्ताधीश उन दुष्कर्मों में लिप्त हैं जो भारतीयता की गरिमा के लिए अभिशाप है और स्थिति यहाँ तक भयानक है कि विवश होकर न्यायालय को नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु दिशा निर्देश देने पड़ रहे हैं। सैक्यूलरवाद की आड़ में धर्म को गलत ढंग से परिभाषित किया जा रहा है। जिससे व्यक्ति अपने कर्त्तव्यपथ से च्युत होता जा रहा है। यह एक अति भयानक स्थिति है। जो हमारे आदर्श राष्ट्र की संकल्पना पर ही प्रश्न चिन्ह लगा देती है लेकिन आशावाद टिका है श्रीमद्भागवत गीता के इस प्रेरणास्पद संदेश पर–

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्॥"

जब–जब नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण समाज में विस्फोटक स्थिति बनी है। तब–तब महान शिक्षाविदों के संदेश ने समाज को नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु अनुप्रेरित किया है। महान पश्चिमी दार्शनिक हरवर्ट के अनुसार हमारी शिक्षा का अन्तिम लाभ नैतिकता होनी चाहिए।

"Morality is universally alknowledge as the highest aim of humanity and consequently of education" - ***Herbert***

Morality शब्द मोरस (Mores) या कस्टम (Custom) से विकसित हुआ है। हमारी परम्परायें रीति–रिवाज हमारे नैतिक जीवन में बड़े महत्वपूर्ण हैं। इन परम्पराओं को समाज ने प्रयोग तथा अनुभव के बाद ही विकसित किया है। नैतिकता के विकास के लिए केवल अच्छी बातों का ज्ञान ही समुचित नहीं है। उन बातों को चरित्र में उतारना भी आवश्यक है। तर्क और विवेक तथा आत्मा की पुकार को साधन के रूप में प्रयुक्त करके नैतिक शिक्षा को आधार बनाकर नैतिकता का विकास किया जा सकता है। सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ रहा है। पश्चिम की संस्कृति के बदले प्रभाव ने हमारी संस्कृति के मूल तत्वों एवं उच्चादर्शों को प्रभावित किया है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् हमारी संस्कृति का मूलाधार रहा है। जिससे प्रेरित हो नागरिकों का चारित्रिक उत्थान हमारा लक्ष्य रहा। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गाँधी जैसे भारतीय मनीषियों ने भारतीय संस्कृति के मूल आदर्शों व नैतिक मूल्यों से विश्व को परिचित कराया। स्वामी विवेकानन्द द्वारा पहने वस्त्रों पर एक अमरीकी नागरिक के कटाक्ष करने पर स्वामी जी ने उत्तर दिया था कि आपके देश में व्यक्ति की पहचान वस्त्रों से होती होगी लेकिन मेरे देश भारत में व्यक्ति की पहचान उसकी विद्वता एवं चरित्र से होती है।

"Character is like a tree and reputation is like it's shadow. The shadow is what we think of it but the tree is real thing."

लेकिन आज के भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक मूल्य तिरोहित होते जा रहे हैं। सामाजिक बन्धन जिनसे आपसी प्रेम सद्भावना एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं मर्यादा विकसित होती थी, टूट रहे हैं। ऐसे में राष्ट्र नागरिकों भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का ज्ञान कराना आवश्यक हो जाता है। ताकि उन शाश्वत मूल आदर्शों की जानकारी प्राप्त कर वह अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व में उन सदगुणों को विकसित कर सके। संस्कृति व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण तत्व है जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। समाज शास्त्री–

Ruth Benedict के अनुसार, "His culture provides the raw material of which the Individual makes his life. If it is miser, the individual suffers, if it is rich he has the change to rise to his opportunities."

भारतीय संस्कृति जिसके मूल में त्याग, बलिदान एवं चारित्रिक उत्थान की भावना निहित है, का ज्ञान आज के परिवेश की चरित्र निर्माण एवं नैतिकता के सद्गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका

Scanned by CamScanner

है । शिक्षा के माध्यम से इस सद्कार्य को सम्पन्न किया जा सकता है । अतः हमारी शिक्षा ऐसी हो कि उस शैक्षिक परिवेश में रहकर सद्गुण विकसित हों । महात्मा गाँधी ने हरिजन पत्रिका के 1935 के अंक में इस सम्बन्ध में शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा था ।

"By Education, I mean an allround drawing out of the best in child and man, body, mind and spirit."

शिक्षा से अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन, और आत्मा के उच्चतम विकास से है, गाँधीजी शिक्षा द्वारा चारित्रिक विकास पर बल देते थे । उनके शब्दों में, "सभी ज्ञान का उद्देश्य उत्तम चरित्र का निर्माण होना चाहिए" (The end of all knowledge must be the building up of character, personal purity)

इसलिए वे विद्यालयों को चरित्र निर्माण की उद्योगशाला कहा करते थे । एक उत्तम चरित्र में वे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तवाद, अस्तेय, अपरिग्रह और निर्भयता इन गुणों का होना आवश्यक समझते थे । आज शिक्षा के माध्यम से इन सद्गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है । राजस्थान के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री मदनलाल खुराना द्वारा वर्तमान परिवेश में नैतिक शिक्षा को विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में स्थान देने पर बल दिया ।

नैतिक मूल्यों के संरक्षण से ही एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण संभव है । इस हेतु हमारे वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रम में उचित संशोधन कर भारतीय संस्कृति के आदर्श मूल्यों का ज्ञान छात्रों को कराना होगा । एक सम्पूर्ण कार्ययोजना तैयार करनी होगी । जिससे आने वाली पीढ़ी में नैतिक गुण विकसित हों और एक राष्ट्र के निर्माण की संकल्पना साकार हो सके । यह कार्य एक दिन या एक माह में पूर्ण होने वाला नहीं है । इसके लिए एक लम्बी अवधि की योजना तैयार करनी होगी । चीन में एक कहावत है–

If you are Planning for one year plan sheed, If you are Planning for ten years plan trees, if you are planning for hundered years plan man."

इस भौतिकवादी युग में हमारा दुर्भाग्य यह रहा है कि हमने शिक्षा के द्वारा जीविका तो किया, लेकिन जीवन निर्माण पर उतना ध्यान नहीं दिया । जबकि वेदों में "मनुभर्व" (हे व्यक्ति तू मनुष्य बन) कि शिक्षा पर बल दिया है । हम अपनी संस्कृति के उन मूल आदर्शों से भटक गये हैं । आज आवश्यकता है उन मूल्यों की

Scanned by CamScanner

पुर्नस्थापना की । जिनके बल पर राष्ट्र संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए आदर्श रहा है । डॉ० राधाकृष्णनन के शब्दों में,

"The troubles of the whole world including India is due to the fact that education has become moral an intellectual exercise and not the acquisition of moral and spiritual values."

जाकिर हुसैन समिति, विश्वविद्यालय आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), सेठ कोठारी शिक्षा आयोग (1964–66), सभी ने नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है । यह नैतिक शिक्षा सभी धर्मों की उत्तम बातों के शिक्षण सार्वजनिक प्रार्थना, शाला के वातावरण को उन्नत करके, बालकों के समक्ष उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करके, देश की महापुरुषों की जीवनी से परिचित कराकर दी जा सकती है ।

– चितरंजन तिवारी
बी०एड०

*

भगवान को चुनौती

भगवान जरा कुछ दिन,
कॉलेज में पढ़ के देखो ।
छात्रों की मुसीबत से,
जरा खुद गुजर के देखो ।।

स्वर्ग में जो मौज,
तुम करते हो सदा ।
कॉलेज लाइफ का,
एक साल ही निभा के देखो ।।

हुक्म ही देते रहे,
संसार को सदा ।
एक बार इस जगह,
जरा अपनी चला के तो देखो ।।

तुमने भरा दामन सदा,
दर पे जो आ गया ।
टीचर से प्रैक्टीकल में नम्बर,
तो ले के देखो ।।

शैय्या ये शेषनाग की,
सोते तो सदा चैन से ।
अब लो किताब हाथ में,
खुद को जगा के देखो ।।

भक्तों को कसौटी पर,
कसते ही हो सदा ।
एक बार इम्तहान में,
खुद पास हो के तो देखो ।।

भटकते हुऐ कमजोरों के,
तुम रहनुमा रहे ।
अब आओ जरा इस दैत्य (परीक्षा),
से पीछा छुड़ा के तो देखो ।।

– ललितेन्द्र कुमार
पूर्व छात्र

*

Scanned by CamScanner

मौसी क्यों समझती ? कटु दुश्मन

एक दिन तो चूहे ने,
जुटाई कुछ यूँ हिम्मत।
लगा पूछने बिल्ली से,
रख दाव पर अपनी किस्मत॥
मौसी! तुम क्यों समझती हो ?
हमें अपना कटु-दुश्मन।
बिल्ली बोली तुम्हारा ही,
गोस्त मुझे लगता है अच्छा।
पता नहीं भगवान ने क्यों ?
मुँह लगा दिया है यह बच्चा॥

बिल्ली बोली अरे तुम,
एक बार तो आओ मेरे पास।
मौसी पहले यह बतलाओ,
कैसे करूँ ? तुम पर विश्वास॥
मौसी! मेरे आने पर फिर,
सुनो! तुम्हारा मन ललचाएगा।
मेरे बीबी-बच्चे अनाथ हो जायेंगे,
घर में रोआन पिट्टन मच जाएगा॥

– सूरजपाल सिंह
बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)

*

नाम बताओ तो जानें

1.	मेरा पहला अक्षर ज्ञानेन्द्र गोयल से है	-	किसी अन्य से नहीं।
2.	मेरा दूसरा अक्षर नहीं से है	-	हाँ से नहीं।
3.	मेरा तीसरा अक्षर मडराक से है	-	बढ़ौली से नहीं।
4.	मेरा चौथा अक्षर हार से है	-	पायल से नहीं।
5.	मेरा पाँचवा अक्षर विहार से है	-	राजस्थान से नहीं।
6.	मेरा छठा सक्षर धान से है	-	गेहूँ से नहीं।
7.	मेरा सातवाँ अक्षर लव में है	-	प्रेम से नहीं।
8.	मेरा आठवाँ अक्षर यमराज से है	-	दूत से नहीं।
9.	मेरा नवाँ अक्षर अमरुद से है	-	आम से नहीं।
10.	मेरा दसवाँ अक्षर लीची से है	-	बगीची से नहीं।
11.	मेरा ग्यारहवाँ अक्षर गरीबी से है	-	अमीरी से नहीं।
12.	मेरा बारहवाँ अक्षर ढक्कन से है	-	कटोरे से नहीं।

– कृष्ण कुमार कश्यप
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)

उत्तर- ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

*

Scanned by CamScanner

शीर्षक "जरुरत है पत्नी की"

व्यंग

प्रिय मित्र कुँवर कुवारे लाल,
तुझे अचानक कैसे आ गया शादी का ख्याल,
पचास वर्ष की उम्र में करके शादी,
क्यों खोना चाहती है ? अपनी पचास वर्ष की आजादी।
वह बोला-
यार, बरसों से राजनीति में दण्ड पेल रहा हूँ,
छल, कपट, प्रचंड झेल रहा हूँ।
कल जो मुख्यमंत्री बन जाऊँगा,
बेचारा नहीं कि चारा नहीं खाऊँगा।
फिर सी.बी.आई. अपना हाथ दिखायेगी,
तब कुर्सी छोड़ने की नौवत आजाएगी।
तब मुख्यमंत्री की कुर्सी पत्नी को देकर और तप जाऊँगा।
भैया, बहुत बुरा है, आज कल का जमाना,
ठीक नहीं है पत्नी के अलावा और किसी को कुर्सी थमाना।
राव साहब कमेटी से तथा लालूजी शरद जी से गच्चा खा चुके हो।
हवन में अपने हाथ जला चुके हो।
राजनीति में जिन्दा रहने के लिए एक पत्नी जरुरी है।

"शायरी"

शेर सुनने में मजा आता है, शेर सुनाने में मजा आता है।
जब शेर सामने आता है, तो भागने में मजा आता है ॥

– श्वेत कुमार
पूर्व छात्र
*

Scanned by CamScanner

हार नहीं होती

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती॥
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है॥
हिम्मत का उत्साह रगों में साहस भरता है।
चढ़कर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती॥
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती॥
डुबकियाँ जब सिंधु में गोताखोर लगाता है।
जा-जा कर खाली हाथ लौट आता है॥
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में।
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में॥
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो॥
कुछ किये बिना जय जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती॥

– लवनीश जैन
बी.कॉम. (तृतीय वर्ष)

*

आश्चर्यजनक तथ्य

1. सबसे छोटी माँसपेशी हमारी कान में है। इसकी लम्बाई 1 मिमी. से थोड़ी ही अधिक है।
2. मस्तिष्क को काटने पर भी इसमें दर्द नहीं होता।
3. पश्चिमी देशों में एक सामान्य व्यक्ति अपने जीवन काल में 50 टन भोजन कर लेता है और 50,000 लीटर पानी इत्यादि तरल पी लेता है।
4. हमारे शरीर में 24 तत्व हैं, जिनमें हाइड्रोजन की मात्रा 63 प्रतिशत और ऑक्सीजन की 25.5 प्रतिशत होती है।

– आकाश कुमार शर्मा
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)

*

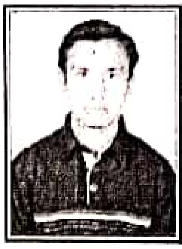

पहेलियाँ

1. खाती है न पीती है, मारो तो चिल्लाती है।
2. देखा है इस्तेमाल नहीं किया इस्तेमाल किया है तो देखा नहीं है।
3. हाथ में हरा, मुँह में लाल।
4. हरी माँ के काले बच्चे।
5. ऐसा कौन सा गेट है जिसके अन्दर नहीं जा सकते।

उत्तर– 1. ढोलक 2. कफन 3. पान 4. इलाइची 5. कॉलगेट

– नीरज माहेश्वरी
पूर्व छात्र

*

Scanned by CamScanner

संस्थापक–दिवस समारोह की झलकियाँ

विशिष्ट अतिथि, चाँद गोयल, प्रमुख सचिव, महाराष्ट्र सरकार, द्वारा पुरुस्कार वितरण

प्राचार्य डा. एल. सी. गौड़ द्वारा छात्राओं को प्रशस्ति पत्र वितरण

धारावाहिक बूगी–बूगी प्रतियोगिता की विजेता द्वारा नृत्य प्रदर्शन

कार्यकारिणी सदस्य श्री अवि मित्तल, श्री अनिल खण्डेलवाल, श्री चांद गोयल, प्रमुख सचिव महा॰ सरकार, श्रीमती श्रीदेवी गोयल, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, महाराष्ट्र

विशिष्ट अतिथिगण

Scanned by CamScanner

विद्यालय एक परिवार

विद्यालय में छात्र पढ़ने को उत्सुक रहें तथा शिक्षक पढ़ाने को आतुर, कुछ इस प्रकार के वातावरण का निर्माण होना चाहिए। तभी विद्यालय, समाज एवं राष्ट्र का उत्थान सम्भव है।

विद्यालय हमारा द्वितीय निवास स्थान है जहाँ हम विद्यार्जन हेतु उपस्थित ही नहीं होते, अपने जीवन का एक स्वर्णिम काल भी यहीं बिताते हैं तथा भविष्य की आधारशिला भी यहीं रखी जाती है। परन्तु क्या कभी हमने इस विषय पर विचार किया है कि क्या विद्यालय को केवल द्वितीय आवास की मात्र संज्ञा दे देना काफी है ? क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं बनता कि हम अपने इस द्वितीय आवास को उसी प्रकार प्रेम से सींचें जिस प्रकार घर–परिवार रूपी उपवन को सींचते हैं। यदि दोनों स्थानों पर हम समान निःस्वार्थ भाव से सेवा करें तो अवश्य ही यह उद्यान पल्लवित तथा कुसुमित हो अपने रंग तथा सुगन्ध से सभी को मोहित कर लेगा। जैसे कि एक परिवार के सदस्य अपने परिवार की मर्यादाओं का स्वेच्छा से पालन करते हैं और यदि नियम तथा कानून जबरन उन पर थोपे जाते हैं तो वह अनुशासित न होकर उद्दण्ड एवं स्वेच्छाचारी होते चले जायेंगे तथा एक दबाव में अपना जीवन व्यतीत करेंगे। ठीक उसी प्रकार विद्यालय में विद्यादान की सुगमता हेतु नियमों की जिज्ञासा, निर्माण तथा क्रियान्वयन तो अवश्य होना चाहिए अन्यथा पठन व पाठन दोनों ही दुरुह हो जायेंगे। परन्तु नियमों के पालन का ऐसा वातावरण हमें बनाना चाहिए जिससे अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही इन नियमों का स्वतः ही पालन करने लगें।

विद्यालय के वातावरण के प्रधानतः दो पक्ष होते हैं। भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक। भौतिक वातावरण से अर्थ है– खुले हुये कमरे, खेलने का मैदान, हरे–भरे पेड़–पौधे, ताजी हवा तथा उचित प्रकाश इत्यादि।

शिक्षा का अर्थ केवल किताबों को रट लेने से नहीं होता। शिक्षा का अर्थ है बालकों के व्यक्तित्व का समग्र विकास और यह विकास उन्हीं विद्यालयों में सम्भव है जहाँ भवन निर्माण शिक्षा के उद्देश्य से

Scanned by CamScanner

ही किया गया हो । इसके अतिरिक्त विद्यालय के वातावरण के महत्वपूर्ण अंग हैं– अध्यापक, व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पुस्तकालय, खेल का मैदान और सांस्कृतिक क्रिया–कलापों का प्रावधान ।

आधुनिक विद्यालय में एक ऐसे वातावरण के निर्माण की आवश्यकता है जहाँ के अध्यापक छात्रों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर सकें । जहाँ अध्यापक छात्रों की उन्नति एवं आवश्यकताओं को अपनी समस्याएँ मानें और मन, वचन तथा कर्म से अपने कर्तव्य का पालन करते रहें । शिक्षक अपने छात्रों को मात्र शिक्षा ही न प्रदान करें अपितु उन्हें पुत्रवत स्नेह भी प्रदान करें । छात्रों के परीक्षाफल के समय वह माँ की भाँति ही चिन्तित और सचेष्ट रहें तथा उसे सँवारने का हर सम्भव नैतिक प्रयास भी करें । परन्तु मूल्यांकन पूर्ण निष्पक्ष भाव से ही करें ।

दूसरी ओर छात्रों को चाहिए कि वे भी विद्यालय के समस्त नियमों का पालन करें, अनुशासित रहें । वे विद्यालय को मन्दिर सदृश सम्मान प्रदान करें । विद्या को आराध्य सरीखा मान दें तथा अध्यापक को आराधना में प्रयुक्त सामिग्री जैसा आदर प्रदान करें । अध्ययन बोझ नहीं, रुचि समझकर करें । ऐसी स्थिति में विद्यालय का वातावरण स्वतः सुचारु तथा नियमित हो उठेगा ।

इसी के साथ–साथ हमें अध्ययन तथा अध्यापन दोनों को रुचिकर बनाना होगा । जिसमें पाठ्यक्रम का निर्धारण इस प्रकार हो कि छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि तथा जिज्ञासा जाग्रत हो सके । पाठों की विषय वस्तु सुपाठ्य तथा बोधगम्य हो । उनका अध्यापन भी नीरस नहीं होना चाहिए । पढ़ाई उस खुले वातावरण में होनी चाहिए कि छात्र बिना किसी हिचकिचाहट के विषय से सम्बन्धित अपने प्रश्नों पर चर्चा कर सके । परन्तु कदाचित् नैतिक मर्यादा का उल्लंघन न कर पाये ।

अभिभावकों के लिए भी सीमा निर्धारित होनी चाहिए । विद्यालय के पाठ्यक्रम तथा पठन–पाठन में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें । इस स्थिति में हम पायेंगे कि विद्यालय रूपी संस्था में अनुशासित तथा कल्पित रामराज्य पुनः स्थापित हो चुका है ।

– शिवांगी शर्मा
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

प्रयास को सर्वाधिक महत्व दीजिये

जिंदगी में कभी निराश नहीं होना चाहिये, निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिये। सफलता एवं उपलब्धि प्राप्ति की कुंजी निरन्तर प्रयास है, इस संदर्भ में महात्मा गाँधी का यह कथन है, कि "सत्याग्रही की हार कभी नहीं होती है" जो व्यक्ति एक अच्छे उद्देश्य को लेकर प्रयास करता है, उसका प्रयास करने में एक प्रकार की आत्म संतुष्टि का अनुभव होता है। क्योंकि प्रत्येक प्रयास में वह अपने लक्ष्य की ओर अपने को अग्रसर हुआ अनुभव करता है और प्रत्येक असफलता को वह अपनी यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव एवं आत्म निरीक्षण का अवसर समझता है।

हम कोई काम आरम्भ करके तो देखें सफलता तो आगे–पीछे, कम–ज्यादा मिलती ही मिलती है, जो लोग असफल होने के भय से कुछ भी करना नहीं चाहते हैं, उनसे सफलता की क्या आशा की जा सकती है। कोई भी काम ऐसा नहीं है जो ना किया जा सके, अगर यही सोच लिया कि हम असफल हो जायेंगे, तो फिर वह काम नहीं कर पायेंगे। मन में असफलता को नहीं लाना चाहिये। निरंतर प्रयास करतें रहना चाहिये, एक दिन सफलता कदम चूमेगी। दृढ़ इच्छाशक्ति एवं तद्नुसार आचरण द्वारा असम्भव प्रायः लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। मन में आत्म विश्वास होना चाहिये और निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये। प्रयास करने से ही सफलता मिलती है। इसलिये प्रयास को सर्वाधिक महत्व देना चाहिये।

– पूजा रानी
बी०एड०

*

गायत्री मंत्र

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो, देवस्य। धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

उपरोक्त मंत्र का अर्थ गान के रूप में निम्नवत् है जिसे 'गायत्री गान' कहा गया है।

– रामनिवास वर्मा
बी.एड.

*

Scanned by CamScanner

लाभ किसका - दुःख का या सुख का

कई बार एक प्रश्न हमारे मन में एक उथल-पुथल सी मचा देता है कि दुःख या उदासी ज्यादा लाभ देती है मानव को या सुख और खुशी । उसके लिये बहुत गहराई में जाना पड़ेगा और फिर हमें आभास होगा कि खुशी की अपेक्षा उदासी अधिक देकर जाती है हमें । खुशी का विस्तार तो होता है पर उसमें गहराई नहीं होती ये उथली- उथली तो है जो हमें फैला देती है, पर कुछ सोचने का अवसर नहीं देती अहंकार जैसे अवगुण की सौगात हमें खुशी ही देती है लेकिन दूसरे रूप में खुशी आगे बढ़ने को प्रोत्साहित भी करती है पर फिर भी हम गौर से देखें तो जिनको यह प्रोत्साहित करती है उनकी संख्या कम ही मिलेगी ।

जबकि उदासी निस्तृत तो नहीं होती लेकिन गहरी जरुर होती है ये ऊपरी नहीं होती, इसका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है । ये हमें सिमटाकर तन्हा कर देती है और अकेले में सोचने-समझने की सामर्थ्य दुःख या उदासी के वक्त मानव की अधिक होती है । दुःख हमें वास्तविकताओं की ओर ले जाता है और कई भ्रम तोड़कर हमारी आत्मा पर जो अज्ञानता के, आडम्बरों के जो पर्दे पड़े रहते हैं । उन्हें उठा देता है और हमारा परिचय उसका सच्चाई से कराता है जिससे हम अनभिज्ञ थे । कठिन परिश्रम के लिये दुःख एक हद तक प्रेरणा स्तोत भी होता है । हमारा प्रयास पूर्ण नहीं था जो इस ओर इंगित करता है दुःख से हृदय की कठोरता समाप्त हो जाती है । अभिमान जैसे भावना नहीं रहती ।

इतिहास उठाकर देखें तो हमें हर कदम पर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं । बाबर जब आया उसे कितने दुःखों, कितने संघर्षों का सामना करना पड़ा लेकिन इसी पीड़ा ने उसे एक दिन सम्राट बनाकर हमारे हिन्दुस्तान पर उसका राज करा दिया जबकि बहादुर शाह जफर अपनी विलासिता रूपी खुशी, सभी सुखों के कारण केवल अपने महल तक सिमट कर रह गया ।

भगवान श्रीराम अनगिनत दुःखों को सहते हुये अन्त में आज मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में उनकी पूजा की जाती है जबकि रावण अपनी कठोर तपस्या से महान तो बना पर इसकी खुशी ने अहंकार की भावना को भी जन्म दे दिया जिसके कारण उसके

Scanned by CamScanner

कुल में कोई पानी देने वाला भी नहीं बचा और आज उसकी पूजा तो दूर कोई नाम भी रावण नहीं रखना चाहता ।

कालिदास भी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । प्यार में मिले धोखे ने उन्हें प्रेमी से कितना बड़ा कवि बना दिया ।

यदि आज के जीवन में हम गौर से देखें तो भी हमें कई प्रमाण मिलते हैं जैसे किसी भी विवाह–समारोह या खुशी के उत्सव में जाने पर हमें क्षणिक आनन्द तो मिलता है लेकिन साथ ही कई भ्रम, बुराईयाँ भी हम साथ ले आते हैं जो सूक्ष्म विश्लेषण करने पर ही हमें समझ आती है । दूसरी ओर जब हम किसी विदाई समारोह जैसे मृत्यु होने पर कहीं जाते हैं तो वहाँ जो चारो ओर एक उदासी, दुख का वातावरण हमें घेर लेता है और एक गहरी सोच में ले जाता है जो हमें भ्रमित नहीं अपितु मौत के सत्य से हमारा साक्षात्कार कराता है आत्मा–परमात्मा के मिलन की अनुभूति हमें होती है ।

मैं तो यही कहूँगी कि दु:ख या उदासी एक ऐसा तप है जिसमें मानव तप कर सोने की तरह और ज्यादा निखर जाता है ।

– श्रीमती रीमा अग्रवाल
बी०एड०

*

गम

दर्द तो था जब भी पर,
इतना गम से यारी न थी ।
जिंदगी बोझ तो थी पर,
इस कदर भारी न थी ।।

इतने रंज है कि साँस आता नहीं,
गमों की भीड़ी में ।
उस वक्त के जीवन में शायद,
इतनी लाचारी न थी ।।

हर कदम पर पहले कहाँ थी,
इस कदर बेइमानियाँ ।
जालिम तो गैर भी थे पर,
अपनों जैसी सितमजारी न थी ।।

मेरा दिल क्या आज तो,
इसने हिला डाला अपना वतन ।
चोट जो पहले लगी थी,
वो इस कदर हारी न थी ।।

कोई ऊँच न था, कोई न था नीच,
था सबमें भाईचारा ।
जातिवाद का जहर न था,
साम्प्रदायिकता की बीमारी न थी ।।

किस मुँह से शिकवा करुँ,
दुश्मनों का मैं "रीमा" ।
भारत माँ के लिये मिटने की,
आयी मेरी बारी न थी ।।

– श्रीमती रीमा अग्रवाल
बी.एड.

*

नैतिक मूल्य

महात्मा गाँधीजी के अनुसार सात महापाप हैं– 1. मेहनत के बिंना दौलत, 2. अन्तरात्मा के बिना आनन्द, 3. चरित्र के बिना ज्ञानं, 4. नैतिक मूल्यों के बिना व्यापार, 5. इन्सानियत के बिना साइंस, 6. त्याग के बिना धर्म, 7. सिद्धान्तों के बिना राजनीति ।

जब एक बच्चे का जन्म होता है तो खुशियाँ कौन मनाता है ? माँ–बाप, रिश्तेदार और दोस्त । लेकिन रोता कौन है ? वह बच्चा । हालाँकि जब हम इस दुनियाँ से जाते हैं तब इसका उल्टा होना चाहिए । हमें खुशी होनी चाहिए और संतुष्टि होनी चाहिए कि हमने दुनियाँ को जैसा पाया था उससे बेहतर छोड़कर जा रहे हैं । दुनियाँ को रोने दें कि इसने एक ऐसे अच्छे इन्सान को खो दिया, जिसके जाने से दुनियाँ थोड़ी गरीब हो गई । हमारा काम दुनियाँ से सिर्फ लेना ही नहीं है कि बल्कि देना भी है ।

हिन्दू फिलोसॉफी का मानना है कि जब अच्छे इंसान इस दुनिया से जाते हैं तो वे मरते नहीं सिर्फ गुजर जाते हैं । उनका नाम उनके अच्छे कामों की वजह से सदा अमर रहता है । दूसरी तरफ मौत तो सिर्फ धूर्तों को आती है और उनके जाने से धरती का बोझ हल्का होता है ।

याद कीजिए, आपने आखिरी बार कब श्रद्धांजलि सुनी थी । जब लोग अपनी श्रद्धांजलि दे रहे होते हैं तो सबसे आम बात जो होती है वह उस व्यक्ति द्वारा जीवन में लिये गये छोटे–से–छोटे काम की चर्चा होती है । वास्तव में उसके गुजरने के बाद उन्हें और भी ज्यादा याद किया जाता है । यही वह सत्य है जब लोग महसूस करते हैं कि गुजरने वाले के छोटे–छोटे काम याद करने वाले, दूसरों के लिए कितने महत्वपूर्ण थे ।

आज तक कोई इंसान इसलिए सम्मानित नहीं हुआ कि उसने दुनिया से क्या लिया ? लेकिन इसके लिए जरुर हुआ कि उसने क्या दिया ?

हम अपने जीवन मूल्यों को किस तरह परखें–: हम अपने जीवन मूल्यों को किस तरह परखते हैं । इसके लिए दो टेस्ट हैं । सबसे ऊँचा टेस्ट ममा टेस्ट है । आप कुछ भी कर रहे हों, जब भी रहे हों, जहाँ भी कर रहे हों, जिसके साथ भी कर रहे

हों, घर या बाहर अकेले में या किसी के साथ, अगर मूल्यों का सवाल हो तो खुद से पूछें, अगर मेरी माँ देख रही होती कि मैं क्या कर रहा हूँ ? तो क्या वह गर्व करती और कहती "शाबाश मेरे बच्चे ! या वह शर्म से सिर झुका लेती ?" और रुककर थोड़ा सोचिए । आपके जीवन मूल्य तुरन्त साफ हो जायेंगे । यदि आप ममा टेस्ट पास कर लें और दूसरे सभी टेस्ट में फेल हो जाएँ तो भी आप पास हैं । और अगर आप ममा टेस्ट में फेल हो जायें और सभी टेस्ट में पास हो जायें तो भी आप फेल हैं ।

यह बार–बार आजमाने योग्य हैं । इसके बारे में सोचिए । जब भी आपको जीवन मूल्यों को लेकर कोई दुविधा हो ।

अगर ममा टेस्ट से जबाव नहीं मिलता तो एक और टेस्ट है, जिसे कहते हैं– बाबा टेस्ट । आप कुछ भी कर रहे हों, जब भी कर रहे हों, घर या बाहर, अकेले में या किसी के साथ । अगर मूल्यों का सवाल हो, तो खुद से पूछें, "अगर मेरे बच्चे मुझे देखें, क्या मैं शर्मिन्दा होऊँगा ।" इससे शंका के बादल जल्दी छँट जायेंगे और आपको अपना जबाव मिल जायेगा ।

अगर ये दोनों टेस्ट किसी इंसान के जीवन मूल्यों को नहीं परख पाते तब वह इंसान नहीं और उसकी अंतरात्मा मर चुकी है ।

हम अपने जीवन मूल्य किस प्रकार बदलते हैं–: लगातार सम्पर्क में आने से जो असहनीय है, वह भी स्वीकार करने लायक हो जाता है और फिर हम उसमें उलझ जाते हैं । और इस सारे बदलाव के सिलसिले के दौरान हर बात को मानने के लिए रोज नये बहाने बनते जाते हैं ।

हमें याद रखना चाहिए कि नैतिक मूल्य, अच्छी आदतें और सद्गुण पैदाईशी नहीं हैं वे सीखें जाते हैं । हमें अपनी सही प्राथमिकताएँ निर्धारित करने की जरुरत है ।

पैसा हर काम की कीमत नहीं होता । माँ–बाप बच्चों की परवरिश इस उम्मीद से नहीं करते कि बदले में उन्हें पैसा मिलेगा । बहुत से लोगों के पास काफी पैसा है, मगर फिर भी वे गरीब हैं । हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हमारे पास पैसे भी हों और हम अमीर भी हों ।

जब पैसा बोलता है तो अक्ल की बात नहीं बोलता और जब भी पैसा बोलता है तो सच्चाई चुप रहती है । सबसे दुख की बात जिन्दगी में यही है कि लोग बिना कमाए पैसा बनाना चाहते हैं । पैसा कमाना तो आसान है लेकिन उसे संभालना मुश्किल है ।

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे अच्छी और सबसे सुन्दर चीजों को न तो देखा और नहीं छुआ जा सकता है। उन्हें दिल से महसूस किया जाना चाहिए। मेहनत इंसान को पैसे की कीमत सिखाती है, इसलिए यह बहुत जरुरी है कि माँ–बाप अपने बच्चों को यह बात सिखाएँ, जो बिना मूल्यों को सीखे दौलत विरासत में पा लेते हैं। बिना शिक्षा और निर्देशन के वे हर चीज की कीमत है। वास्तव में यह सच नहीं है। वे लोग जिनका जीवन मूल्यों पर आधारित है, बिकाऊ नहीं होते और न ही वे अपनी कोई कीमत लगाते हैं।

लोग रातों रात अमीर होना चाहते हैं, चाहे फिर उन्हें अपनी आत्मा को ही क्यों न बेचना पड़े, लेकिन फिर भी बात नहीं बनती। ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्चे जीवन मूल्य अमूल्य होते हैं। जैसे ही मूल्यों की कोई कीमत लग जाती है तो वे मूल्य अपनी कीमत खो बैठते हैं। कोई भी फायदा उस नुकसान की भरपाई नहीं कर सकता।

पैसे का होना और उससे खरीदी चीजों का होना ठीक है मगर पैसे कमाने के दौरान हम उन चीजों को नहीं खोना चाहते जो अनमोल है। पैसे से वही चीजें खरीदी जा सकती हैं, जिनकी कीमत लग सकती है और वास्तव में सबसे कीमती चीज वही है जो पैसे से खरीदी नहीं जा सकती है।

जिन्दगी की सबसे कीमती चीजें पैसा खरीद ही नहीं सकता। हम अक्सर लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं कि हर आदमी की एक कीमत होती है जो लोग ऐसी बातें करते हैं। वे वास्तव में खुद बिकाऊँ होते हैं। अच्छे चरित्र निष्ठा और सही जीवन मूल्यों वाले लोग बिकाऊँ नहीं होते।

पैसा खरीद सकता है–:

हँसी मगर खुशी नहीं
बिस्तर मगर नींद नहीं
किताबें मगर ज्ञान नहीं
एक घड़ी मगर समय नहीं
साथी मगर दोस्त नहीं
चमक–दमक मगर खूबसूरती नहीं
खाना मगर भूख नहीं
मकान मगर घर नहीं
दवा मगर सेहत नहीं
अँगूठी मगर जीवन साथी नहीं

– गोपाल कृष्ण गौतम
प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय

*

Scanned by CamScanner

साक्षरता

प्राचीन युग में भारतवर्ष जगद्गुरु की संज्ञा से विभूषित था । यहाँ के ऋषियों, मनीषियों ने सम्पूर्ण संसार को ज्ञान का संदेश दिया । ज्ञानियों को जन्म देने वाली इस भार–भूमि के पशु–पक्षी भी ज्ञानी थे । शुक–पिक आदि भी संस्कृत का ज्ञान रखते थे, फिर मानव का तो कहना ही क्या ? शिक्षण हेतु तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित थे । जिनमें अध्ययन करने के लिए विदेशी विद्वान भी इच्छुक रहा करते थे । निरक्षरता का नाम भी अज्ञात था ।

किन्तु सृष्टि की प्रत्येक वस्तु परिवर्तित होती रहती है । भारतवर्ष में भी परिवर्तन हुआ । परतन्त्रता के पश्चात् उसका ज्ञान भी विलुप्त होता गया । कहा जाता है कि निरक्षरता अभिशाप है और साक्षरता वरदान, दासता–पाश में बद्ध भारत को यही निरक्षरता अभिशाप रूप में मिली । ग्रामीण अपनी निरक्षरता के कारण अनेक कष्ट झेलने लगे । उनके इन कष्टों को देखते हुए देश के कुछ नेताओं ने उनमें साक्षरता का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया ।

सर्वप्रथम सन् 1935 में कांग्रेस मंत्रीमंडल ने साक्षरता का प्रसार अभियान प्रारम्भ किया, जिसके फलस्वरूप ग्रामों में शिक्षा हेतु अनेक पाठशाएँ खोली गयीं । बालकों के साथ–साथ प्रौढ़ों को भी अक्षर–ज्ञान सम्पन्न बनाने की योजना कार्यान्वित हुई । पहले की अपेक्षा पर्याप्त मात्रा में लोग साक्षर हो गये । किन्तु यह साक्षरता पर्याप्त नहीं थी । इससे भारतवासियों को हस्ताक्षर करना तो आ गया था, किन्तु उन्हें अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों का ज्ञान नहीं था । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अपनी सरकार ने नागरिकों को ज्ञान सम्पन्न बनाने का पूर्ण प्रयास किया । साक्षरता का अर्थ अब केवल अक्षर–ज्ञान करना नहीं था बल्कि नागरिकों को राष्ट्रीय चेतना से युक्त एवं अधिकारों, कर्त्तव्यों के प्रति जागरुक करना था ।

प्रारम्भ में भारत में शिक्षा 17% थी किन्तु दस वर्षों के अन्तर्गत इसमें प्रगति हुयी और यह 24% तक पहुँच गयी । आशा है, इस प्रयत्न के आधार पर शीघ्र ही यह प्रतिशत अधिक हो जायेगा और भारत भी निरक्षरता जैसे अभिशाप से मुक्त हो जायेगा ।

– कु० दुर्गेश शर्मा
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई

संस्कृत की एक कहावत है– 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः' अर्थात मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है । तात्पर्य यह है कि मन ही सांसारिक बंधनों में बांधता है और मन ही बन्धनों से छुटकारा दिलाता है । यदि मन न चाहे तो व्यक्ति बड़े से बड़े बंधनों की उपेक्षा कर सकता है । शंकराचार्य जी ने कहा है कि 'जिसने मन को जीत लिया, उसने जगत को जीत लिया' । मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में बिठा देता है । स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान ने हमारे हाथों में दे रखी है । मन के टूटने पर बड़े–बड़े संकल्प भी धाराशायी हो जाता है और जब तक मन संकल्पशील रहता है तब तक कठिन से कठिन परिस्थिति में मनुष्य हार नहीं मानता ।

दुःख सुख कहँ परत है, पौरूष तजहु न मीत ।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।।

अर्थात सुख–दुख तो सभी पर पड़ा करते हैं, इसलिये अपना पौरूष मत छोड़ो; क्योंकि हार और जीत तो केवल मन के मानने और न मानने पर निर्भर है ।

हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें मन की संकल्प शक्ति के द्वारा अपनी हार को विजय में परिवर्तित कर दिया । महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की जीत का कारण यही था कि भगवान श्रीकृष्ण ने उनके मनोवल को दृढ़ कर दिया था नचिकेता ने केवल मृत्यु पर विजय प्राप्त की बल्कि यमराज से अपनी इच्छानुसार वरदान भी प्राप्त किया । सावित्री के मन ने यमराज के सामने हार नहीं मानी और अन्त में यमराज से अपने पति को वापिस छीन लिया । बहुत कम साधनों से महाराणा प्रताप ने अपने मन में दृढ़ संकल्प करके सम्राट अकबर से युद्ध किया । शिवाजी ने बहुत थोड़ी सी सेना लेकर ही औरंगजेब के दाँत खट्टे कर दिये । द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान को अणु बम के विस्फोट से तहस–नहस कर दिया था पर आज जापान विश्व के गिने चुने शक्ति सम्पन्न देशों में से एक है । दुबले–पतले गाँधी जी ने अपने दृढ़ संकल्प से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया । इस प्रकार के कितने उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हार–जीत मन की दृढ़ता पर ही निर्भर है ।

अक्सर देखा गया है कि जिस काम के प्रति व्यक्ति का रूझान अधिक होता है,

Scanned by CamScanner

उस कार्य को कोई भी कष्ट सहन करते हुये भी पूरा करता है। ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर चढ़ाई करने वाले पर्वतारोहियों के मन में अपने कर्म के प्रति आसक्ति रहती है। आसक्ति की यह भावना उन्हें निरन्तर आगे बढ़ने को प्रेरित करती रहती है। मन सफलता की कुंजी है।

एक प्रसिद्ध कहानी है कि एक राजा ने अपने शत्रु से कई बार युद्ध किया परन्तु पराजित हुआ। पराजित होने के पश्चात वह एक गुफा में जाकर छिप गया तभी उसकी नजर एक मकड़ी पर पड़ी जो कई बार ऊपर चढ़ी परन्तु बार-बार गिरती रही और अन्त में वह ऊपर चढ़ गई। इससे राजा को काफी प्रेरणा मिली और एक बार फिर उसने साहस जुटाकर व मन को दृढ़ करके अपने शत्रु पर आक्रमण किया और विजय को प्राप्त किया। इस कहानी का सार यह है कि हार न मानने पर आपको एक न एक दिन विजय जरूर मिलती है।

परन्तु अन्त में प्रश्न यह उठता है कि मन को शक्ति सम्पन्न कैसे किया जाय। मन को शक्ति सम्पन्न बनाने के लिये सबसे पहले मन की शक्ति को जानना होगा। कहा जाता है-

मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्व जगद्वशे ।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वजगतो वशे ॥

अर्थात जिसने अपने मन को वश में कर लिया उसने संसार वश में कर लिया, किन्तु जो मनुष्य मन को न जीतकर स्वयं उसके वश में हो जाता है, उसने मानो सारे संसार की अधीनता स्वीकार कर ली।

चंचल मन को एकाग्र करने की आवश्यकता है। चंचल रहते हुये उसमें किसी भी शक्ति का समावेश नहीं हो सकता। एकाग्रता के लिये आवश्यक है कि हम विचारों के चक्र को रोकें और अपने जीवन को शुद्ध बनाये। आचार-विचार में सत्यता का पालन तथा अन्याय का विरोध करे। स्वार्थ सिद्धि और वासना तृप्ति से मुक्त रहे। जब हम अपने मन को इस प्रकार की दूषित भावनाओं से मुक्त कर लेंगे। तभी हमारा मन एकाग्र हो पायेगा। कबीर दास जी ने मदमत्त को घट के भीतर घेरकर रखने की बात कही है और पीठ देकर विपरीत दिशा में चलने पर अंकुश लगाने को कहा है-

मैमन्ता मन मारि रे, घट ही माहैं घेर ।
जबहि चालै पीठि दै, अंकुश दै दै फेर ॥

मन को शक्तिमान बनाने के लिये हीनता की भावना को भी दूर करना आवश्यक है। जब व्यक्ति यह सोचता है कि मैं अशक्त हूँ, दीन-हीन हूँ, शक्ति और साधनों से रहित हूँ तो उसका मन कमजोर हो जाता है। इसलिये इस हीनता

Scanned by CamScanner

की भावना से मुक्ति प्राप्त करने के लिये मन को शक्ति सम्पन्न बनाना आवश्यक है।

मन परम शक्ति सम्पन्न है । यह अनन्त शक्ति का श्रोत है । मन की इसी शक्ति को पहचान कर ऋग्वेद में यह संकल्प कई बार दोहराया गया है–

"अहभिन्द्रो न पराजिग्ये" अर्थात मैं शक्ति का केन्द्र हूँ और जीवन पर्यन्त मेरी पराजय नहीं हो सकती । यदि हम मन को शक्ति सम्पन्न बनाकर रखेंगे तो जीवन में पराजय व असफलता का अनुभव कभी न होगा ।

– अल्का केसरी

बी०एड०

*

समाज में दामाद की स्थिति

दामाद का बीबी के प्रति नजरिया......
जब बीबी मायके जाती है तो प्रिय अपना ख्याल रखना ।

बहन के प्रति नजरिया......
क्या कर रही है ? जरा पानी लेकर आओ ।

साली के प्रति नजरिया......
जब साली आती है तो आप कैसी हैं, बैठो ! काम मत करो, तुम्हारी दीदी कर लेगी ।

भाई के प्रति नजरिया......
ऐ जरा सुन, स्कूल बाद में जाना, जरा भाभी को बाजार ले जाना ।

साले के प्रति नजरिया......
जब साला आता है तो आओ बैठो ! जरा रुककर जाना ।

जब दामाद अपनी ससुराल जाता है तो......
2 किलो मिठाई का डिब्बा लेकर जाता हैं ।

जब अपनी बहन के घर जाता है तो......
वह कहता है बहन आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है ।

अपनी माँ से कहता है......
आज मेरी पत्नी खाना नहीं बनायेगी आप सारे दिन क्या करती रहती हैं ? यही तो सारी दिन काम करती रहती है ।

पत्नी की माँ के साथ......
आप कैसी हैं, अपना ख्याल रखा करो, कहो तो इन को छोड़ जाऊँ ।

अरे दामाद जो लड़की शादी से पहले जब हर जगह अकेली जा सकती थी । तो क्या शादी के बाद अब नहीं जा सकती.......

क्यों बार-बार अपना इमोशन दिखाते हो इसे अपने भाई बहन या माँ के प्रति भी बचाकर रखो ।

– सुमन

बी.एड.

*

Scanned by CamScanner

पाण्डुलिपियों की सुरक्षा तथा बचाव के उपाय

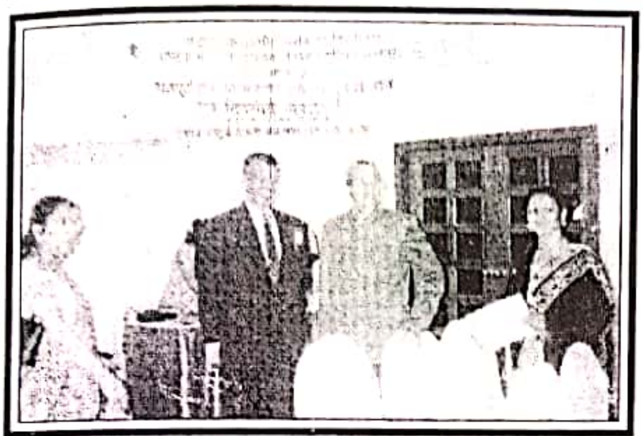

बायें से दायें-: श्रीमती ममता मिश्रा, निदेशक, भारतीय संरक्षण संस्थान, लखनऊ । श्री आलोक सिन्हा, मुख्य सचिव, गृह विभाग, उ०प्र० सरकार । डॉ० ओ०पी० अग्रवाल, डायरेक्टर जनरल, आई० सी०सी०आई०, नई दिल्ली एवं डॉ० कुसुमलता, पुस्तकालयाध्यक्ष, ज्ञान महाविद्यालय । पाण्डुलिपि संरक्षण वर्कशॉप में सक्रिय सहभागिता प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए ।

कहावत है कि – उपचार से महत्वपूर्ण सुरक्षा है । देश की संस्कृति की धरोहर पाण्डुलिपियों का रख–रखाव पुस्तकालयध्यक्षों का व्यवसायिक कार्य धर्म ही नहीं, नैतिक उत्तरदायित्व भी है ।

पहले हम पाण्डुलिपियों के नष्ट होने की सम्भावनाओं पर विचार करें ।

पाण्डुलिपियों के नष्ट होने के कारण

1. हानिकारक कीड़े–मकोड़े
2. पानी
3. अग्नि
4. धूल
5. पाठकों कर्मचारियों द्वारा पुस्तकों के साथ दुर्व्यवहार ।

हानिकारक कीड़े–मकोड़े पुस्तकों के दुश्मन होते हैं । इस प्रकार के कीड़े मकोड़ों में तिलचट्टे, दीमक, मोल्ड या मिलण्यू सिल्वर फिस तथा गुवरैला आदि हैं । तिलचट्टे अंधेरे में किताबों पर हमला करते हैं और पुस्तकों में जो कपड़ा लगा होता है, उसमें भर जाते हैं और दुर्गन्ध छोड़ते हैं, इनको नष्ट करने हेतु डी०डी०टी०, गैमेक्सीन पाउडर का प्रयोग करना चाहिये । सोडियम फ्लोराइड का भी प्रयोग किया जा सकता है ।

दीमक पुस्तकों के लिये सबसे हानिकारक होती है । यदि एक बार पुस्तकों को खाना एवं नष्ट करना शुरु कर दिया तो उसको खाकर ही दम लेती है । अतः इसका एक ही तरीका है कि उसके अड्डे को खोजा जाये और रानी दीमक का नाश कर देना चाहिये, क्योंकि वही दीमकों को जन्म देती है । दीमकों को मारने के लिये कार्बन डाई सल्फाईड या कार्बन टेट्राक्लोराइड का प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि इसके प्रयोग से मिट्टी तक में दीमक मर जाती है । पुस्तक संग्रह के लिये लोहे का फर्नीचर तथा कंकरीट युक्त भवन का प्रयोग करना चाहिये । भवन निर्माण के समय नींव खोदने के बाद नींव भरते समय मिट्टी में 20 जिंक क्लोराइड या कॉपर सल्फेट का मिश्रण मिलाना चाहिये तथा

पत्थर, पक्की ईंटों का प्रयोग करना चाहिये। संग्रह कक्ष वातानुकुलित होना चाहिये। पर्याप्त मात्रा में सूर्य प्रकाश, सूखापन, खिड़की आदि होनी चाहिये।

बुक वार्मश: ये पुस्तकों को खाते रहते हैं। ये अधिकतर उष्ण कटिबंधीय तथा अर्ध उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाले प्रदेशों में पाये जाते हैं। अत: इन्हें नष्ट करने हेतु नेप्थेलीन का प्रयोग करना चाहिये।

फंगस अथवा मिलड्यू: दूसरे खतरनाक कीड़े–मकोड़ों में फंगस अथवा मिलड्यूस होते हैं जो बहुत ही पतली किस्म के होते हैं। ये चमड़े तथा कागज को नष्ट कर देते हैं। आद्रता (हुयुमिडिटी) इनकी अधिक सहायक होती है। 70 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक आद्रता होने पर अधिक मात्रा में पनपते हैं और तापक्रम 85 सेंटीग्रेट से 38 सेंटीग्रेट होता है। उचित रोशनदान तथा खुली अलमारियाँ अधिक लाभदायक होती हैं।

थाइमल क्रिस्टलस: 100 ग्राम, इथर 200सी०सी०; मरक्युरिक बाई क्लोराइड के मिश्रण द्वारा मिलड्स की उत्पत्ति को रोका जा सकता है। यह मिश्रण काफी जहरीला तथा प्रज्वलित प्रकार का होता है। अत: इसको बहुत सावधानी से प्रयोग करना चाहिये।

सिल्वर फिश: यह भी एक भयानक कीड़ा होता है। यह दिन में छिप जाता है और रात्रि में जिल्द, कागज आदि की शिकार में रहता है। सिल्वर फिश नष्ट करने के लिये बोरिक एसिड तथा आटे के मिश्रण को पुस्तकों के निकट फैलाना चाहिये। सफाई रखना इसके लिये स्थाई इलाज है। सोडियम फ्लोराइड जिसका अनुपात 12:100 होना चाहिये, काफी प्रभावशाली माना जाता है।

चूहों से पुस्तकों की रक्षा करने के लिये गोंद, लेई में नीला थोथा आदि मिलवाना चाहिये।

अत: उपर्युक्त कीड़े–मकोड़ों से बचने के लिये आसंग प्रणाली (ओपन एक्सेस) बहुत ही सहायक सिद्ध मानी जाती है, क्योंकि पाठकगण जाकर पुस्तकों को अधिकतर छूकर देखते रहते हैं।

जिल्द पन्नी में काले रंग का प्रयोग नहीं होने देना चाहिये। इसके लिये लाल रंग का ही प्रयोग लाना लाभदायक रहता है।

महाविद्यालय–अपने स्टाफ के ज्ञान वर्धन के लिए उन्हें सेमिनार, संगोष्ठियों में भेजता है। डॉ० कुसुमलता पुस्तकालयाध्यक्ष ने पाण्डुलिपि संरक्षण त्रिदिवसीय कार्यशाला, लखनऊ में भाग लिया। वहाँ उन्होंने सक्रिय सहभागिता के साथ–साथ अपने सुझाव भी प्रस्तुत किये। प्रमुख बिन्दु यहाँ प्रस्तुत हैं– सम्पादक।

Scanned by CamScanner

अन्य कारण तथा उन्हें दूर करने के उपाय

हानिकारक कीड़े–मकोड़ों के अलावा अन्य कारण भी हैं जैसे पुस्तकों को संग्रह हेतु प्रतिकूल सुविधायें, बुरा संरक्षण, पाठकों द्वारा लापरवाही से पुस्तकों को उठाने रखने का गलत ढंग, धूल, आग, अत्यधिक प्रकाश, आद्रपन, शुष्कपन तथा तापक्रम में विभिन्नता, ये सभी अन्य कारणों में आते हैं जो पाठ्य सामग्री को खराब करते हैं।

पुस्तकों को उपर्युक्त से बचाने के लिये वातानुकूलन एक रामबाण के समान है। यह तापक्रम तथा आद्रता के सतह को स्थिर रखने के लिये सहायक सिद्ध होता है। यह पाठ्य सामग्री के जीवन को बढ़ाता है। अत्यधिक सूर्य प्रकाश, तेज गर्मी, शुष्कपन, आद्रपन और हवा में गैस, ये कारण कागज तथा चमड़े के लिये काफी हानिकारक होते हैं। अतः पुस्तकालय के लिये वायुमंडलीय अवस्थायें उपलब्ध करानी चाहिये। ताकि ये कारक नियंत्रित रह सकें। धूल से बचाव हेतु हवा छनकर आनी चाहिये। सूखे निर्माण प्रणाली पर आधारित होने चाहिये और उसकी दीवारें पोली होनी चाहिये। फर्श की सतह इतनी ऊँची होनी चाहिये कि अवांच्छनीय आद्रपन से बचाव हो सके। नेप्थलीन बालू, चूना, मिरगोसा पत्ती तथा तम्बाकू पत्ती निरोधक प्रभाव रखती है।

पानी

पानी दो प्रकार से हानिकारक होता है। प्रथम वायुमण्डल की आद्रता का कारण होता है। जिससे पुस्तकों पर फंगस के विकास में सहायक होता है। यह लोहे की अलमारियों में जंग लगने से हानि पहुँचाता है। भण्डार कक्ष में कोयला की बाल्टी रखनी चाहिये। पुस्तकें जो फंगस द्वारा खायी हुयी हैं। उन्हें व्यक्तिगत रूप से साफ करना चाहिये।

पानी से दूसरे प्रकार का नुकसान मानसून के मौसम में बरसात के कारण होता है। बरसात का पानी भंडार कक्ष में रोशनदानों तथा खिड़कियों के द्वारा अथवा छतों के रिसने के द्वारा प्रवेश कर सकता है। अतः साधारण चपटी प्रकार की छत के स्थान पर गारबल छत प्रयोग करनी चाहिये। भवन को सुरक्षित रखने हेतु मरम्मत के लिये इन्जीनियर को तुरन्त अवगत कराना चाहिये।

आग

जलती हुई माचिस की तीली, लेम्प बत्ती, सिगरेट, बीड़ी तथा बिजली की खराबी के कारण आग लग सकती है। अतः बचाव हेतु निम्नलिखित कदम उठाने चाहिये–:

1. भंडार कक्ष सामग्री अग्निसह (फायर प्रूफ) होना चाहिये।
2. मोमबत्ती, लेम्प का प्रयोग बिना सीसा ढके नहीं होना चाहिये।

Scanned by CamScanner

3. छत में अच्छादित लेम्प का प्रयोग करना चाहिये और यह स्वयं चालित प्रकाश करने वाले से जलाना चाहिये। यदि माचिस की तीली का प्रयोग किया गया हो तो तीली को बुझाकर बाहर फेंक देना चाहिये।

4. भंडार कक्ष में बीड़ी, सिगरेट पीने की अनुमति नहीं होनी चाहिये। यदि बीड़ी सिगरेट पीने के लिये कोई विशेष प्रबन्ध न किया गया हो तो अध्ययन कक्ष में पाठकों को इस उद्देश्य हेतु राख झाड़ने वाला वर्तन का प्रबन्ध अवश्य कर देना चाहिये ताकि पाठकगण बीड़ी, सिगरेट के प्रयोग किये हुए टुकड़ों तथा माचिस की जली हुई तीलियों को उक्त बर्तन में डाल सकें।

5. पुस्तकालय में खुले प्रज्वलित पदार्थ जैसे मिट्टी का तेल, पेट्रोल, कम्बल, खराब कागज के टुकड़े आदि नहीं रखना चाहिये।

6. जलपान ग्रह भंडार कक्ष से थोड़ा दूर होना चाहिये।

7. पर्याप्त मात्रा में आग बुझाने वाले तथा आग बुझाने की बाल्टी पुस्तकालयों में विभिन्न स्थानों पर होनी चाहिये। इन बाल्टियों में बालू तथा सूखा रेत भरा होना चाहिये। इन बाल्टियों में हर हफ्ते ताजा पानी भी भरा जा सकता है। आग लगने की स्थिति में फायर ब्रिगेड को टेलीफोन द्वारा तुरन्त सूचित कर देना चाहिये।

मनुष्यों द्वारा हानि

कुछ पाठकगण तथा दर्शक सामाजिक आदतों के विरुद्ध प्रवृत्ति युक्त होते हैं। पुस्तकों की चोरी तथा काट छांट करते हैं, पुस्तकालय से पुस्तकें चुरा लाते हैं। कुछ पाठक पुस्तकें उधार लेते समय अपना नाम झूठा बता देते हैं। खोये हुए पुस्तकालय पत्रक का दूसरे पाठकगण दुरुपयोग करते हैं। पुस्तकों में से पृष्ठ, प्लेटस, चित्र, नक्शे, सारणी आदि को पाठकगण निकाल लेते हैं तथा जिल्द किये हुए सामयिक प्रकाशनों में से पृष्ठ फाड़ लेते हैं। इस प्रकार पुस्तकें तथा सामयिक प्रकाशन अधूरे रह जाते हैं। पुस्तकों पर निशान लगा देते हैं। पुस्तकों के कोने मोड़ देते हैं। अतः फट जाते हैं। पुस्तकों को लापरवाही से प्रयोग करते हैं। पुस्तकालय में चोरी पकड़ने के लिये बहुत सी विधियाँ अपनायी जाने लगी हैं जैसे विद्युत उपकरण, भंडार कक्ष की कड़ी निगरानी, अध्ययन कक्ष के बाहर गेट पर जाँच तथा खोज आदि हैं। पुस्तकें वापस लेते समय जाँच सावधानी पूर्वक होनी चाहिये। निसंदेह हमें साथियों का सहयोग लेकर पुस्तकालय मिशनरी भावना से चलायें तो समस्या का निदान हो सकेगा।

– डॉ० कुसुमलता
पुस्तकालयाध्यक्ष

*

Scanned by CamScanner

अतिथियों का विभिन्न कार्यक्रमों में स्वागत

सम्पा॰ डा. वाई. के. गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री विनय भटनागर, निदेशक, प्रशिक्षण लोक सभा, का माल्यार्पण करते हुए

डा. बदरूद्दीन द्वारा श्री दिनेश मित्तल, निदेशक, महर्षि महेश योगी संस्थान हॉलैण्ड का माल्यार्पण

प्रवक्ता श्री सुरेन्द्र सिंह, कार्यकारिणी सदस्य श्री अनिल खण्डेलवाल का स्वागत करते हुए

प्रवक्ता सुश्री ममता शर्मा, मुख्य अतिथि प्राचार्या डॉ.मंजू सारस्वत, का स्वागत करते हुए

प्रवक्ता डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष श्रीमती आशा देवी का स्वागत करते हुए

प्रवक्ता श्री सुनील शर्मा, मंगलसैन शर्मा, प्रशिक्षक, का स्वागत करते हुए

Scanned by CamScanner

निरक्षरता - मानव जाति के लिए अभिशाप

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा तस्य शास्त्रं करोति किम्,
लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पणः किम् करिष्यति ॥

प्रस्तुत विषय में निहित सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक कठोर सत्य के बारे में हमारा स्वतंत्र–चिंतन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि निरक्षरता समूची मानव जाति के लिए एक कलंक है और यह समाज को ज्ञान के उस अकूत भंडार, चरित्र–निर्माण की अन्त:दर्शिनी दृष्टि और प्रगतिशील विचारों के उस ढाँचे से वंचित रखती है, जो शास्त्रों ने मानवता के उद्धार हेतु संचित कर रखे हैं। इससे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य है कि निरक्षरता दृश्य और श्रव्य की उन ईश्वरीय देनों के प्रति कृतघ्न प्रवृत्ति का प्रतीक है, जो सर्वश्रेष्ठ रूप में सिर्फ मनुष्य को ही इसलिए प्राप्त हैं कि वह देखने, सुनने और विचारने की इन शक्तियों का मानव–सभ्यता के कल्याण हेतु प्रयोग करें और इस तरह ईश्वर को अपना धन्यवाद व्यक्त करें। निरक्षरता हो असमानता शोषण और अहंकार का वह मोर्चा है, जो मानव को उदान्त जीवन के अधिकार से बेदखल करने की कोशिश करता है और वैकल्पिक जीवन की सारी सम्भावनाओं को शून्य बना देता है। कभी–कभी तो अशिक्षा इन कुप्रवृत्तियों को इतना प्रभावी कर देती है कि लोग उस अंधकार से मुक्त होने का प्रयत्न ही नहीं कर पाते।

निरक्षरता के कारण ही हम अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए अपनी ऊर्जा का सार्थक उपयोग नहीं कर पाते। फलत: यह ऊर्जा विपरीत दिशा में प्रवाहित होने लगती है और ऐसी विसंगतियों का जन्म होता है, जिनसे मानवीय प्रवृत्तियों का क्षीण होना स्वाभाविक ही है। समंग्र रूप से मानव जाति के दो ही प्रधान लक्ष्य होने चाहिए। पहला–प्रत्येक व्यक्ति को सृष्टि में अपनी भूमिका और कर्तव्यों का अनुभव हो, दूसरा समाज के पायदान पर खड़ा आदमी अपनी स्वतंत्रता, समानता और न्याय के अधिकारों का समुचित उपयोग कर सके, तथा रोटी, कपड़ा और मकान, स्वास्थ्य शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।

Scanned by CamScanner

अक्षर ज्ञान और शिक्षा से वंचित रहते हुए मनुष्य इनमें से किसी भी लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकता, इसी कारण आधुनिकाल में भी चाहे टैगोर हों, विवेकानन्द हों या गाँधी हों, सभी ने राष्ट्रीय संस्कृति के विकास में निरक्षरता को सबसे बड़ा बाधक माना और 'विद्या धनं सर्वधनं प्रध ानं' का नारा देकर यह आह्वान किया कि अज्ञानता को समाप्त किये बिना कोई भी जाति अपनी सार्थक प्रगति का मार्ग तय नहीं कर सकती।

ग्यातव्य है कि बुद्धिजीवियों का एक वर्ग भले ही शिक्षा और साक्षरता को अलग-अलग श्रेणी में प्रस्तुत करे, किन्तु मेरी दृष्टि में निरक्षरता उन्मूलन का तब तक कोई औचित्य नहीं है, जब तक प्राथमिक शिक्षा की सुलभता के आंकड़े संतोषजनक न हों और लोगों में मूल्यपरक तत्वों के समावेश का अभाव हो, जनता को क....ख....ग का पाठ सिखाना मात्र ही साक्षर बनाने का पर्याय नहीं हो सकता। अतः साक्षरता एवं शिक्षा को दो भिन्न-भिन्न हिस्सों में बाँटकर देखना प्रस्तुत विषय के संपूर्ण विश्लेषण के साथ अन्याय होगा।

मनुष्य और समाज को परिष्कृत बनाने के प्रयासों की निष्फलता सामंती मनोवृत्ति, निर्धनता, बेरोजगारी, अंधविश्वास व अन्य कुप्रथायें आदि सभी कुछ येनकेन प्रकारेण निरक्षरता का ही परिणाम है। गाँवों में अनपढ़ महिलाओं को तो यह तक नहीं मालूम कि अपने बच्चों के प्रति उनके क्या दायित्व हैं ? दाइयों द्वारा नवजात मादा शिशुओं को जहरीली दवा पिलाकर मार डालने अथवा पुत्र प्राप्ति हेतु ढोंगी तांत्रिकों के प्रभाव में दूसरों के घरों के चिराग को बुझा देने के मामले आए दिन अखबारों की सुर्खियों बनते हैं। भला ऐसे अनपढ़ लोगों से हम एक प्रगतिशील जीवन की आशा कैसे रख सकते हैं। स्त्री हो पुरुष, उसके निरक्षर होने का अर्थ है, कि समाज या देश अपने एक बड़े हिस्से की मानसिक क्षमता का लाभ नहीं उठा पा रहा है।

'ऑक्सफेम इंटरनेशनल' द्वारा प्रकाशित 'एजूकेशन नाऊ ब्रेक दी साइकिल ऑफ पावर्टी' के बारे में जारी रिपोर्ट से यह निष्कर्ष निकलता है कि अशिक्षा ने करोड़ों वयस्कों को वंचित और असुरक्षित बना डाला है, इनमें एक बड़ी संख्या औरतों और लड़कियों की है। ऐसी लड़कियों में भला कुछ कर दिखाने और

Scanned by CamScanner

फ्लोरेंस नाइटिंगेल, सरोजिनी नायडू, मदर टेरेसा या कल्पना चावला बनने की ललक कहाँ से पैदा होगी।

इतिहास गवाह है कि सुधार एवं विकास का कोई भी आन्दोलन जनता को साक्षर एवं जाग्रत किये बिना सार्थक नहीं बन सका है। साक्षरता के उत्कृष्ट स्तर पर पहुँचने के कारण ही विकसित देशों के समाज में सरकार की योजनायें एवं आधुनिक तकनीकें आसानी से फलीभूत हो पाती हैं, क्योंकि वहाँ का साक्षर जन समुदाय इस सन्दर्भ में सरकार को हर सम्भव सहयोग देने हेतु तैयार रहता है, जबकि इसके विपरीत निरक्षरता के कारण अफ्रीकी जातियाँ एक लम्बे समय तक साम्राज्यवादी शोषण का शिकार रहीं और आजादी मिलने के बाद की परिस्थितियों के अनुरूप विकास की निश्चित रूपरेखा तैयार करने में असफल रही हैं। गहराई से विचारें, तो कह सकते हैं कि यदि मनुष्य पढ़ने–लिखने में अयोग्य है तो निश्चित ही वह उन विचारों से भी परे होगा, जो मनुष्यत्व से उसका साक्षात्कार कराते हैं, उसके वजूद का अर्थ बताते हैं, समाज, राष्ट्र और प्रत्युत मानव संस्कृति के उद्धार के प्रति संचेतना जाग्रत करते हैं। यदि मनुष्य के विचार करने की शक्तियाँ ही सीमित हैं, तो वह 'आत्मबोझ' और 'आत्मबोध' के मध्य के भेद विकसित करने की समझ से वंचित होगा। अपने प्राकृतिक अधिकारों का समुचित प्रयोग करने और अन्य समुदायों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने की क्षमता वह कभी पैदा नहीं कर सकेगा, जिसके फलस्वरूप ही समाज में वैमनस्य, नैराश्य, हीनता, कुंठा, दारिद्रय और घृणा जैसी विसंगतियाँ जन्म लेती हैं। एक चिंतक की सटीक टिप्पणी है कि 'यदि किसी संस्कृति के आचार–विचार एवं विकास को नष्ट करना हो तो वहाँ का पुस्तकालय नष्ट कर दो।' यह निरक्षरता से उपजी विडंबना ही है कि एक समाज जहाँ उत्तर आधुनिक कंज्यूमरिज्म, स्टारवार, मीडियावार जैसे– 'हाईटैक' शब्दों से खेल रहा है। तो वहीं यदि दूसरे समाज के लोगों के समक्ष यह प्रचार कर दिया जाए कि सूर्यग्रहण एक गैर–मजहबी घटना या कुफ्र है, तो अवश्य ही समाज के झंडावरदार अपने लड़ाकुओं के साथ सूरज पर चढ़ाई कर देंगे और अपने–अपने पड़ोसियों को इसका दोषी ठहराकर उनके घरों को फूँक डालेंगे।

Scanned by CamScanner

अजीब स्थिति है कि जहाँ एक नई सहस्त्राविद का विशालकाय सूरज धरती की माँग में सुहाग का सिंदूर भर रहा है और हम अपने हाथों में उपलब्धियों की सूची थामे हैं, तो दूसरी ओर एक विश्व स्तरीय रिपोर्ट बताती है कि आज भी 10 करोड़ बच्चे, प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं और लगभग 90 करोड़ प्रौढ़ निरक्षर हैं। एक ही समाज का साक्षर एवं शिक्षित तबका खुशहाल जीवन यापन कर रहा है, तो दूसरा तबका निरक्षरता के कारण बेरोजगारी एवं बदहाली की मार फैलाने को अभिशप्त है। यह खाई ऐसे अलगाव को पैदा करती है जो मानव–जाति के लिए घातक है। इसी अलगाव के कारण ही निराशा, पहचान की व्याकुलता, क्षमता को न पहचान पाने की कुंठा, मानसिक तनाव, संत्रास और अपनी क्षुद्रता को हर समय कचोटते रहने वाले अहसास जैसी विसंगतियों के कारण, उनमें संयम और उत्तर दायित्व का बोध जाग्रत नहीं हो पाता। आज निरक्षर व्यक्ति भी साक्षर लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहता है, किन्तु परिस्थितिगत बान्ध्यतायें उसे ऐसा करने नहीं देतीं।

प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं समाजसेवी सफदर हाशमी ने इसी बात पर बल दिया कि अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध कोई सशक्त आवाज न उठने का मूल कारण निरक्षरता ही है। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे अत्यल्प साक्षर राज्यों में जनसाधारण की पर्याप्त प्रतिबद्धता के अभाव में कल्याणकारी नीतियों को कारगर रूप ही नहीं मिल पाता है। इसी प्रकार यहाँ बंधुआ मजदूरी और अस्पृश्यता जैसे कुरीतियाँ अभी तक बनी हुई हैं, क्योंकि निरक्षर होने के कारण लोगों में इतनी क्षमता ही नहीं है कि वे प्रतिरोध की संस्कृति को जन्म दे सकें। इन राज्यों में निरक्षरों की एक बहुत बड़ी संख्या भूमिहीनों और साधनहीनों की है, जो दूसरों की भूमि पर काम करते हैं, और अपनी कड़ी मेहनत के बावजूद उचित लाभ से वंचित रहते हैं। जिन बच्चों के माँ–बाप खुद निरक्षर होते हैं, वे अपने बच्चों को शिक्षित करने के प्रति विशेष रुचि नहीं दिखाते। वे उन्हें माल की ढुलाई, अधजले कोयले को बीनने, पटाखे, सिगरेट, बीड़ी, माचिस बनाने चर्म शोधन करने, बर्तन मांजने जैसे कामों में मजदूरी पर लगा देते हैं, ज़हाँ बच्चों का बचपन अपनी बदहाली पर रोया करता है। जिन बच्चों के हाथों में

Scanned by CamScanner

पेन, पेंसिल और पुस्तक होनी चाहिए, उनके हाथों की लकीरों में काली राख जमी होती है, उनकी जिंदगी का न तो कोई निश्चित उद्देश्य होता है, और न ही स्पष्ट अर्थ, सब कुछ अनिश्चित... ।

भारत से निरक्षरता उन्मूलन के लिए केन्द्र सरकार और राज्यों के सहयोग से सम्पूर्ण साक्षरता अभियान 1978 से सतत् प्रयासरत हैं । प्रशासन द्वारा दस पंचवर्षीय योजनाओं क़ो हरी झंडी मिल चुकी है और साथ ही संविधान में 93वें संशोधन विधेयक के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा को 6–14 वर्ष की आयु वाले प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया है, किन्तु इसके बावजूद आज भी लगभग 35% भारतीय निरक्षरता का बोझ झेल रहे हैं । क्यूबा, द० कोरिया जैसे छोटे देशों ने मात्र 5 वर्षों के भीतर एक सुनियोजित कार्यक्रम के तहत सर्वशिक्षा का संकल्प पूरा कर लिया है, जबकि भारत सरकार जी.डी.पी. का 6% शिक्षा पर खर्च करने के अपने वादे पर अमल भी नहीं कर पाई है । फलतः सरकारी स्कूलों में मुख्य रूप से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा–नियोजन पर्याप्त प्रभावी नहीं है । जबकि निजी स्कूलों की महंगी शिक्षा जनसाधारण की पहुँच से दूर है, फिर अहम सवाल तो रोजी–रोटी का है, क्योंकि निर्धन बालक के माता–पिता स्कूल भेजने की अपेक्षा कृषि–कर्म या अन्य कोई काम–धन्धा करवाना अधिक पसंद करेंगे । सरकार ने ऐसे–ऐसे बच्चों को उनके कार्य स्थल पर ही शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रबंध किया है । हालांकि इस नीति को और अधिक पुख्ता बनाने की जरुरत है ।

भारत में योजना आयोग के सदस्य डॉ० के० सुब्रह्मण्यम ने सन् 2010 तक सभी बच्चों को आठवीं कक्षा तक की शिक्षा सुलभ कराने का निर्णय किया है । राजस्थान की लोक जुंबिश संस्था ने इस मुद्दे पर देश के बच्चों की संवेदना को समझा है कि आखिर वे बीच में ही स्कूल क्यों छोड़ देते हैं । अब अनौपचारिक शिक्षा तंत्र को प्राथमिक शिक्षा के वैकल्पिक ढाँचे के रूप में स्वीकार कर लिया है । अतः इसे अधिक कार्य कुशल तथा लोगों की अभिरुचि के अनुरूप लोकप्रिय बनाये जाने की जरूरत है, ताकि निरक्षरता को जड़ से खत्म कर समाज की बगिया में मानवीय कुशलताओं के पुष्प पल्लवित किये जा सकें ।

– महीपाल सिंह
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

देश के नौजवान साथियों को संदेश

देश के नौजवान साथियों को मैं एक संदेश देना चाहूँगा कि आज हमारा देश, सदियाँ गुजर गयी । लेकिन विकसित नहीं हो पाया क्यों ? क्योंकि हमारे देश में जातिवाद, भाई-भतीजावाद ने जिस हिसाब से जड़ें फैला रखी हैं । उन सब को उखाड़ फेंकना है । क्योंकि महान लोगों की कोई जाति, कोई धर्म नहीं होता, ढोल के मैदान में ध्यान देना होगा । आज जिस हिसाब से हम लोगों ने क्रिकेट को इतना ऊँचा उठा दिया कि अन्य खेलों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं । इसी का परिणाम है कि ओलम्पिक खेलों में एक भी स्वर्ण पदक नहीं ले पाये और मात्र एक रजत पदक से सन्तोष करना पड़ा । दोस्तो ! हमें अपने आप से वादा करना होगा कि हम जो भी कार्य करेंगे, अपने देश के लिये करेंगे पैसे की खातिर, विदेश के लिये नहीं करेंगे । हमारा देश निश्चित ही सुपर पावर होगा आने वाले दिनों में क्योंकि आज यदि अमेरिका सुपर पावर है तो केवल भारत के उन 40% महान व्यक्तियों की बदौलत जो अमेरिका में निवास करते हैं । अन्त में, मैं निम्नलिखित पंक्तियों द्वारा अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा ।

"लाख तूफ़ा आयें, लाख गिरे बिजलियाँ ।
जिनके इरादों में है दम, छू लेते हैं बुलन्दियाँ"

– सन्तोष कुमार गौतम
बी.कॉम.

*

छात्र शक्ति

भारत माँ के सिंदूर हो,
छात्रो ! उसका श्रृंगार हो तुम ।
आज नहीं तो कल में आखिर,
देश के कर्णधार हो तुम ।।

पर्वत-पठार-मैदान में बहती,
वो अविचल जल धार हो तुम ।
भारत माँ के भाग्य-विधाता,
जन्मभूमि का प्यार हो तुम ।।

तुम पर ही ये देश खड़ा है,
इसके नव उद्गार हो तुम ।
दुश्मन ने जब-जब ललकारा,
उसके लाल अंगार हो तुम ।।

विविध भाँति के रंग-बिरंगे,
मातृ भूमि के हार हो तुम ।
धड़ से अलग शीष कर देने,
वाली खूनी तलवार हो तुम ।।

कुछ से कुछ कर देने वाले,
एक अजब चमत्कार हो तुम ।
दुश्मन जिससे थर्राता हो,
वो शाही ललकार हो तुम ।।

राष्ट्र भरोसा करता तुम पर,
शक्ति के भण्डार हो तुम ।
नये राष्ट्र के निर्माता हो,
भारत की नई पुकार हो तुम ।।

– ओमेन्द्र कुमार
बी.कॉम.

*

Scanned by CamScanner

अलीगढ़ नगर

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–: अलीगढ़ नगर तथा जनपद का इतिहास मध्य गंगा–यमुना दोआब के सांस्कृतिक तथा राजनैतिक इतिहास के उत्थान एवं पतन के साथ न केवल जुड़ा हुआ है बल्कि उसका प्रतिनिधित्व भी करता है।

सबसे प्राचीन नाम कोल की उत्पत्ति को कुशिक गोत्र के ऋषि कोल से जोड़ा जाता है। इस कुल के प्रवर्तक ऋग्वेद के समय के कुशिक थे और बाद में विश्वामित्र भी इसी कुल में पैदा हुये। तहसील इगलास के ग्राम बेसवां का नामकरण विश्वामित्र से हुआ माना जाता है। एक धारणा के अनुसार इस क्षेत्र में कोलासुर का राज्य होने के कारण इस नगर का नाम 'कोल' पड़ा। कोलासुर का वध कृष्ण के भाई बलराम ने किया और वध करने के बाद अपने हल को हरदुआगंज के समीप की झील में धोया था। सम्भवतः हलधुआ से हरदुआ का नामकरण हुआ है। कोलासुर वध कथानक से यह भी प्रतीत होता है कि इस जनपद का अधिकतर भाग महाभारत काल में सूरसेन राज्य में सम्मिलित था।

पुरातात्विक आधार पर हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि इस जनपद में सबसे अधिक प्राचीन बस्तियाँ अतरौली, तहसील में साँकरा, कोल तहसील में जलाली तथा खैर तहसील में ग्राम ओगर के निकट स्थित थी। इन स्थानों पर ताम्र–युगीन अवशेष के रूप में गेरुआ रंग के मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े मिले हैं जो यह संकेत देते हैं कि यह स्थान लगभग 4500 वर्ष पुराने भी हो सकते हैं। लगभग 1300–1200 ई०पू० इस क्षेत्र में एक ऐसी नई सभ्यता का उदय हुआ जो लाल–काले, केवल काले और लाल मिट्टी के उत्कृष्ट बर्तनों का प्रयोग करते थे। 1100 से 750 ई० पूर्व में लोग सिलेटी रंग के उत्कृष्ट मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते थे। इन बर्तनों पर काले रंग से चित्रकारी भी होती थी। इस सभ्यता के अवशेष अतरौली तहसील से धनसारी, कनोवी, सांकरा तथा तेवथू, कोल तहसील से हरदुआगंज, कोल, मोरथल, मडराक तथा जलाली, खैर तहसील से भरतपुर, बझेड़ा, सोफा तथा टप्पल, सिकन्दराराऊ तहसील से पोरा तथा विजयगढ़ आदि स्थानों पर मिली है।

लगभग 11वीं शताब्दी में कोल और खैर तहसील का भाग दिल्ली के चौहान वंश के अधीनस्थ डोर राजपूत सामन्तों के अधीन हो गया था। इसके भी प्रमाण मिलते हैं कि कोल के किले का निर्माण इसी समय

Scanned by CamScanner

हुआ था तथा ऊपरकोट पर इन्हीं लोगों ने एक मन्दिर का भी निर्माण कराया था । 12वीं शताब्दी तक गहड़वाल राजाओं का आधिपत्य स्थापित हो गया था । 1193 ई० में शहालुद्दीन गौरी के जनरल कुतुबुद्दीन ऐबक ने गहड़वालों को हराकर कोल को अपने अधीन कर लिया । खिलजी, तुगलक और लोदी वंश के राजाओं का भी प्रभुत्व यहाँ बना रहा । 1354 ई० में फिरोज तुगलक यहाँ आकर ठहरता था । बहलौल लोदी की मृत्यु के बाद 1489 ई० में उसके पुत्र का अतरौली के समीप काली नदी के किनारे राज्याभिषेक हुआ और वह सिकन्दर लोदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ । प्रसिद्ध गायक हरिदास का जन्म भी इसी जनपद के हरिदासपुर में हुआ था जिन्हें तानसेन ने बाद में अपना गुरु बनाया ।

1528 ई० में बाबर यहाँ आया था और लगभग एक सप्ताह कोल और अतरौली में रहा । पिलखना में बाबर ने एक मस्जिद और हुमायूँ ने एक कुआँ बनवाया मुहल्ला शाहजमाल में एक मस्जिद का निर्माण शेरशाह सूरी के काल में हुआ । 1560 ई० में कोल के आस–पास शिकार खेलने के लिए सम्राट अकबर का पर्दापण भी हुआ था । अकराबाद में उनका पड़ाव हुआ ।

1801 में जब अवध के नबाव सादत अली खाँ के हाथ से बहुत बड़ा क्षेत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ में पहुँच गया तो ब्रिटिश राज्य की सीमायें अलीगढ़ तक पहुँच गयी । घमासान युद्ध के बाद अंग्रेजों ने छावनी और किले पर 4 सितम्बर 1803 ई० को विजय प्राप्त कर ली । इस जनपद के रूप में अलीगढ़ की स्थाना सर्वप्रथम 1804 में हुई ।

भौगोलिक स्थिति–: अलीगढ़ आगरा मण्डल का एक जनपद है । यह 27°.29′ तथा 28°.11′ उत्तरी अक्षांशों तथा 77°29′ तथा 78°38′ पूर्वी देशान्तरों के बीच उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित है तथा गंगा–यमुना दोआब के मध्यवर्ती भाग में विस्तृत है । उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर यमुना नदी इस जनपद को हरियाणा राज्य से अलग करती है । मथुरा जनपद दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम में और एटा जनपद पूर्व और दक्षिण पूर्व में इसकी सीमाओं पर स्थित है । उत्तर की ओर बुलन्दशहर जनपद की सीमाओं से लगता है और उत्तर पूर्व में गंगा इस जनपद को बदायूँ जनपद से अलग करती है ।

अलीगढ़ जनपद एक समतल मैदानी भाग है । जिसकी समुद्र तल से अधिकाधिक ऊँचाई 190 मीटर तथा न्यूनतम 170 मीटर है । गंगा–यमुना नदियों के समीप की भूमि खादर कहलाती है तथा कुछ नीची है । शेष भाग ऊँचा और समतल है । यह मैदान

नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी से बना है। जहाँ ऊखर भूमि है, सतह के नीचे कंकड़ ½ से 2 मीटर की गहराई पर मिलता है। जनपद में कहीं-कहीं पर पीली मिट्टी के टीले भी देखने को मिलते हैं। जनपद का ढाल उत्तर से दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व को है। कंकड़ और रेह के अलावा जनपद में कोई खनिज प्राप्त नहीं होता है।

अलीगढ़ के उत्तरी-पूर्वी सीमांत पर गंगा और उत्तरी पश्चिमी सीमांत पर यमुना नदी बहती है। इनके अतिरिक्त करबन, सेंगुर, चोया, नीम और बूढ़ी गंगा जनपद के आंतरिक भाग में बहती है। गंगा-यमुना और काली सदावाहिनी नदियाँ है, शेष सभी वर्षा ऋतु के अलावा सूखी रहती है।

अलीगढ़ जनपद भारतीय उपमहाद्वीप के उप-उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी जलवायु के खण्ड में स्थित है। यहाँ तीन ऋतुएँ- जाड़ा, गर्मी और वर्षा होती हैं। जनवरी का महीना सबसे ठण्डा होता है। कभी-कभी पाला भी पड़ जाता है। जाड़ों में न्यूनतम तापमान 7.6° से०ग्रे० (जनवरी) तथा अधिकतम 29.2° से.ग्रे. (नवम्बर) रहता है। पछुवा चक्रवातों से जनवरी, फरवरी में वर्षा (15.17 मि.मी.) भी होती है। मार्च से जून तक गर्मी ऋतु होती है। जिसमें मई-जून सर्वाधिक गर्म होते हैं। इनमें गर्म "लू" और धूल भरी तेज आँधियां चलती हैं। गर्मियों में न्यूनतम 14.9° से.ग्रे. (मार्च) अधिकतम 41.2°से.ग्रे. (मई) तापमान रहता है। मौसम विल्कुल शुष्क रहता है। जुलाई से अक्टूवर तक वर्षा ऋतु होती है। अगस्त में सर्वाधिक वर्षा 226.5 मि.मी. होती है।

जनपद में प्राकृतिक वनस्पति नदियों के किनारे की भूमि खादर में, सड़कों नहरों आदि के किनारों पर तथा उजाड़ ऊखर क्षेत्रों में घास तथा वृक्ष दिखाई देते हैं। वृक्षों में शीशम, आम, जामुन, बरगद, गूलर, बबूल, सिरस, नीम, ढाक, पीपल, खजूर, बेरी आदि प्रमुख हैं। खादर भूमि पर बांस, मूंज, झाऊ काफी मात्रा में मिलते हैं।

इस जनपद की मिट्टी भी नदियों द्वारा लाई गई जलोड़ मिट्टी की श्रेणी में आती है। जैसे गंगा खादर की मिट्टी, पूर्वी उच्च भूमि की मिट्टी, मध्यवर्ती निम्न भाग की मिट्टी, पश्चिमी उच्च भाग की मिट्टी यमुना खादर की मिट्टी, यमुना खादर में पूर्वी भाग की मिट्टी।

सांस्कृतिक स्थिति-: अलीगढ़ जनपद ब्रज मण्डल के दक्षिणी छोर पर अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम 'कोल' भी है तो कोर (∠ कोण) का क्षेत्रीय उच्चारण है। अलीगढ़ नगर और उसके जनपदीय गाँवों के लोग अपने सहज रूप

Scanned by CamScanner

में व्रज बोली ही बोलते हैं । बोली और संस्कृति का चोली दामन का सा साथ रहता है इसलिये अलीगढ़ जनपद की संस्कृति मुख्य रूप से वृज संस्कृति है ।

यहाँ अनेक प्रतिष्ठित पूजा स्थान है । इनमें प्राचीन और नवीन दोनों प्रकार के मंदिर है । सबसे प्राचीन अचलेश्वर महादेव का मंदिर है जो अचल तालाब के तट पर स्थित है । तालाब के चारों ओर भी मंदिर हैं, जिनमें दक्षिणी तट पर बना हुआ हनुमान मंदिर, 'गिलहराज जी का मंदिर' नाम से प्रसिद्ध है । शिवरात्रि के अवसर पर, तो यहाँ मेला लगता है । नगर के लोगों में यह परम्परा है कि नव वधू को शिव का अभिषेक कराने के लिए उत्सव के रूप में लाते हैं । वधू के सिर पर जल से भरा घड़ा रहता है और नारी समुदाय गीत गाता हुआ साथ में चलता है । पुष्प अथवा चाँदी का भी छत्र लोग चढ़ाते हैं ।

खैर रोड़ पर नगर से लगभग 6 किमी. दूर पश्चिम में खेरेश्वर महादेव का मंदिर है, जो अपने शांत प्राकृतिक वातावरण से दर्शनार्थियों को आकर्षित करता है । बलदेव छट पर यहाँ मेला व अनेक सांस्कृतिक आयोजन होते हैं ।

अलीगढ़ जनपद में कॉवर चढ़ाने की विशेष परम्परा है । शिवरात्रि के अवसर पर गाँवों के लोग बड़ी संख्या में रामघाट पर स्नान करते हैं तथा गंगाजल भरकर लाते हैं और उससे हरदासपुर स्थित खेरेश्वर महादेव मंदिर में शिवजी का अभिषेक करते हैं । शिव और गंगा के जयकारे बोलते हुए वह लोग श्रद्धा का वातावरण बना देते हैं ।

अलीगढ़ जनपद में नव निर्मित मंदिरों में प्रमुख वार्ष्णेय मंदिर तथा तीर्थधाम मङ्गलायतन हैं । तीर्थधाम मङ्गलायतन का निर्माण अलीगढ़–आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर, दिल्ली पब्लिक स्कूल (सीनियर विङ्ग) के निकट, हनुमान चौकी के सामने लगभग 80 हजार वर्ग गज (लगभग 16 एकड़) के विशाल भूखण्ड पर हुआ है । यह उत्तर प्रदेश के दो जिलों अलीगढ़ व हाथरस (अब महामाया नगर) की सीमा पर स्थित है । यह जैन समाज का प्रमुख तीर्थधाम है ।

मुस्लिम संस्कृति के प्रतीक के रूप में ईदगाह, जामा मस्जिद, दरगाह शाह जमाल, मजार शेख दाऊद, कुतुब शाह का मकबरा तथा मजार बर्छी बहादुर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इसके अतिरिक्त अलीगढ़ नगर में कैथोलिक ईसाइयों का गिरजाघर और सिक्खों के गुरुद्वारे भी हैं जो कि इस देश की मिली–जुली तहजीब के द्योतक है ।

Scanned by CamScanner

यहाँ की कृषि एवं औद्योगिक प्रदर्शनी विशेष उल्लेखनीय है। इसका स्थायी परिसर बना हुआ है। इसमें बाजार के अतिरिक्त लाल ताल और कृष्णांजलि नाट्यशाला बना हुआ है। नाट्यशाला में प्राय: प्रतिदिन संगीत, नृत्य, कवि सम्मेलन, मुशायरा आदि सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं। वर्ष 2005 की औद्योगिक प्रदर्शनी का प्रमुख आकर्षण 80 किलो का ताला रहा जो कि अलीगढ़ के प्रमुख उद्योग को दर्शाता है।

औद्योगिक स्थिति–: अल्प या अर्द्ध विकसित होने के बावजूद अलीगढ़ मुख्यत: अपने ताला उद्योग के कारण लगभग 130 वर्षों से विश्व विख्यात रहा है और यह 'ताला नगरी' के नाम से विश्व के मानचित्र पर अंकित है। ताला के अतिरिक्त बिल्डिंग हार्डवेयर कलात्मक मूर्तियाँ, बिजली का सामान, चाकू, बलकस एवं हुक्स, काँच के मोती, बोतल, शीशियाँ हथकरघा, सूति कारपेट्स, इनेमिल बोर्ड्स, कैमिकल उत्पादक फूड प्रोडक्शन, पेपर, हौजरी उत्पाद, गारमेण्ट आदि अनेक वस्तुएँ इस नगर में निर्मित की जाती हैं।

जहाँ तक ताला उद्योग का प्रश्न है। अलीगढ़ केवल 'ताला नगरी' के नाम से विश्व विख्यात ही नहीं अपितु ऐसा लगता है कि मानो अलीगढ़ और ताला एक–दूसरे के पर्यायवाची शब्द हों। तभी तो किसी प्रसंग में 'अलीगढ़' शब्द निकलते ही 'ताला' शब्द ध्यान में आ जाता है। या ताला शब्द मुख से निकलते ही अलीगढ़ शब्द ध्यान में आ जाता है। ताला अलीगढ़ शहर की गली–गली में, गाँव–गाँव में बनाया जाता है। कहीं तालों की चद्दरें काटी जा रही हैं, कहीं पर तालों की ढलाई की जा रही है, कहीं पर तालों की रिताई की जा रही है, कहीं पर तालों की जड़ाई की जा रही है, कहीं पर तालों की चाबियाँ तैयार, तो कहीं पर पॉलिश की जा रही है, कहीं पर तालों की पैकिंग तो कहीं पर तालों को पैक करने के लिए डिब्बे–पेटियाँ बनाई जा रही हैं। अलीगढ़ नगर और जनपद में तालों की निराली दुनियां सचमुच दर्शनीय है।

आपको जानकर हर्ष होगा कि प्रारम्भ में ताले लकड़ी के बनाये जाते थे। लकड़ी के तालों की चाबियाँ 12–12 इंच लम्बी होती थीं। धीरे–धीरे ताला निर्माण कला का विकास हुआ और 18वीं शताब्दी के अंतिम चरण में बरमा निर्मित ताले अस्तित्व में आये 1821 और 1868 के मध्य के लाइन्स मेल जनियर द्वारा पिन सिलेण्डर

Scanned by CamScanner

तालों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। अलीगढ़ में आधुनिक तकनीक से ताला बनाने का कार्य 1887 में श्री हीरालाल झा द्वारा प्रारम्भ किया गया। 1926 में गवर्नमेंट मैटल वर्कशाप की स्थापना अलीगढ़ में की गयी जिसका उद्देश्य कारीगरों को ताला निर्माण कला का प्रशिक्षण देना था। अलीगढ़ में सर्वप्रथम डाई पंच तालों का निर्माण 1934 में शुरु हुआ।

अलीगढ़ की प्रमुख सामाजिक एवं शैक्षिक संस्थायें

1. **गाँधी नेत्र चिकित्सालय–:** डॉ० मोहन लाल ने 1 अप्रेल 1928 में सराय हकीम में 18 रुपये मासिक की दुकान किराये पर लेकर मोहन नेत्र चिकित्सालय की स्थापना की थी। रोगियों के बढ़ जाने के कारण चिकित्सालय के लिए स्थान छोटा पड़ने लगा। अतः वर्तमान भवन की भूमि प्राप्त की गयी और 22 नवम्बर 1937 को मुख्य भवन की आधार शिला सर हेनरी, गर्वनर संयुक्त प्रान्त आगरा अवध के कर कमलों से डाली गयी। चिकित्सालय अपने भवन में आ गया। जनवरी, 1943 को ट्रस्ट बनाकर चिकित्सालय ट्रस्ट को सौंप दिया। डॉ० मोहनलाल ने चिकित्सालय के साथ जुड़े अपने नाम का मोह भी छोड़कर चिकित्सालय का नाम अलीगढ़ नेत्र चिकित्सालय कर दिया। 1945 में चिकित्सालय व ट्रस्ट का नाम राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के बलिदान से अभिभूत होकर गाँधी नेत्र चिकित्सालय, ट्रस्ट कर दिया गया।

2. **अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय –:** अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीयों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार की आवश्यकताओं को देखते हुए सर सैय्यद अहमद खाँ ने 1875 में केवल 7 नन्हें बालकों के साथ मौहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल नामक एक मदरसे का शुभारम्भ किया था; जो दो वर्ष के भीतर पूरा स्कूल और उसके बाद कालिज बन गया यही कालिज 1920 में विश्वविद्यालय बना जो मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से आज पूरे विश्व में जाना जाता है।

इसी कारण अलीगढ़ नगर भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। आओ ईश्वर से प्रार्थना करें कि अलीगढ़ नगर विश्व के मानचित्र पर इसी प्रकार शोभायमान रहे। अपना प्रकाश चारों ओर बिखेरता रहे।

– ओमेन्द्र कुमार
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

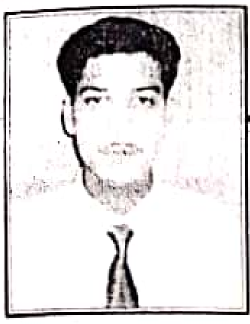

जीवन

'मे आय कम इन सर ।
यस, कम इन प्लीज ।
थैंक्यू सर ।'
टेक योर सीट'
थेंक्स, अगेन सर ।

इन्टरव्यू कक्ष की ओपचारिकता पूर्ण बातें । परिणाम निराशा । केवल निराशा । प्रार्थना–पत्र, इन्टरव्यू और फिर निराशा । यही हो गयी थी उसकी दिनचर्या ।

वह बेरोजगार होते हुए भी व्यस्तता पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था । नौकरी की तलाश फिर भी उस पर घर का बोझ । इस व्यस्तता पर वह अपने स्वर्गीय पिता का चेहरा भी भूल गया था । उसके सामने था एक छोटी सी नौकरी के रूप में अपना भविष्य वर्तमान रूप में हृदय रोग पीड़ित माँ जवान बहिन के भविष्य की कल्पनायें । अपने व्यक्तिगत रूप को पहचानने या उसके बारे में सोचने का कभी मौका नहीं मिला उसे । एक घिसी हुयी और कई बार रफू की गयी नीली जीन्स और घिसे कालर वाली काली शर्ट शोभा बढ़ा रहा थी । उसके व्यक्तित्व की चुगली कर रही थी उसकी आर्थिक स्थिति । डिग्रियाँ यूं तो भरी हुयी थीं अंकों से और प्रदर्शित कर रही थी उसकी योग्यता को कक्षा में उसकी श्रेष्ठता को परन्तु प्रदर्शन कार्य करते–करते वह भी बूढ़ा हो चला था उनकी जवानी का श्वेत उजला रंग भी परिवर्तित हो चला था बुढ़ापे के पीले रंग में ।

आज ही वह लौटा था । एक इण्टरव्यू देकर, निशारा से भरे उसके दिल व हृदय में "एक्सपीरिएन्स, रिकमन्डैन्स जैक और सॉरी जैसे शब्द तीखे काँटों की तरह चुभते महसूस हो रहे थे । पैदल चलते–चलते वह विचारों के अथाह सागर में डूबता चला गया । प्रशान्त महासागर की शायद कोई सीमा हो लेकिन विचारों के महासागर की कोई सीमा नहीं थी ।

रामू जब भी इण्टरव्यू देने गया था तो उसके साथ बातें करते हुए परीक्षार्थी यह शब्द तो अक्सर दोहराते थे ।

अरे भाई किसी भी नौकरी के लिए चाहे वह निम्नतम श्रेणी की हो 'जैक' बहुत जरुरी है । शुरु में तो वह 'जैक' शब्द का अर्थ ही नहीं समझा था परन्तु अब वह भ्रष्ट एवं कलंकित शब्द से अच्छी तरह परिचित हो गया था । क्योंकि वह सिद्धान्तवादी कर्मठ पिता का पुत्र था इसलिए उसे इस शब्द से दूर–दूर तक वास्ता नहीं था ।

'एक्सपीरिएन्स' कहाँ से करता वह इस सवाल का समाधान जब स्वीकार ही नहीं था व्यापार जगत के ठेकेदारों ने उसे । 'रिकमन्डैन्स' कौन करता उसे रिकमन्ड न तो उसका वास्ता था किसी मंत्री से और न ही वह भाई–भतीजा था किसी–

Scanned by CamScanner

किसी ऑफीसर का और न ही नेताओं से सम्बन्ध थे । इन्हीं शब्दों को सोचते और समझते हुए वह सड़क पर चला जा रहा था कि एक कार उसे लगभग स्पर्श करती हुयी उसके पास से गुजर गयी थी और अब उसका स्वाभिमानी हृदय इन तुच्छ बातों को सोचने के लिए मजबूर हो गया था "काश यह कार मुझसे टकरा गई होती, किसी अंग को खराब कर गयी होती तो आज मुझे विकलांगों की श्रेणी में आरक्षण तो मिल गया होता । इन विचारों के जाल में फंसे न जाने कब घर पहुँच गया था उसे मालूम नहीं पड़ा । दरवाजा खटखटाया तो बहिन ने मुस्कराहट और इस आशा के साथ दरवाजा खोला कि शायद आज भईया को नौकरी मिल गयी होगी । दरवाजा खोलते ही भैया का मुरझाया चेहरा देखकर वह सब कुछ समझ चुकी थी । उसकी मुस्कराहट गायब हो चुकी थी । वह घर में दाखिल हुआ कि उसकी माँ की बूढ़ी कपकपाती आवाज उसके कानों में टकरायी जो उसे बुला रही थी । उसने सोचा कि आज फिर माँ को बहलाव पूर्ण जवाब देना होगा । परन्तु उसकी माँ उसके चेहरे से ही उसकी अन्तर्मन की बातें समझ गयी उसके बिना कुछ पूँछें, उसकी माँ ने कहा–

बेटा ! तेरे मामा का पत्र आया है, उन्होंने तेरी नौकरी की बात की है तथा तेरी बहिन के लिए लड़का भी देख लिया है तू कल ही वहाँ चला जा ।

अगले दिन वह ट्रेन में बैठा अपने गन्तव्य की ओर बढ़ रहा था । खिड़की से झांककर देखा तो पेड़–पौधे तालाब आदि सब पीछे छूटते रहे थे मानो उसका दु:ख व गरीबी सब पीछे छूटती जा रही है और प्राप्त होने वाला सुख और समृद्धि उसका इन्तजार कर रही हो ।

आज वह फिर सोच रहा था कि तब मेरी पहली तनख्वाह मिलेगी में बहिन के लिए अच्छी सी साड़ी खरीदूँगा और माँ को किसी अच्छे डॉ० को दिखाऊँगा । अब माँ को किसी खैराती अस्पताल में जाने की जरुरत नहीं पड़ेगी । इसी उधेड़ बुन के साथ वह मामा के घर पहुँच गया । मामा ने दूसरे दिन साक्षात्कार के लिए एक ऑफिस में भेज दिया ।

आज उसमें पुन: नई उमंग का समावेश था । साक्षात्कार कक्ष में पहुँचकर उसने अपने प्रमाण–पत्र दिखाये और अनुभव किया कि उसके प्रमाण पत्र चयन कर्ता ने कुछ देर प्रभाव छोड़ रहे है । परन्तु अचानक कक्ष में रखे फोन की घंटी घनघना उठी । एक चयन कर्ता ने कुछ देर तक फोन पर बात की तथा वह बोला–

आज फिर सॉरी शब्द के प्रहार ने उसके सपनों के शीश महल का विध्वंश कर दिया । उसकी उम्मीद की दीवार ढह चुकी थी । उसका दिल टूट चुका था । अपने क्षुब्ध हृदय को शान्ति देने के लिए वह सोचने लगा कि यदि सभी को नौकरी

Scanned by CamScanner

मिल जाये तो रिक्शा कौन चलायेगा ? स्टेशन पर कुली कौन होगा ? ड्रग्स की सप्लाई कौन करेगा ? मामा ने उसे सान्त्वना दी और कहा 'कोई बात नहीं तुम जाकर लड़के वालों से मिल लो ।

वह अनमना सा लड़के वालों के घर पहुँचा जहाँ पर लड़के के पिता के ये शब्द, ऐसा है कि बेटे और तो सब बातें ठीक हैं लेकिन श्याम का ऑफिस जरा दूर है । इसलिए उसके लिए मोटर साईकिल और हमारे लिए तुमने रंगीन टी.वी. व फ्रिज तो खरीद ही लिया होगा । ये शब्द तीर की तरह उसके हृदय में चुभते चले गये उसे अब अपने साथ–साथ अपनी बहिन का भी भविष्य अन्धकार मय दिखाई देने लगा । घर आकर उसने सारी बातें माँ को बतायी । उस समय छिपकर बहिन भी सारी बातें सुन रही थी ।

अगले दिन जब वह चाय की दुकान पर अखबार पढ़ने गया तभी एक साथी भागते हुये आया और उसने बताया उसकी बहिन ने आत्महत्या कर ली तथा इसी सदमे में माँ भी चल बसी । उसका भविष्य व जीने की चाह तो अन्धकारमय हो चुकी । अब जीने का मकसद नजर नहीं आ रहा था ।

जिस बहिन को नई साड़ी देने की बात उसने सोची थी । आज उसके कफन के इन्तजाम में लगा हुआ था और तैयारी कर रहा था अपने कन्धों पर अपनी बहिन की डोली उठाने की जगह अर्थी उठाने की । आज वह अग्नि दे रहा था अपनी माँ को उसके स्नेह और ममता को । इतना सब खो देने के बाद मिल रही थी सहानुभूतियाँ झूठी सहानुभूतियाँ झूठे आश्वासन लोगों द्वारा ।

अग्नि देते समय तीखी व कड़वाहट पूर्ण हंसी के साथ वह सोच रहा था कि क्या दिया ? इस संसार ने, इस समाज ने । सिर्फ जख्म वह भी आत्मा पर । चाहे वह मेरी आत्मा रही हो या माँ की या बहिन की । आज यह समाज उसे बहुत मतलबी दिख रहा था और उसका हृदय यही चिंघाड़ रहा था । क्यों न काटकर फैंक दूँ ? इन काटो से भरे और बाधाओं से भरे इस शरीर को :–

परन्तु क्या वह अकेला सक्षम हो सकेगा ?
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो ।
कुछ किये बिना, साकार न जय होती है ।
जो कोशिश करते हार नहीं होती है ।

– सतेन्द्र कुमार
बी०एड०

*

बेकारी

मित्र न रोओ बेकारी को,
रोओ खूब जमाने को।
फैशन का जोर जगत में,
अन्न नहीं है खाने को।।

लड़का कहता पेन्ट बनाओ,
ले दो कोट पहनने को।
बैल्ट, कैप मुझको मंगवा दो,
डैडी कालेज जाने को।।

अन्न नहीं है घर के अन्दर,
भोजन आज पकाने को।
तुम कहते हो ये ला दो,
दाम नहीं कुछ लाने को।।

कहा पुत्र ने भाग जाऊँगा,
फिर मत कहना आने को।
दया नहीं आयी माता-पिता पर,
फैशन के दीवाने को।।

घर से निकला फैशन वाला,
कहीं नौकरी पाने को।
मिली नौकरी एक होटल में,
मिलता बस खाने को।।

सोचा घर की रोटी अच्छी,
भूल गया इतराने को।
छूट गया सब चाय, केक,
बिस्कुट पर क्रीम लगाने को।।

सदा रहो सादेपन में,
प्रिय बन्धु इसी में रहा करो।
फैशन के चक्कर को छोड़,
उच्च भाव में रहा करो।।

– सतेन्द्र कुमार

*

शिक्षा

शिक्षा ही व्यक्ति की पहचान कराती है।

शिक्षा अमूल्य धरोहर है।

शिक्षा ही ऐसी चीज है।

जो बाँटने से घटती नहीं बढ़ती है।

शिक्षा ही संयम है।

शिक्षा ज्ञान का भण्डार है।

शिक्षा पाना हर व्यक्ति का पहला अधिकार है।

शिक्षा ही हमें अपने कर्तव्यों को बताती है।

शिक्षा ही हमें उचित मार्ग दर्शाती है।

शिक्षा ही जीवन संवारती है।

शिक्षा के कारण ही व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

शिक्षा ही अपनी संस्कृति की रक्षा कराती है।

शिक्षा ही अनुशासन में रहना सिखाती है।

शिक्षा ही हमें ज्ञान प्रदान करती है।

शिक्षा ही हमें बड़ों तथा गुरु का सम्मान करना सिखाती है।

शिक्षा पाना हर व्यक्ति का अधिकार है।

– प्रीति कौशिक

*

Scanned by CamScanner

विभिन्न कार्यक्रमों में वक्तागण

प्रो. आलोक मित्तल, डीन, नेताजी सुभाष चन्द
इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी, नई दिल्ली द्वारा सम्बोधन

चौ. बृजेन्द्र सिंह, संसद सदस्य अलीगढ़ द्वारा सम्बोधन

श्रीमती प्रतिभा सिंह, अध्यक्ष,
जिला कांग्रेस कमेटी, अलीगढ़ द्वारा सम्बोधन

श्री चन्द्र शेखर शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार एवं
समाजसेवी, मथुरा द्वारा सम्बोधन

ब्रह्मचारी दिनेश मित्तल, निदेशक, महर्षि महेश योगी संस्थान,
हॉलैण्ड, द्वारा सम्बोधन

श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान, भूतपूर्व विधायक/स्पीकर
उ. प्र. विधानसभा, द्वारा सम्बोधन

Scanned by CamScanner

सदी व शताब्दी

पहली तो यह बात ही झूठ है, कि भारत का जवान राह खो बैठा है, भारत का जवान राह नहीं खो बैठा है, भारत की बूढ़ी पीढ़ी की राह अचानक आकर व्यर्थ हो गयी है और आगे कोई राह नहीं है। एक रास्ते पर हम जाते हैं, और फिर रास्ता खत्म हो जाता है, खड्डा आ जाता है। आज तक जिसे हमने रास्ता समझा था वह अचानक समाप्त हो गया है और आगे कोई रास्ता नहीं है। और रास्ता न हो तो खोने के सिवाय मार्ग क्या रह जायेगा ? भारत का जवान नहीं खो गया है, भारत न अब तक तो रास्ता निर्मित किया था, इस सदी में आकर हमें पता चला है कि वह रास्ता है नहीं। इसलिये हम बेराह खड़े हो गये हैं। रास्ता तो तब खोया जाता है जब रास्ता हो और कोई रास्ते से भटक जाय। जब रास्ता ही न बचा हो तो किसी को भटकने के लिये जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। जवान को रास्ते पर नहीं लाना है, रास्ता बनाना है। रास्ता नहीं है आज। और रास्ता बन जाये तो जवान सदा रास्ते पर आने को तैयार है, हमेशा तैयार है। क्योंकि जीना है उसे, रास्ते में भटक कर जी थोड़े सकेगा। बूढ़े रास्ते में भटके हैं। भटक सकते हैं क्योंकि उन्हें जीना नहीं है और सब रास्ते भटके हुये रास्ते भी कब्र तक पहुँचा देते हैं।

लेकिन जिसे जीना है, वह भटक नहीं सकता। भटकना मजबूरी है उसकी। जीना है तो रास्ते पर होना पड़ेगा, क्योंकि भटके हुये रास्ते जिन्दगी की मंजिल तक नहीं ले जा सकते हैं। जिन्दगी की मंजिल तक पहुँचने के लिये ठीक रास्ता चाहिये, लेकिन रास्ता नहीं है। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि युवक नहीं भटक गया है, हमने जो रास्ता बनाया था वह रास्ता ही विलीन हो गया, वह रास्ता ही नहीं है अब। आगे कोई रास्ता ही नहीं है। और हम अगर युवक वर्ग को ही गाली दिये चले जायेंगे कि तुम भटक गये हो, तो वह हमसे क्रुद्ध हो सकता है क्योंकि उसे कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा है और आप कहते हैं कि भटक गये हो। हमने कुछ रास्ता बनाया था, जो बीसवीं सदी में आकर व्यर्थ हो गया है, हमने एक रास्ता बनाया था वह रास्ता ऐसा था कि उसका व्यर्थ हो जाना अनिवार्य था।

Scanned by CamScanner

पहली तो यह बात है कि हमने पृथ्वी पर चलने लायक रास्ता कभी नहीं बनाया। हमने रास्ता बनाया था, जैसे बेवीलोन में टावर बनाया था। कुछ लोगों ने स्वर्ग जाने के लिये। वह जमीन पर नहीं जाता था, वह ऊपर आकाश की तरफ जा रहा था। स्वर्ग पहुँचने के लिये कुछ लोगों ने एक टावर बनाया था। हिन्दुस्तान ने पाँच हजार सालों में जमीन पर चलने लायक रास्ता नहीं बनाया, स्वर्ग पर पहुँचने के रास्ते खोजे हैं। स्वर्ग पर पहुँचने के रास्ते खोजने में हम पृथ्वी पर रास्ते बनाने भूल गये हैं। हमारी आँखें आकाश की तरफ अटक गयी है। और हमारे पैर तो मजबूरी में पृथ्वी पर ही चलेगें। बीसवीं सदी में आकर हमको अचानक पता चला है हमारी आँखों और पैरों में विरोध हो गया है। आँखें आकाश से वापस जमीन की तरफ लौटी है तो हम देखते हैं, नीचे कोई रास्ता नहीं है। नीचे हमने कभी देखा ही नहीं था।

भारत कोई तीन हजार साल से गढ्ढे में पड़ा है आकाश की तरफ आँखें उठाने के कारण। नहीं, मैं यह नहीं कहता हूँ कि किन्हीं क्षणों में आकाश की तरफ न देखा जाये, लेकिन आकाश की तरफ देखने में समर्थ वही है जो जमीन पर रास्ता बना लें और विश्राम कर सकें। वह आकाश की तरफ देख सकता है। लेकिन हम जमीन को भूल कर अगर आकाश की तरफ देखेंगे तो गहरी खाई में गिरने के सिवाय कोई मार्ग नहीं है। लेकिन पूछा जा सकता है कि भारत के जवान ने इसके पहले यह भटकन क्यों न ली ? बीसवीं सदी में आकर क्या बात हो गयी ? रास्ता मैं कह रहा हूँ, तीन हजार साल से हमारी पूरी संस्कृति ने जमीन पर रास्ता ही नहीं बनाया। अगर हम पुराने शास्त्र पढ़ें तो उनमें हमें मिल जायेंगी किताबें, जिनका नाम है, 'मोक्षमार्ग' मोक्ष की तरफ जाने वाला रास्ता। लेकिन पृथ्वी पर चलने वाले रास्ते के सम्बन्ध में एक किताब भारतीय संस्कृति में नहीं हैं। स्वर्ग जाने का रास्ता भी है, नर्क जाने का रास्ता भी है, लेकिन पृथ्वी पर चलने के रास्ते के सम्बन्ध में कोई बात नहीं है।

पूछा जा सकता है, आज ही क्यों यह सवाल उठा ? इसके पहले जवान ने इंकार क्यों न किया ? उसका कारण था। हमने एक और तरकीब की थी। हमने एक तरकीब की थी कि हम जवान को जवान होने ही न देते थे। बच्चों की शादियाँ कर देते थे और जब बच्चों की शादियाँ हो जाती थीं, वे जिम्मेदार हो जाते थे। सत्रह–अठारह साल का होते–होते लड़का बाप बन जाता था। बाप जवान नहीं हो

Scanned by CamScanner

सकता, बाप बूढ़ा होना शुरु हो जाता है। और जब कोई व्यक्ति बाप बन जाता है तो बूढ़ों की तरफ सोचने लगता है। हिन्दुस्तान में जवान भी नयी घटना है, नया फिनामिना है। हिन्दुस्तान में जवान पहले कभी नहीं था। बच्चे थे और बूढ़े थे। और दोनों के बीच हमने ऐसा ताल–मेल बिठाया कि बीच की सीढ़ी को बिल्कुल गोल कर दिया था। उसका पता ही नहीं चलता था कि कहाँ है। आठ और नौ साल के बच्चे की शादी कर देंगे तो जवान कैसे पैदा होगा ?

जवान भी बीसवीं सदी की घटना है। क्योंकि अब शादी होती है पच्चीस और छब्बीस वर्ष में। बचपन चला जाता है बारह, तेरह, चौदह साल में। फिर चौदह साल के बाद दस साल का वक्त बचता है जब आदमी बच्चा भी नहीं होता और बूढ़ा भी नहीं होता। यह इस साल का वक्त है जब वह युवा होता है यह पीढ़ी पहली बार पैदा हुई है। यंगर जनरेशन नई घटना है। यह कभी थी ही नहीं दुनिया में और इसलिए उसके साथ नये सवाल आ गये हैं। उस नयी पीढ़ी ने संदेह करना शुरु किया है उस नयी पीढ़ी ने कहा कि हमें पृथ्वी पर रहना है। ये स्वर्ग की बातें बन्द करो, हमें जमीन पर रहने का रास्ता बताओ। और जमीन पर रहने का हमारे पास कोई रास्ता नहीं है, इसलिये वह भटक गयी है। और अगर भारत की नयी पीढ़ी पश्चिम का अनुकरण कर रही है तो मजबूरी है, क्योंकि हमारे बाप दादों ने उसके लिये कोई रास्ता नहीं बनाया। उसे मजबूरी में दूसरों की तरफ देखना पड़ रहा है। वह मजबूरी है। उसके लिये जवान को दोषी मत ठहराना और अगर हमने देर की तो शायद हो सकता है कि हम सदा के लिये हमीटेटिव हो जायें, सदा के लिये नकल करने लगें।

हमें जल्दी करनी चाहिये और जमीन के रास्ते अपने बना लेने चाहिये ताकि हम अपने पैर पर खड़े हो सकें। आज हमें हर चीज के लिये पश्चिम की तरफ देखना पड़ रहा है। हर चीज के लिये हमें उनकी तरफ आँख उठानी पड़ती है और उसका कारण है, उसका कारण यह है कि हमारे पास कुछ भी नहीं है। सच यह है कि हमारे माँ–बाप हमारे लिये वसीयत में सिवाय अध्यात्म के और कुछ भी नहीं छोड़ गये हैं। अकेले अध्यात्म में जीया नहीं जा सकता। हाँ मरना हो तो मरा जा सकता है। अकेले अध्यात्म से जीना नहीं निकलता है। और अध्यात्म रहे, अध्यात्म की उत्सुकता जवान की नहीं होती है, आमतौर से बूढ़े की होती है। क्योंकि जैसे आदमी मरने के करीब पहुँचता है, विचार करने लगता है, मरने के बाद क्या ? जवान पूछता है जिन्दगी में क्या है ? बूढ़ा पूछता है,

Scanned by CamScanner

मरने के बाद क्या है ? उनके सवाल अलग, उनके जवाब अलग होंगे। हमारे सारे शास्त्र बूढ़ों के लिये लिखे गये हैं। जिन्दा आदमी जिसे जीना है उसके लिये हमने कौन–सा शास्त्र निर्मित किया है ? इसलिये हम विज्ञान पैदा नहीं कर पाये। विज्ञान जवान का शास्त्र है, धर्म बूढ़े का शास्त्र है।

तो हमारा जवान मुश्किल में है, बहुत कठिनाई में है। और मेरी अपनी मान्यता है कि करुणा के योग्य है, क्रोध के योग्य नहीं। बहुत दया के योग्य है क्योंकि उसको कोई वसीयत नहीं छोड़ गया है। एक अर्थ में हमारा युवक अनाथ है। अनाथ इस अर्थों में कि उसकी जमीन की कोई वसीयत उसके पास नहीं है। उसकी पुरानी पीढ़ियाँ उसके लिये जीने योग्य, जिन्दगी से रस निकालने योग्य, कोई भी तकनीक, कोई साइंस नहीं छोड़ गयी हैं। हाँ, उसने एक तरकीब बता दी कि अगर तुम्हें मरना हो तो मोक्ष जाने का रास्ता है। अभी वह मरना नहीं चाहता है, वह जीना चाहता है– उसके लिये व्यर्थ है। इसलिये मन्दिरों में, मस्जिदों में जवान दिखायी नहीं पड़ता। हाँ लड़कियों बगैरह के ख्याल से कोई जवान पहुँच गया हो तो बात अलग है। लेकिन मन्दिर और मस्जिदों के लिये जवान नहीं आता, वहाँ बूढ़े इकट्ठे हो रहे हैं।

तो हम कठिनाई में पड़ गये हैं। रास्ता नहीं है, रास्ता बनाना पड़ेगा। कौन बनायेगा यह रास्ता ? बड़ी जटिलता का सवाल है क्योंकि बूढ़े विरोध में हैं, वृद्ध पीढ़ी विरोध में है और जवान पीढ़ी अनुभवहीन है। रास्ता कौन बनायेगा ? रास्ता बनाने के लिये दो चीजों की जरुरत है– अनुभव बूढ़े के पास है, उन दोनों के पास कोई तालमेल नहीं है। रास्ता बनेगा कैसे ? रास्ता बनाने के लिये हिन्दुस्तान की बूढ़ी पीढ़ी को जवान के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होना पड़ेगा। अपने अनुभव से उसे सचेत करना पड़ेगा, लेकिन बूढ़ी पीढ़ी निन्दा से संलग्न है। वह सिर्फ निन्दा कर रही है, वह सिर्फ गालियाँ दे रही है कि सब बिगड़ गये हैं। लेकिन यह कहने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। इससे अगर कोई बिगड़ भी गया तो सुधरने का मार्ग नहीं मिलता, अगर कोई न भी बिगड़ा हो तो बार–बार कहने से कि बिगड़ गया है, उसके चित्त में बिगड़ने की दिशा पैदा होती है।

नहीं, वृद्ध पीढ़ी का बहुत ही कीमती समय है कि वह अपने सारे अनुभव पर ध्यान देकर भारत के लिये नया रास्ता बनाने में युवक की शक्ति का नियोजन कर सके। लेकिन यह तभी हो सकता है जब वृद्ध पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी की तरफ निन्दा से

Scanned by CamScanner

न देखें, करुणा और प्रेम से देखें। लेकिन वृद्ध नाराज हैं। नाराज वह इसलिये हैं, कि उसकी पुरानी सारी दुनियाँ अस्त–व्यस्त हो गयी है। नाराजगी का कारण दूसरा है। नाराजगी का कारण युवक नहीं है। नाराजगी का कारण, उसका अब तक बनाया हुआ सारा ढाँचा गिर गया है। जैसे मैं एक मकान बनाऊँ और पूरा मकान गिर जाये और मैं अपने बेटे की पिटाई शुरु कर दूँ। मेरा क्रोध तो उस मकान के लिए जाने के लिये है।

पुरानी पीढ़ी का पूरा मकान गिर रहा है, **गिर गया है, नाराजगी बेटे पर है ऐसा** लग रहा है कि बेटे मकान को गिराये दे रहे हैं। मकान, जैसा हमने बनाया था, वह गिरने ही वाला था। हाँ, बेटों ने अब तक उसे सहारा दिया था। क्योंकि बेटों को हम बहुत जल्दी बूढ़ा बना देते हैं, अब वो उसको बचाने में सहायता नहीं दे रहे हैं। गिरा नहीं रहे सिर्फ बचाने में सहायता नहीं दे रहे हैं। और बूढ़े हाथ कैसे किसी मकान को बचा सकते हैं ? वह गिर रहा है। वे बेटों पर नाराज हैं। उस नाराजगी को छोड़ना पड़ेगा। और मेरी दृष्टि में अगर पिछली पीढ़ी नाराजगी छोड़ दें तो नयी पीढ़ी का आदर नहीं है पुरानी पीढ़ी के प्रति, क्योंकि पुरानी पीढ़ी सिवाय निन्दा के और कुछ भी नहीं कर रही है।

पिताओं को पता नहीं उनकी निन्दा उनके बच्चों में उनके प्रति घृणा पैदा करती है, सम्मान नहीं। फिर जब घृणा पैदा करती है और आदर नहीं मिलता है तो वे कहते हैं, बेटे आदर नहीं दे रहे हैं। नयी पीढ़ी अनादर से भरी है। गलत है यह बात। मेरे अनुभव में ऐसा नहीं आया। सच तो यह है कि नयी पीढ़ी बहुत आदर देना चाहती है, लेकिन आदर योग्य लोग खोजने मुश्किल हैं। नयी पीढ़ी आदर देने को आतुर है, लेकिन न गुरु आदर योग्य मालूम पड़ता, न माँ आदर योग्य मालूम पड़ती है। क्यों ? क्योंकि पिता, माँ और गुरु इस तरह के झूठ बोल रहे हैं जिनको बच्चे बहुत जल्दी आविष्कृत कर लेते हैं।

नहीं, इस तरह नहीं चलेगा। इस तरह नहीं चल सकता है। नया युवक भटक नहीं गया है, पुरानी पीढ़ी मार्ग देने में असमर्थ है। अगर हम यह असमर्थता स्वीकार कर लें तो मार्ग बन सकता है, कोई कठिनाई नहीं है। इतना स्वस्थ, इतना विचारशील, इतना बुद्धिमान युवक कब था पृथ्वी पर ? पर पहला मौका है, जो सौभाग्य बनना चाहिये वह दुर्भाग्य बन रहा है। इतना विचारशील युवक कब था पृथ्वी पर ? कभी भी नहीं था। जो सौभाग्य बन सकती है घटना, वह दुर्भाग्य में बदलती जा रही है।

Scanned by CamScanner

बुद्धिमत्ता खतरनाक है एक अर्थों में, कि उसे अगर ठीक मार्ग न मिले तो विध्वंसात्मक हो जाती है। घर में दो बेटे हों, एक बेटा अगर गोबर–गणेश है तो आज्ञाकारी होगा, सदा आज्ञाकारी होगा क्योंकि आज्ञा तोड़ने के लिये थोड़ी बुद्धि की जरुरत पड़ती है। हाँ कहने के लिये किस बुद्धिमत्ता की जरुरत है ? न कहने के लिये बुद्धिमत्ता की जरुरत है, क्योंकि न कहने के लिये कारण भी बताने पड़ेंगे, तर्क भी देना पड़ेगा। न कहने के लिए खड़ा भी होना पड़ेगा, पिता से टक्कर भी लेनी पड़ेगी। तो गोबर–गणेश बेटा होगा तो चुपचाप राजी हो जाता है कि हाँ। पिता खुश होते हैं। बहुत प्रसन्नता की बात है, लड़का बड़ा आज्ञाकारी है। लेकिन उन्हें पता नहीं कि लड़का बिल्कुल मरा हुआ है, लड़का जिन्दा नहीं है।

नयी पीढ़ी भटक नहीं रही है, नयी पीढ़ी सिर्फ अतिरक्त ऊर्जा से भरी हुई सामने खड़ी है और हम कोई मार्ग नहीं खोज पा रहे हैं। जैसे कोई झरने की ताकत हो, पानी फूट पड़ने को हो और कोई मार्ग न मिलता हो, पानी सब तरफ से बिखर जाता हो, व्यर्थ हो जाता है। युवकों के पास बड़ी शक्ति है, होनी ही चाहिए, यह बड़ी शक्ति बिल्कुल अनियोजित भटक रही है। उसे कोई नियोजन नहीं है, कोई दिशा नहीं है। दिशा–हारा युवक खड़ा है। लेकिन जिम्मेवार युवक नहीं है। और ध्यान रहे, यह मैं किसी खास पीढ़ी से नहीं कह रहा हूँ। आज जो युवक है, कल वे पिता हो जायेंगे और वे भी इसी जिम्मेदार ठहराने लगेंगे। वही गलती फिर शुरु हो जायेगी।

नहीं, पुरानी पीढ़ी को बहुत शान्ति से विचार करना चाहिये। क्रोध छोड़कर बच्चों के निकट आना पड़ेगा और जिन्दगी कैसे बने, उसकी दिशायें सोचनी पड़ेंगी और साथ खड़े होना पड़ेगा। आज्ञा देने वालों की तरह नहीं, सह–यात्री की तरह, एल्डर ब्रदर्स की तरह। पिता भी बड़े भाई से ज्यादा नहीं हैं। इसी भाँति उसे खड़ा होना पड़ेगा। पुरानी पीढ़ी और पुराने आदर–सम्मान का केन्द्र अब नहीं चल सकता है। वह बात गयी। उस बात को भूल जाना चाहिए। वह इतिहास का अध्याय समाप्त हो गया है।

– डॉ० योगेश कुमार गुप्ता
प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय

*

Scanned by CamScanner

प्रबंधिका

कहानी

नारी निकेतन एक अनाथालय आश्रम । मैडम रजनी, एक ऐसी प्रौढ़ महिला है जो इस पूरे आश्रम की देखभाल रखरखाव एवं प्रबंधन करती है । चेहरे पर शांति, सौम्यता एवं गम्भीरता कुंडली मारे रहती है ।

शाम का समय है । प्रबंधिका अपने कार्यालय में बैठी आज कुछ ज्यादा ही गम्भीरता लिये हुए है । ऊपर रोशनदान से सूर्य की किरणें उनके चेहरे को छूती हुई सामने दीवार पर पड़ रही है । वृद्धा पीछे कुर्सी पर टेक लगाये सोच रही हैं । "काश ! मेरी जिंदगी से भी कभी ऐसी स्वर्णिम किरणों का गुजरना हुआ होता ।"

वृद्धा को अचानक आज अपना बचपना गाँव व उनकी अपनी माँ का वो ममतामयी चेहरा याद हो आया था । वजह अभी चंद मिनट पहले उनके ऑफिस में एक 10 वर्षीय बच्ची हाथ में खाली कटोरा लिए शिकायत के लहजे में कह रही थी । "माँ ! रजनी माँ.... आज तो आश्रम में कुछ भी खाने को नहीं है ।" जी हाँ, ऐसा ही कुछ हाल था भारत के एक अनाथालय का । बच्ची बड़ी प्यारी थी । ठीक उसी तरह जिस तरह कि स्वयं कभी रजनी अपनी माँ के सामने नई–नई फरियादें रखा करती थी ।

सहसा उनके मानस पटल पर उनके बीते जीवन के धुँधले से चित्र बन बिगड़ रहे थे । और वो उन तस्वीरों में डूबी हुई थी । उन्हें आत्मसात कर रहीं थीं । आँखों में मोती झिलमिला रहे थे ।

उसकी माँ कर घर...... एक उजड़ा घर था । उसकी माँ दुबली–पतली समय से पहले ही मानो वूढ़ी हो चली थी । वह एक पगली सी भावविहीन चेहरे वाली वृद्धा थी । नाम था उसका रमझनियाँ और गाँव. .... गाँव था वनखेड़ा । यहीं गाँव से बाहर उसकी एक कुटिया थी । वह यहाँ अपनी 13 साल की बिटियाँ रजनी के साथ एकांकी, निरुद्देष्य एवं शांत जीवन जीती थी । वह दुख की प्रतिमूर्ति जान पड़ती थी । उन दोनों माँ–बेटी की जिंदगी उदास शाम थी या फिर घोर अंधेरी रात ।

उनका परिवार भी कभी एक भरा पूरा परिवार हुआ करता था । मेहनती पति, बेटे, बहू एवं लड़कियाँ । किन्तु तभी रमझनियाँ की जिंदगी में एक तूफान आया जो उसकी महकती बगिया को ऊसर बना के रख गया ।

किसी शादी समारोह में भाग लेने के लिए उसके परिवार को एक नदी पार करके जाना था । नदी पार करने का

माध्यम नाव थी । ज्यों ही नाव बीच नदी में पहुँची थी, एक तेज हवा का झौंका सब कुछ तहस नहस करके चला गया था । कोई नहीं बचा थी नाव में... । वह और उसकी सबसे छोटी लाडली रजनी ही घर पर रह गये थे । दोनों बहुत-बहुत रोये थे किन्तु सब बेकार । अब उनका दुनिया में सहारा देने वाला कोई नहीं था । उनके पास थोड़ी सी जमीन थी वो भी गाँव के दबंग, गुण्डा, बदमाश प्रधान ने हड़प ली थी वे गाँव वालों एवं पुलिस के सामने गिड़गिड़ाई थी । किसी ने एक नहीं सुनी थी । सब प्रधान के दब्बू थे । अब दोनों माँ-बेटी के पास गुजर-बसर का कोई माध्यम नहीं था । दोनों बड़ी लाचार व मजबूर थी गरीब व दुखी । बेचारी भीख माँगने पर मजबूर थी । दोनों गाँव-गाँव गली-गली घूमती और मांगती फिरती थी । पर ये समाज भी तो विचित्र था । उसे भीख कोई आसानी से नहीं देता था । अत: दोनों ने एक रास्ता ढूँढ लिया था । माँ ढोलक बजाती थी और नन्ही मुन्नी जिसे स्कूल जाना चाहिए था, गाती व नाचती, लोगों का मनोरंजन करती । तब जाके उन्हें कुछ पैसे मिलते व शाम का भोजन हो पाता था । बड़ी अभावपूर्ण जीवनचर्या थी । सोचते-सोचते ऑफिस में बैठी प्रबन्धिका की आँखें भी तो डबडबा जाती थी तो वह दाँतों से होठ काटते हुए आँसू पीने का असफल प्रयास करती । उसे आज भी याद है कि उसके घर कोई मेहमान तक घूमने नहीं आता था । गाँव वालों का भी कभी ध्यान उनकी तरफ नहीं जाता था । कोई उनसे बातें करने नहीं आता था । रजनी ही कभी-कभी गाँव के बच्चों में खेलने चली जाती थी । किन्तु बड़ी सहमी-सहमी व उपेक्षित सी । बच्चों के तरह-तरह के खिलौनों से खेलने जाती थी । बाल स्वभाव भरा वह भी वैसे ही खिलौने की मांग करती माँ से कहती- "माँ तू मुझे अच्छे-अच्छे खिलाने नहीं लायेगी ? सब बच्चों के पास कितने बढ़िया-बढ़िया खिलौने हैं । मेरे पास तो एक भी नहीं ।"

"हाँ....हाँ बेटी तुझे भी मैं बढ़िया से खिलौने अबकी बार मेले से खरीद के लाऊँगी । बेटी तू फिक्र मत कर ।" "माँ तू झूठ बोलती है । पहले भी तो तूने ऐसे ही कहा था किन्तु खरीदा कुछ नहीं था । पहले तो तूने मुझे नये-नये कपड़े सिलवाने की कही थी किन्तु मेरे पास तो वही पुरानी पिसी घघरिया है ।"

दशहरा आ गया था । गाँव में वार्षिक रावण मेला लग गया था । रजनी ने माँ से कपड़े व खिलौने खरीदने को कहा था किन्तु माँ के पास तो फूटी कौड़ी भी तो न थी । उस दिन से रजनी माँ से रूठ गयी थी और अकेली बिना कहे मेले में चली गयी थी बच्चों के साथ । मेले में बच्चे अपनी-अपनी पसन्द की वस्तुएँ खरीद रहे

Scanned by CamScanner

थे। किन्तु अन्दर से वह खिन्न, असन्तुष्ट व टूटी रहती थी। उसकी निराशा व बेचैनी कभी-कभी चेहरे पर भी परिलक्षित हो जाया करती थी। हालांकि वह भावों को छिपाने का प्रयास करती किन्तु व्यर्थ। नन्ही सी जान बराबर माँ को मन ही मन कोसे जा रही थी। क्यों नहीं माँ ने उसे भी पैसे दिये थे ? जबकि सब बच्चों की माताओं का पिताओं ने उन्हें बहुत सारे पैसे खर्च करने को दिये थे। जब दूसरे बच्चे मिठाईयाँ बगैरह-बगैरह खरीदकर खाते तो वह उन्हें खड़ी-खड़ी देखती रह जाती। कोई उसे कुछ नहीं देता था। बच्चे भी शैतान होते हैं। उल्टे उसे चिढ़ा-चिढ़ाकर खाते। वह यही सोच रही थी। "काश ! उसके पास भी पैसे होते।" उसके मुँह में भी पानी आ गया। उससे नहीं रह गया। आखिर बच्ची थी चोरी से उसने एक हलवाई की दुकान से बर्फी का पीस उठा लिया और खाना चाहा किन्तु तभी उसके कान पर दुकानदार का तड़ाक से चांटा पड़ा और वह चीखने व तदोपरान्त विलखने लगी। आखिर उसे चोरी करते देख लिया गया था। वह बहुत देर रोई थी। वहाँ उसे चुप कराने वाला कोई नहीं था। उसे माँ की याद आने लगी थी। उसे विलखते देख दुकानदार भी पसीज गया था और तूने तो चोरी की थी इसीलिए मैंने......।" बच्ची ने मिठाई फेंक दी थी और घर वापस चली आयी थी। घर माँ से लिपटकर खूब रोई थी। माँ से कुछ भी नहीं कहा था पर वह सब समझ रही थी किन्तु विवश थी। उसकी आँखें भी नम थी। उसका ध्यान भगवान के सुपुर्द था। उस दिन रोते-रोते रजनी ने माँ से पूछा था" माँ......हम नाचने गाने वालों के क्या पापा नहीं होते हैं क्या ? उस शालिनी के पापा ने तो उसे मेला जाने के लिए 50/- रु० दिये थे। मुझे नहीं दिये। मेरे भी पापा होते तो वो क्या मुझे भी शालिनी के पापा की तरह पुचकारते नहीं। "माँ तुम मुझे भी एक पापा लादो.....। मेरी अच्छी माँ......लादो ना मुझे एक पापा।" मेरा भी शालिनी की तरह पापा के गले में लटकने का बहुत जी करता है किन्तु उसके पापा हैं कि मुझे पास नहीं भटकने देते। टकले बहुत खराब हैं। "नहीं बेटी नहीं," सीने से लगाते हुए- "ऐसे पापा कहीं से नहीं लाये जाते हैं, वो तो होते हैं।" "तो फिर मेरे पापा क्यों नहीं हैं।" "थे बेटी तेरे भी पापा एक।" "थे ? पर अब कहाँ।" "वो अब इस दुनियां में नहीं हैं। बच्ची उदास हो जाती है- कहाँ गये ?" "पता नहीं"

"मम्मी बताओ न कहाँ गये ? मेरा उनसे मिलने को जीकर रहा है। रजनी का अगला प्रश्न था... " पर माँ हमारे तो भैया-भाभी भी नहीं हैं। सब बच्चों के तो है तो कोई बड़ी दीदी भी नहीं है जिसके कंधे पर मैं झूल सकूँ और परेशान कर सकूँ। "चुप हो जा बेटी, ऐसी बातें नहीं करते हैं अच्छे बच्चे।" "नहीं माँ... पहले

Scanned by CamScanner

बताओ..." रुठते व जिद करते हुए । "मुझे भैया व दीदी ला देना ।" माँ विवश हो बस रोने लगी थी । रजनी भी तो उसका साथ दे रही थी । उनको चुप कराने वाला वहाँ एक भांत झौपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं था । कुत्ते तक भी उनके यहाँ रोटी के टुकड़े के लालच में नहीं आते थे । बेसक जानते थे । आपको बता दें कि रजनी अन्य बालकों की तुलना में कम सामाजिक व अबोध थी । क्योंकि समाज से उसका सम्पर्क कम ही रहता था । यदा कदा माँ से प्रश्न करती तो वह टाल जाती थी इसीलिए दुनियादारी की जानकारी....बहुत कम ही थी । रजनी ने माँ का जीना दूभर कर दिया था वह जो भी गाँव में देखती उसकी तुलना स्वयं से करती और कहती । "माँ हम भी क्यों ना औरों सा बढ़िया घर बना लेते हैं ।" माँ तू ईख नहीं उगाती है । मक्का नहीं उगाती है मेरा गन्नों व भुट्टों पर बहुत मन चलता है । कभी–कभी वह कहती..... माँ हम एक गाय पालेंगे आदि आदि । माँ ने समझाया बेटी भगवान हमें जैसा रखेंगे वैसा ही रहना पड़ेगा । सम्पन्न लोगों से तुलना नहीं करनी चाहिए । फिर भी रजनी ने माँ से एक अजीव सा सवाल किया "माँ हम औरों को दावत पर बुलाती हैं ? (माँ को बड़ी झुझलाहट होती)" माँ नहीं रहूँगी तेरे घर.... तू तो कभी अपने घर गीत भी नहीं रखवा सकती । तू बहुत खराब है माँ । "शायद तुम ठीक कहती हो बेटी.... मैं बहुत अभागी हूँ इस दुनिया में । एक दिन सचमुच तू भी मुझे इस घर में अकेला छोड़कर चली जायेगी, तब मुझे घर खाने को दौड़ेगा । "मैं कहाँ चली जाऊँगी माँ ?"

"बेटी मेरे घर भी एक दूल्हाराजा आयेगा और तुझे ले जायेगा तब मैं भी अपने घर एक छोटी दावत दूँगी और तेरी शादी के उपलक्ष में गीत रखवा गवाऊँगी ।" "नहीं माँ... मैं तुझसे दूर नहीं जाऊँगी.... मैं दूल्हे राजा–बाजा को लौटा दूँगी ।" भला तुझे अकेला कैसे छोड़ जाऊँगी । "छोड़ना पड़ेगा बेटी । संसार का ऐसा ही नियम है ।" रजनी माँ से लिपटकर रोने लगी– "मैं संसार के इस नियम को तोड़ डालूँगी । मैं अपनी माँ को कभी नहीं छोड़ूगी ।" "नहीं बेटी भगवान बुरा मानेगा ।"

"मानने दो उसे बुरा । उसी ने ही तो मेरे भाई.....बहिन व पिता को मुझसे छीना है तू कहती तो है । तब तो वह बहुत बुरा आदमी है ।" माँ तू एक बार भगवान का पता तो बता दे मैं उससे सबको वापस ले आऊँगी वह उन सबका करता क्या है ?

"नहीं बेटी....तू अब उन सबको भूल जा । अब मैं ही तेरी माँ हूँ मैं ही तेरा पिता हूँ.... भाई हूँ....बहिन हूँ । चुप रह मेरी बेटी आ तेरे आँसू पौंछ दूँ.....तू बैठ खाना खा ले ।" किन्तु रजनी के मानस पटलपर भैया– बहिन व पिता की कल्पना बरकरार थी । ऑफिस में बैठी प्रबंधिका के मन में

Scanned by CamScanner

एक प्रभावी तस्वीर जो उभर रही थी वह थी दीनानाथ की । जी हाँ, दीनानाथ ही वह इकलौता पुरुष था जो उसकी जिंदगी में आया था और........।"

शाम का समय था । आकाश में काले बादल थे । दीनानाथ अन्य दिनों की तरह शहर के गाँव जा रहा था कि रास्ते में ही बस खराब हो गयी । उसने शार्ट कट रास्ते से गाँव जाने के लिए तांगा पकड़ने के लिए 3–4 किमी. कच्चे रास्ते से पैदल गुजरना पड़ा । रास्ते में घने जंगलों के बीच बसे छोटे–छोटे गाँव पड़े । शाम का अंधेरा हो चुका था वह रास्ता भटक गया था तथा बारिश भी शुरु हो गयी । वीरान जंगली रास्ते में वह अकेला चले जा रहा था उसे अपने गाँव पहुँचना असंभव लगा । उसे चोर व जंगली जानवरों का भय सताने लगा । उसने नजदीकी गाँव में ही शरण लेने का फैसला किया । चलते–चलते उसे एक हल्का प्रकाश पुंज दिखायी दिया उसने उसी को लक्ष्य बनाकर चलना आरम्भ किया । कुछ देर बाद वह एक गाँव के बाहर स्थित झोपड़ी के पास खड़ा था । बारिश जोरों पर थी । सर्द हवा बह रही थी । दीनानाथ ने साहस बटोर झोपड़ी के अन्दर की आहट व जायजा लिया । अन्दर दीपक जल रहा था । एक लड़की व वृद्धा बैठी थी । युवक ने दरवाजा खटखटाया तो युवा लड़की ने दरवाजा सहमते हुए खोलकर कहा, "तुम कौन हो ? और इस समय भीगते हुए कहाँ से आ रहे हो ?" मैं कौन हूँ ?, कहाँ से आ रहा हूँ ? मैं तो बाद में बताऊँगा अगर तुम..... क्या तुम मुझे अन्दर आने दोगी ? और आज रात क्या मुझे अपने यहाँ शरण दोगी ? "युवक ने कपकपाते व युवती को निहारते हुए पूछा ।" तो युवती ने युवक के चेहरे का जायजा लेकर कहा, "हाँ, आपको शरण मिल सकती है । अभी मैं माँ को पूँछती हूँ ।" माँ जरा इधर आओ देखो, हमारे यहाँ कोई आये हैं जो आज रात यहाँ ठहरना चाहते हैं । क्या मैं.....। रमझनियाँ उठकर दरवाजे पर आयी और युवक को देखकर अचम्भित हुई और देखती रही....।.....मेरा बेटा.... जीतू भी तो.....बिल्कुल इसी युवक जैसा ही था.... कहीं ये वही तो.....। तभी वृद्धा जैसे विचारों से जागी हो और बोली "हाँ.. .हाँ बेटा अन्दर आ जाओ तुम्हें शरण मिल जायेगी । जहाँ तक मेरा अनुमान है तुम कम से कम धूर्त (चोर) नहीं हो । आओ स्वागत है । ये शब्द सुन युवती में खुशी की सिहरन महसूस की । उसकी जिंदगी में पहली बार एक मेहमान उसके घर आया था और वो भी एक नौजवाँ और इस मौसम में । वाह ! चार चाँद हस्ती में और मुर्गा आ गया.....। युवक के कपड़े बदलवाये गये यथासंम्भव । उसके बाद चौकी पर बिठाया गया । खाना खिलाया गया । उसके आराम की व्यवस्था कर दी गयी । रजनी ने उसकी खातिरदारी में कोई कमी नहीं छोड़ी भी ।

Scanned by CamScanner

रजनी की अन्तर प्रसन्नता को युवक बार–बार महसूस कर रहा था और वही हो रहा था जो होना था । रजनी अब जवान थी । जिंदगी में पहली बार आज उसे किसी युवा पुरुष का इतना सामीप्य मिला था । उसे यह अनुभव सर्वथा अनूठा एवं अत्यन्त मीठा था । वह रोमांचित थी । उसे जीवन में पहली बार इतनी खुशी हो रही थी । युवक भी युवती के प्रति कम संवेदनशील नहीं था । उसे जीवन में पहली बार एक ऐसी लड़की से मुलाकात हुई थी जो अन्य लड़कियों से कई बातों में भिन्न थी । चालाकी, छलकपट उसे छू तक नहीं गया था । वह एक दम शर्मीली व सरल ह्रदय, भोली–भाली लड़की थी । युवक को पहली नजर में ही उससे प्यार हो गया था । उसने भविष्य रूपी सपनों का स्वेटर बुन डाला था । किन्तु लड़की तो प्यार–व्यार शादी–वादी से अपरिचित थी । उसे तो उससे एक भाई एक बाप और एक प्रेमी... .. का प्यार एक साथ मिल रहा था । शीघ्र ही माँ–बेटी व वह युवक तीनों आपस में घुल मिल गये थे और उनमें खूब बातें इस तरह हुई जैसे वे एक ही परिवार के सदस्य हों और वर्षों से साथ रह रहे हों । लड़की उसे भैया व वृद्धा बेटा कहकर पुकार रही थी । परन्तु लड़के का संबोधन रजनी... व मौजी ही था । रमझनियाँ व रजनी ने लड़के की पूरी कहानी सुनी कि वह कैसे भटकता हुआ यहाँ आया वगैरह–वगैरह । वृद्धा ने भी तब उसे युवक को वो सब अपनी कहानी सुनायी जो उसने जीवन में झेली थी । युवक का ह्रदय दया से भर गया और बोला "मौजी अगर आपका आदेश मिले तो मैं तुम दोनों की जिंदगी का ये खालीपन दूर कर सकता हूँ । कैसा अजीव संयोग है मैं भी तुम लोगों की तरह अभागा हूँ मेरा भी गाँव में कोई नहीं है मैं अनाथ हूँ जब मैं छोटा था मैं एक ट्रेन में चढ़ गया था और भटकता हुआ एक गाँव में पहुँच गया था वहाँ मैंने एक जमींदार के यहाँ नौकरी की और छोटा सा घर बसाया । किन्तु आज मुझे अपना असली घर वापस मिल गया है ।" युवक भावुक हो रहा था । उसकी कहानी सुनकर दोनों महिलायें भी कम भाव विभोर नहीं थीं तभी वृद्धा ने आगे बढ़कर युवक को छाती से लगा लिया था और बहुत सारा प्यार दिया था मानो एक बार फिर उसका खोआ बेटा मिल गया था । तभी वृद्धा ने गम्भीर होते हुए युवक के हाथ में अपनी लाड़ली का हाथ थमा दिया । बेटे आज से तुम इस रजनी की लाज के रखवारे तुम हो । आज तुम्हें प्यार के बंधन में बाँधती हूँ हमेशा के लिए । सदा के लिए बेटे मेरी रजनी को प्यार से रखना । वृद्धा ने रजनी की तरफ विमुख होकर कहा, "रजनी आज से दीनानाथ तुम्हारा है, घर बैठे भगवान ने तुम्हें, तुम्हारे घर दूल्हाराजा भेजा है..... इसे वापस मत करना बेटी.... इसे साथ चली जाना ।" कहते–कहते वृद्धा

Scanned by CamScanner

चारपाई पर गिर गई थी हमेशा–हमेशा के लिए । और फिर कभी न उठी ।....

रजनी व दीनानाथ दोनों उससे लिपटकर रोने लगे थे । "माँ... वो दावत. ..वो तभी बाहर दोनों को कुछ पदचापों की आवाज उन्हें सुनायी दी पदचाप झोंपड़ी के गेट पर आकर रुके और मानवीय आवाज आयी" ऐ बुढ़िया ऐ छोकरी... तूने आज अपने घर में एक चोर छिपा रखा है । हमें जासूसों ने खबर दी है ।" ये ग्राम प्रधान के गुण्डे थे जो गाँव में आतंक रखते थे । कह रहे थे" पता चला है ये चोर गाँव में डांका डालने के लिए माहौल देखने आया है । जल्दी से बुढ़िया दरवाजा खोल और चोर को हमारे हवाले कर ।" इन गुण्डों को डर था कि कहीं बुढ़िया इस आदमी की मदद् से जमीन वापस न ले ले । झोंपड़ी के अन्दर से रजनी की रोती आवाज आयी– "आप लोग यहाँ से चले जाओ । मेरी माँ इस दुनिया में नहीं रही है... ये चोर नहीं मेरा रिश्तेदार है ।" "बकवास करती है लड़की । हमें मूर्ख समझती है कि इस तरह रोने के नाटक से हम वापस चले जायेंगे । जल्दी चोर को बाहर कर ।"

"ये चोर नहीं मेरा रिश्तेदार है । तुम्हें विश्वास न हो तो आकर देख लो.... मेरी माँ अंतिम सांसें गिन रही है । कोई डॉक्टर हो तो ले आओ ।" "पागल हुई है क्या ? हम अन्दर आ जायें और तेरा यार हमें...। जल्दी बाहर निकाल । नहीं तो हम झोंपड़ी में आग लगा देंगे, जवाब दे ।"

लड़की विवश थी । तब लड़के ने साहस कर गुण्डों से टकराने का इरादा किया और बाहर निकल आया । लड़की ने उसे ऐसा करने से मना किया किन्तु वह नहीं माना था । वह बाहर आकर गुण्डों से भिड़ गया था । गुण्डे संख्या में अधिक थे उसे पीटता व घसीटता ले गये थे और उसे मारकर जंगल में किसी नदी में बहा आये थे और रजनी ।

रजनी अब अनाथ थी । एक अबला, असहाय नारी । गाँव बनखेड़ा में एक रिटायर अध्यापक पं० हरस्वरूप रहा करते थे । उन्होंने रजनी को शहर के एक अनाथालय में पहुँचा दिया था । क्योंकि वह विक्षिप्त अवस्था में थी । किसी पुरुष के साथ रहना नहीं चाहती थी ।

इस अनाथालय में उसका सारा जीवन बीता था । वहीं थोड़ी पढ़ी लिखी थी । इस अनाथालय की प्रबंधिका ने ही अपने मरने से पूर्व ही उसे यहाँ का चार्ज उसे ही सौंप दिया था और आज वह स्वयं यहाँ की प्रबंधिका थी । मात्र एक धीर–गम्भीर व चिंतनशील वृद्ध प्रबंधिका और उससे अधिक कुछ नहीं..... कुछ भी नहीं ।

– धीरज यादव
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

समय का सदुपयोग

आज वर्तमान में सभी कुछ इतनी तेजी से बदल रहा है, कि मानो हर समय व्यक्ति मशीन की तरह कार्य कर रहा है। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि आज भी बहुत से ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं जो कि समय का केवल अभाव ही अभाव चिल्लाते रहते हैं। और ताज्जुब की बात यह होती है कि ये वे व्यक्ति होते हैं जिन पर सबसे ज्यादा वक्त होता है।

इस प्रकार समय को इधर–उधर के कामों में नष्ट करने वालों तथा हर काम को टालते रहने वालों के विरुद्ध सन् 49 में उदासीन सम्प्रदाय के जीनो के शिष्य सेनेका (Seneca) ने एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया था। वह घोषणा पत्र आज भी इतना ही नवीन प्रांसगिक है जितना आज से दो हजार वर्ष पूर्व था।

सेनेका ने उस शिकायत की ओर इंगित किया था जो उन दिनों प्राय: सुनने को मिलती रहती थी। समय का अभाव हमारे जीवन का बहुत बड़ा अभिशाप है। हमारा जीवन काल बहुत ही स्वल्प है। जब तक हम किसी काम को करने के लिए पूरी तरह तैयार होते हैं, तब तक हमारे जीवन काल के अन्त का समय आ जाता है आदि।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि काम के लिए तैयारी की जरुरत नहीं होती है– उसे तो किया जाता है। अभी और यहीं। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य की आयु सीमा 40 वर्ष थी। तब उसी प्रकार समयभाव की शिकायत करके उसने भगवान से अपनी आयु की सीमा 100 वर्ष करा ली– परन्तु फिर भी समयाभाव द्वारा वह ग्रसित बना रहता है। क्योंकि वह समय को व्यतीत करना चाहता है, उसका उपयोग नहीं करना चाहता है।

क्या आप और हम कभी इस बात पर विचार करते हैं कि कितने महान पुरुष हुए हैं जिन्होंने अल्पावस्था में ही अपने कार्यों द्वारा विश्व को चमत्कृत कर दिया था। सेनेका ने लिखा है कि जिन सम्पन्न व्यक्तियों के पास खाली समय में मौज करने की सुविधा है, वे ही समयाभाव की शिकायत करते हैं।

एक अत्यन्त विरोधाभासपूर्ण तथ्य है कि जो सर्वाधिक व्यस्त है, उसके लिये उपयोगी कार्य के लिए समय रहता है। जो समय का सर्वाधिक दुरुपयोग करते हैं। वे समयाभाव की सर्वाधिक शिकायत करते हैं, क्योंकि उन्हें समय के दुरुपयोग से

Scanned by CamScanner

फुरसत नहीं मिलती है और उसके सदुपयोग के लिए उन्हें समय नहीं मिलता है। समय व्यतीत होता है या नहीं, यह विवाद का विषय है, परन्तु यह निर्विवाद है कि हम प्रतिक्षण नष्ट होते रहते हैं। समय का दुरुपयोग करने वाले केवल पश्चाताप करते रहते हैं – 'साँप निकल जाता है, लकीर रह जाती है। समय की यह बहुत बड़ी विशेष्ता है कि जैसे–जैसे उसका सदुपयोग किया जाता है। वैसे–वैसे व्यक्ति में समय का लाभ उठाने की अधिकाधिक शक्ति आती रहती है। कहा भी गया है कि एक व्यक्ति के पास हर काम के लिए समय होता है। तुम यदि किसी काम को कराना ही चाहते हो तो उसे किसी व्यस्त आदमी को सौंप दो।

समय के सदुपयोग के बारे में बहुत वर्षों पहले शरशैया पर लेटे भीष्म पितामह भी महाभारत में युधिष्ठिर को यह संदेश देते हैं– काम को टालना समय को बर्बाद करना है। कल के लिए मत टालो, तुम नहीं जानते कल क्या होगा ? "युधिष्ठिर ने एक प्रार्थी को यह कहकर टाल दिया था कि तुम्हारा काम कल कर देंगे" भीमसेन ने तत्काल परम विजय सूचक शंख बजा दिया। कारण पूछने पर उन्होंने युधिष्ठिर से निवेदन किया– श्रीमान एक पल का तो भरोसा नहीं और आपने 24 घण्टों पर विजय प्राप्त कर ली।

आपकी इस महानतम विजय की घोषणा करने हेतु मैंने यह घन्टा बजा दिया। युधिष्ठिर ने भीमसेन के कथन के महत्व को समझते हुए, उस प्रार्थी को बुलवाया और उसका कार्य कर दिया लोकप्रिय लोकोक्ति कहती है।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में प्रलय होयगी, बहुरि करोगे कब ?

समय के बारे में सही कहा गया है कि यह एक उस प्रकार के गंजे व्यक्ति की तरह होता है। जिसके कि सिर के आधे हिस्से में बाल होते हैं तथा पीछे का हिस्सा पूरी तरह से गंजा होता है। यदि व्यक्ति उस समय के बालों को पकड़ ले तो वह उस समय के साथ चल सकता है, नहीं तो वह पीछे गंजे हिस्से पर बार–बार हाथ मारता रहेगा और उसका हाथ फिसलता रहेगा तथा समय हाथ में नहीं आयेगा।

अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगा कि महान से महान व्यक्ति भी समय के सदुपयोग को करके ही महान हुए और आगे भी ऐसा होता रहेगा। अतः समय को पहचान कर ही समय के साथ–साथ उसका सदुपयोग करें ताकि उस महानतम सूची में अपने आप को महान कर सकें।

– डी. के. रावत
असि. लाइब्रेरियन

*

Scanned by CamScanner

देश-भक्ति गीत

वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ न सका ।
वह चन्दन भी क्या चंदन है, जो अपना वन महका न सका ।।
वह जीवन भी क्या जीवन है..........

जिसकी धरती पर जन्म लिया, जिसके समीर में साँस चली,
जिसके अमृत से प्यास बुझी, जिसकी माटी से देह पली,
वह क्या सपूत जो जन्म भूमि के, प्रति कर्तव्य निभा न सका ।
वह जीवन भी क्या जीवन है..........

मुनिवर दधिचि हो गये अमर, जिनकी हड्डियों से वज्र बना,
संकट समाज का दूर किया, देकर पावन शरीर अपना,
वह मानव क्या जो समाज के हित प्रण प्रसून चढा न सका ।
वह जीवन भी क्या जीवन है..........

शंकराचार्य ने भारत से, भ्रम का अंधियारा दूर किया,
जीवन भर पैदल घूम-घूम, कोना-कोना जगमगा दिया,
वह दीपक क्या जो अपने घर में उजियाला फैला न सका ।
वह जीवन भी क्या जीवन है..........

ऐसे महान चाणक्य जिन्होंने, चन्द्रगुप्त का सृजन किया,
अन्यायी राजा को रोदा, यूनानी शत्रु भगा दिया,
वह नाविक क्या जो तूफानों में नौका पार लगा न सका ।
वह जीवन भी क्या जीवन है..........

राणा का जीवन था ऐसा, जिसने महलों को छोड़ दिया,
रोटियाँ घास की खा वन में, आजादी का संघर्ष किया,
वह देश-प्रेम क्या देश-प्रेम जो कण्टक पक्ष अपना न सका ।

वह जीवन भी क्या जीवन है जो काम देश के आ न सका,
वह चन्दन भी क्या चंदन है जो अपना वन महका न सका ।

– अखलेश कुमार राजपूत
एम.ए. (हिन्दी) बी.एड.

*

Scanned by CamScanner

स्काउट-गाइड एवं वृक्षारोपण समारोह

प्राचार्य डॉ. एल. सी. गौड़ द्वारा वृक्षारोपण

मुख्य अतिथि श्री बनवारी लाल शर्मा,
अध्यक्ष, शिक्षक संघ, अलीगढ़, द्वारा सम्बोधन

मुख्य अतिथि श्री बनवारी लाल शर्मा,
अध्यक्ष, शिक्षक संघ, अलीगढ़, द्वारा वृक्षारोपण

अध्यक्ष, श्रीमती आशा देवी द्वारा वृक्षारोपण

स्काउट-गाइड कार्यक्रमों का निरीक्षण करते हुए, सचिव दीपक गोयल एवं प्राचार्य डॉ. एल.सी. गौड़

Scanned by CamScanner

INDIA-Vision 2020

- *Deepak Goel*
Secretary

India 2020 will be bustling with energy, entrepreneurship and innovation. The country's 1.35 billion people will be better fed, dressed and housed, taller and healthier, more educated and longer living than any generation in the country's long history. Illiteracy and all major contagious diseases will have disappeared. School enrolment from age 6 to 14 will near 100 percent and drop out rates will fall to less than one in twenty.

A second productivity revolution in Indian agriculture, coupled with diversification to commercial crops, agri-business, precessing industries, agro-exports and massive efforts towards afforestation and wasteland development will generate aboundant farm and non-farm employment opportunities for the rural workforce. These in turn will stimulate demand for consumer goods and services, giving a fillip to the urban economy and the informal sector as well as rapid expansion of the services sector.

India's claim to the title Silicon valley of Asia will be followed by the diversification from IT to biotechnology, medical science and other emerging fields of technology, widening the field of India's international competitiveness and generating a large number of employment opportunities for the educated youth. These developments, driven by the firm commitment of the government and a quantum expansion of vocational training programmes, will ensure jobs for all by 2020.

Inequalities between different age groups, the sexes, income groups, communities and regions will come down dramatically. The old disparities between the very rich and the poor will not have disappeared, but the nature of

poerty in 2020 will not be nearly as harsh and oppressive as it was at the turn of the millennium. Regional disparties will remain visible, though all regions will have advanced significantly in two decades. India's achievements have been fuelled by the realization that the progress of the whole ultimately depends on the progress of its weakest links; India 2020 must be one in which all levels and sections of the population and all parts of the country march forward together towards a more secure and prosperous future.

The increasingly congested urban traffic will be motorised as never before. Two wheelers will be ubiquitous and cars will be considered essential for most middle class families. City roads and rural highways will improve substantially in number, capacity and quality, but a four-fold multiplication in the number of vehicles will tax the urban infrastructure to the limit. Urban congestion will accelerate the movement of business, middle class families and even government offices into new self-contained suburban centres. Cell phones, computers and the Internet will permeate every aspect of life and every corner of the country.

Computerisation of education will dramatically improve the quality of instruction and the pace of learning, so that many students will complete the first twelve years of school curriculum in as little as eight. Computerised distance education will catch on in a big way and enable tens of thousands more students to opt for affordable higher education. Computerisation in government will streamline procedures and response times to a degree unimaginable now. Perceptive observers will find that India is leapfrogging directly into a predominantly service economy.

Environmental issues will remain a serious concern. Urban air pollution will come under control by strict enforcement of motor vehicle emission standards and widespread use of ethanol-blended motor fuels, but water shortages in major metropolitan areas will continue despite a national programme to popularise water harvesting

Scanned by CamScanner

techniques in both urban and rural areas. A massive afforestation programme will reverse the depletion of forest areas, raise the nation's Green cover to 33 per cent of area, generate millions of rural employment opportunities, and provide abundant renewable energy from biomass power production.

India will be much more integrated with the global economy and will be a major player in terms of trade, technology and investment. Rising levels of education, employment and income will help stabilise India's internal security and social environment. A united and prosperous India will be far less vulnerable to external security threats.

A more prosperous India in 2020 will be characterised by a better-educated electorate and more transparent, accountable, efficient and decentralised government.

Some may regard this vision as an anxious attempt to imitate and catch up with the West. But there is an important distinction to be made between blind imitation and intelligent emulation that draws upon the discoveries and experiences of others to address universal needs common to all human beings and all societies. India, with its rich cultural heritage and thousands of years of history of civilisation, need not aspire to become like country A or B.

For India, realising the vision for 2020 is not an end in itself, but rather an essential condition for allowing the spirit of this country to emerge and flourish.

> Where the mind is without fear and the head is held high. Where knowledge is free. Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls. Where words come out from the depth of truth. Where tireless striving stretches its arms towards perfection. Where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary desert sand of dead habit. Where the mind is led forward by Thee into ever-widening thought and action. Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.
>
> — Rabindra Nath Tagor

Scanned by CamScanner

Value of Education

Value of education is very necessary at this time. Because only this is the way to increasing the relationship amongst the people. Value-based education can help the nation sight against all kinds of fatalism, violence, corruption & exploitation. Children, therefore, must be acquainted with the commonalities amongst all religion to acquire basic values of love for all, peace and non-violence. Education about religions can create the necessary awareness among children right from early stages that the essence of every religion is the same, only the practises differ. However, the issue was to be handled with utmost caution and sensitivity.

Teachers, first of all, will have to Internalise the basic objectives and goals of all religions. Learning of essential unity and commonalities of all religions would have to find a place in the curriculum of teacher education. All teachers of all religion talk of wholesome development of human personality and internal development of the individual that would help him live wisely, harmoniously and purposefully by making positive and creative contributions to the society.

Although sorrels are not isolated islands untouched by the prevailing moved of in difference and even disregard for the entire value system, their potential for and role in the task of guiding the national psyche can not be underestimated. Schools can and must strive to restore and sustain the universal and eternal values oriented towards the unity and integration of the people, their moral and spiritual growth enabling them to realise the treasure within. People must realise who they are and what is the ultimate purpose of human life.

Value based education would help the nation sight against all kinds of fanaticism, ill will, violence, fatalism, dishonesty, avarice, corruption, exploitation and drug abuse.

- *Dr. Yogesh Kumar Gupta*
Lecturer in Commerce

*

Scanned by CamScanner

The Rule of Earthworms for Human Health

Earthworm plays important role in human health because Earthworm regarded as farmer's friend. They improve soil structure, soil fertility, promote soil irrigotion, encourage favourable soil reactions, enrich the nutrient states of the soil, promote plant growth and improve the quality of harvested products such importance of earthworms in Agriculture has been scientifically recognized during in the last 50 years.

The role of Earthworms in the turnover of the soil drew the attention of Aristotle called them "Intestine of earth". The role of Earthworm in the break down of dead plant and animal material in the soil and forest litter as well as in the maintenance of soil structure, aeration and fertility. Earthworms have played a most important role in the history of the world. Earthworm have a major role in the breakdown of organise matter and the release and recycling of the nutrients that it contains their faucal is the form of casts which is deposited on the soil surface.

Earthworms play a key role in the soil Biology as versatile natural bioreactor. They effectively harness the beneficial soil microflora, destroy soil pathogens and convert organic waster in to valuable product such as biofertilizers, biopesticides, vitamins, enzymes & growth hormones.

Vermicompost prepared by earthworm. Vermicomposting to produce organic manure is a break through in the field of Agricultured for sustainable forming furthers, different organic wastes can be mixed to obtain high quality vermicompost. Its application improves the soil fertility, which is effective for short duration crops. Different organic wastes that have been utilized in the present investigation are kitchen wastes, dungs, Agricultural wastes and oil cakes etc.

Vermitechnology on commercial basis has been followed in Canada, USA, Italy, Japan, France, UK, Indonesia. In India vermitechnology has been employed at Pune, Bangalore, Bhubaneshwar, Delhi (IARI) by using two species of Earthworm, i.e. Eisenes foetids, Eudriles eugenia.

Vermiwash is a liquid biofertilizer. It is a collection of excretory products and mucus. Secretions of earthworms, along with micronutrients from the soil

organic molcules. The utility of vermiwash in aquatic productivity is immense but its protential as a briocide, either singly or when mixed with botanical pesticides. The vermiwash complex is effecient in raising of nurseries, lawns & orchids. Vermiwash support healthy plants with an inbuilt resistance to part attack & diseases.

Lawrence and millar in 1945, recorded 72% protien contint in earthworm and recommended for the animal food. Earthworm Eisence foetids as a food forman and domestic animals.

Chemical fertilizers are harmful for human health so that vermicompost are very beneficial product which are made by earthworms macronutrients and micronutrients are present in high percentage in vermicompost. Earthworm consumes of the waste product and it controls the pollution.

Potassium is a very important element for both animals & plants. A major cation plants must obtain from soil is potassium, because the quantity in soil is often inadequate, the element is one of the macronutrients supplied in vermicompost.

- Dr. Mamta Sharma
Lecturer in Zoology

*

Friendship

Friendship is a God gift.
And friend has a long lift.
Friendship is a long chain.
It contains friends like star moon and rain.
Friendship increases day by day.
As friends together talk meet and play.
If friends spend time together,
it is difficult to seperate them forever.
Friends increase with the passage of time.
But we always remember our old friends that give us shine.
A friend is like a star that the sky.
For our aim, a friend encourages us to work hard and try true True friends are like treasure.
And we should keep them forever.
We share with out friends happiness and sorrow.
A friend is like a heart that gives life.
Without friends a man look like a blind.

- Vandana Tomar
Ex. Student

*

Scanned by CamScanner

INDIA -as a paradise

India is a paradise with its rich cultural heritage and national beauty with colourful people. It is the place where from North to South and from East to West the people are different, customs are different and traditions. India offers an opportunity to the visitors to see the sanctuaries, beaches, mountains, art and historical monuments. No other country in the world can provide such absorbing interests for the senses as well as the soul such as the unpresented beauty of her variety of customs, festivals, folks, religion, philosophy, art and architecture, monuments and memories of one of the oldest civilisations[1].

INDIA-at a glance

India being a big country has everything to offer to everybody. Visiting. India is an enthralling and memorable experience to one and all. The improvisations about the oriental wonderland are proved fectile over a period of time and withstand for the time-test suggesting solutions to the problems faced by the world. The beautiful ancient monuments are fascinating and a tourist delight. India is a country where the past and present blend in a systematic manner on the threshold of an exciting future and emerging as International Market. Delhi is the capital of India and is a gateway to the vast country. The tourist can find the beautiful sights, the sounds and smells of India through a single window system of tourism. Similarly, sandalwood smell of Karnataka presents a beautiful panorama to the visitor. The Karnataka's lush green forests and hills unravel nature and its beautiful products. The ruins at Hampi sing the saga of a glorious past. Bangalore and Mysore are the two great Jewels in the Crown of Bharat Mata (Mother India).

India is a tourist paradise having all unique features of modernity and traditional hospitality. Each state has its own cultural glory and historical monuments to visit. The Andhra Pradesh is a confluence of many cultural streams. The Assam State is resorting normally and is having beautiful areas to visit. The West Bengal's contribution to Indian life is unique and unforgettable. The Bihar State is with glamorous past and presents prestigious place to visit. Gujarat is an industrially developed state and offers many products to the visitor. Himachal Pradesh State is a beautiful picnic centre and offers many attractions.

Scanned by CamScanner

Jammu & Kashmir, is a diamond studded with many beautiful gardens and lakes in the crown of India and a visit to Jammu and Kashmir, gives most enjoyable experiences.

Kerala, the most densely populated state in India, offers many attractions to visitors. Tamil Nadu is with ancient temples and with modern industrial achievements. Madhya Pradesh is the meeting place of different races and offers many tourist places.

Maharashtra is the cradle of Indian freedom and an industrially advanced state having many a splendid picnic spots to visit. Orissa is a state immortalised by Art. The Punjab is both Industrially and agriculturally advanced state and spearhead in our history Rajasthan is a state with deserts promising to bloom and has many great Forts, Lakes and desert life is so vivid and also a mammoth experience. Uttar Pradesh is the valley of Ganga having unique place in Indian Politics and offers many interesting holy and picnic places to visit. Thus India offers everything to anybody. But Tourism Development in this country has been started in the early sixties. By that time, all other countries had achieved a remarkable progress in this area and had exploited to maximum possible extent. Post Independence era has witnessed Tourism Development in this country. Only great countries, which have glorious past can thrive on tourism business. Tourism business is to some extent the product of historical facts of a country. India has been hidden from prying eyes for many thousands of years and has secluded itself for a considerable period of time. India once called as the brightest jewel in the British Crown has developed to such great heights that it has become an example to other countries in many respects.

The present century has witnessed this country rising to heights and moving forward with other leading countries of the Globe. The main reason is of its vast geographical size, big markets and its rich potential. The unique feature of Indian society is joint family system where the members of the entire family are having close contacts and certain values are being maintained which is absent in other Western Countries. Many business firms are run as family concerns. A healthy family is an asset to the society and is the edifice on which a strong Nation is built. Even though this country is viewed as an orthodox, this system of joint family pays rich dividends and suggests solutions to many sociological problems, which the world is facing. No other country except this country perhaps has so

Scanned by CamScanner

many Temples and Churches. Gurudwaras and Mosques, thus showing devotion towards the guiding and invisible beauty in all respects. It is the reason why, people prefer to visit this country to learn the intricacies, which they are not aware of or their society permits. Indian artists are being welcomed by many countries who have brought laurels to this country. Among the prominent people are M. S. Subbu Lakshmi, Lata Mangeshkar, Mohd. Rafi, S.P. Bala Subramanyam, Ghantasala Venkateswara Rao, Jesudas, L. R. Eswari, Pandit Ravi Shankar, Ali Akbar, Bismillah Khan, Yamini Krishna Murthy, Dr. Padma Subramanyam, Shobhâ Naidu, Dr. Vempati Chinna Satyam are a few to mention and their countribution has paved the way in getting more fame and name to this country.

The cultural heritage is having a direct impact in the promotion of tourism. Besides this great rich cultural heritage, this country occupies a pivotal position in many other respects. Its rich magnificient monuments are always an added attraction to the visitor. The beautiful Taj Mahal, the temples of Srisailam and Lord Venkateswar in Tirupati are the Internationally reputed structures. The famous frescoes of Ajanta and Ellora caves create indelible impressions in the minds of visiting tourist. In fact, culture connotes a comprehensive view that comprises of dance and drama, language and literature, paintings and architecture, dress, handicrafts and all these forms provide a different world to the visitors.

India offers many delicious dishes to the visitors both the traditional and modern menu. Now the concept of vegetarian food is gaining ground around the Globe for better health. A tasty, cleanly, healthy and limited meal is always advocated by Ayurveda in India. This practice has been in vogue in many households in this country. The South Indian stuff is very famous and has been internationally accepted and the combination of different ingredients with medicinal properties is a penecea to many health problems. This tasty and low priced food is not available anywhere in the world. Traditional hospitality is the cordinal principle in this country.

In some areas if the guest comes to the family the members of the village used to help in supplying milk, curd or vegetables or in any other form and this indicates the brotherhood and concern about others which is absent in western countries. The family ties are so strong that they may puzzle the tourists.

Scanned by CamScanner

The beautiful Indian countryside provides exotic panorama of lush greeny valleys, jungles, lakes and waterfalls apart from the pleasures of sights and sounds.

Artists in clay literally make a big chunk of profits out of mud, gaining name through the uncompromised quality of materials they use and with their innovative designs. They used to develop sight from small plagues to large coins that adorn the drawing rooms and executive chambers.

India has always been famous throughtout the world for Handicrafts. People used to desire to possess are many enticing products as possible whenever they visit exotic places, Handicrafts are exquisite and fascinating items of manual skill. Ever since man has learned to translate his ideas into words and expressions, this resulted into manufacturing of beautiful things. The handicraft industries are commonly located in rural areas and the products are made for markets with personal touch. The visiting tourists will prefer new fields, new environments and fascinating things that lead to exciting experiences. Travel and Tourism is an avenue to convert the existential experiences into most unforgettable memories. Tourist purchases articles as an insignia of visiting that particular place. This excitement makes them to visit once again and these products which the tourists used to purchase is known as SOUVENIERS.

Souveniers play a pivotal role in the development of Tourism and remains as an important component. For centuries together India had a considerable variety of arts and hadicrafts. These are the masterpieces, which remind one of sweat, and strain of the artists' is reflected. The new designs or the ideas will be translated with most beautiful articles that allure the tourists. During the regimes of Nawabs and Rajas there was great encouragement and fulcrum to Indian artisans. Some artisans used to work on their own and some used to work on job basis under the guidance of master artisans. Most of the items were export to other countries through the Egyptian ports, at a time when the West of Europe, a birthplace of modern industrial system was inhabitated by uncivilised tribes. India was famous for the wealth of her rulers and for the artistic skill of her craftsmen, and even at a much later period when the merchant adventure from the west made their first appearance in India, Industrial advancement of this country was at any rate not inferior to that of more advance European Nations.

- *Dr. Bharat Bhushan Chawla*
Lecturer in Commerce

*

Scanned by CamScanner

Education for all

Today the number of adult illiterates world wide stands at 868 millions. True, illiteracy has significantly diminished in relative terms should continue to decline. The percentage of illiterates fell from 30.8% in 1980 to 22.8% in 1995 and should drop to 16.6% in 2010. But becuase of the increase in world population. The actual number of illiterates remained astonishingly stable between 1980 & 1995 around 890 millions - even if it has declined since then, albeit too slowly. And over 100 million children of primary school age shill do not attend school or simply have no possibility of doing so.

Thus scale of the task before us is clear. In the course of generations to come, we shall have to take up the unmet challenges of the 20th century - education for all- and those of the 21st century - lifelong education for all and the construction of knowledge societies. And these challenges concern all societies: even in the richest nations education systems cannot ensure sustainable literacy among the population. Studies show that over one tenth and more often than not, 1/5 of the population of the industrialised countries is affected by illiteracy - defined as the inability to read and write with understanding a short simple statement in relation to everyday life.

Education for all is more than an ambitious objective: It is an ambitious ethic-predicated on human dignity. Today the nation of literacy is no longer restricted to reading, writing and numeracy: education must also offer access to skills and knowhow that enable the individual to take his or her place in society. Education must also be accessible at all stages of life, so as to give a 'Second Chance' to the excluded and enable every individual to adopt to a changing world and work invironment. It must give access in the first instance to necessory knowledge and then make available throughout life-not only in school. but also through non - formal and informal education - what Robert carneiro, in 'Keys to the 21st Century', calls "antidotes to unlearning".

We are convinced that this effort will only bear fruit if education for all is integrated in national

Scanned by CamScanner

development and poverty - reduction programmes. For today, the essential link between education, development and poverty - reduction is universally recognised. This is why the poor and the excluded - particularly women & girls, too often deprived of education, and marginalised groups, should be the main targets of education for all.

Education for all is the best cenent of peace, both between and within nations. But are we ready to pay the price of peace ? To those who complained about the cost of education; 'Ab raham Lincoln was in the habit of reploying "Very will, gentlemen, then try ignorace !"

- Dr. Keerti Upadhyay

*

Please Pay Attention

Please pay attention to what people say!

Gyan Mahavidyalaya is progressing day by day.

What an efficient staff is here,

Full of joy and free of care

Serving the college with desire for its rise.

The principal is kind dutiful and wise

No one can devicate none can inchastray.

Please aply attention to what people say.

The college is really grand.

It tries hard for the development of every child.

Teaching prompt and behaviour good.

Pupils study and play with a cheerful mood.

The principal, the staff and the management is good.

Teachers guide the children with love and zeal

This love and sympathy, children always feel

For its progress we always pray

Please pay attention to what I say.

- Priyanka Gaur
Ex. Student

*

Scanned by CamScanner

Literature and Life

Several times it has been said that literature springs from the soil of life because it is a vital record of what men have seen and experienced. And which has the mast enduring interest far us. The aim of an literary man is always to provide his wards as faithfully as passible. The greatest beauty of a wark of literature lies in its faithfulness to reality.

Literature is the true picture of life. It is real and ideal so we always expect from a true literary artist not mearely phatographic presentation of life but a inner picture of life, that is to say not a copy of what it is but what it ought to be. If we wish to get the idea of a women's ideal duty is based on the conduct of Antigone of sophocles. Our idea of the duty of a son towards his father depahds upon 'Hemlet' of 'Shakespeare'. In certain sense the truth of poetry is superior to the truth of history or biography as Aristatle says-

"Poetry has a wider truth and a higher aim than history; far peotry deals rather with the universal history than with the perticular."

Generally the thinkers regard that Philasophy and History are more instructive than at her branches of learning but teaching of philosophy and history are not accepted by heart. They are the intellectual beating of mind that's why there instructions remain dull and montenous. On the other hand poetry teachers us in pleasent mood. With the help of delightful images. It increases the interest of the readers. Sir Philip Sidney was not wrong when he said-

"Neither philosopher nor historiographen could,

- at the first have entered in to the gates
- at popular judgement it they had not taken
- a great passport of poetry."

No doubt the Romantic poets were dreamers but their dreams are our dreams. Everybody in his life has moments when he is tired of life and dreams of the world of moonlight, music, feelings and imagination.

Yet we should not forget that literature is the treasure of human civilization, culture and manners. The world and excellence of literature is superior to life.

"Literature is the mirror of society but a colleagoul of life."

- *Km. Archana Agrawal*
B.Ed.

*

Scanned by CamScanner

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान – बढ़ता महत्व एवं रोजगार संभावनायें

"वयं राट्रे जागृयाम पुरोहिता:" – अर्थात राष्ट्र हित करने वाले पुरोहित जागते रहें – इसलिए यजुर्वेद के अध्याय 22 के 22वें मंत्र में, ऋषि उवाच है – मेरे राष्ट्र के ज्ञान प्रदाता बुद्धिजीव :– ब्रह्मवर्चस्व से ओत–प्रोत हों लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में ज्ञान की भूख तथा आवश्यकता जन–जन में फैल गई है । इसकी पूर्ति कैसे संभव होगी ?

ज्ञान को माध्यम, संचार वाहक कौन है ? भोज–पत्र लेखन से छापेखाने (पुस्तक प्रकाशन) तथा कंठस्थ मंत्रों के गुरु शिष्य परम्परा से संचार के आधुनिक साधनों तक पुस्तकालयों ने लम्बी यात्रा की है ।

स्टोन एज (पाषाण युग) से विकास प्रक्रिया आज आइस ऐज तक आ पहुँची है । आई०सी०ई० अर्थात् इनफोर्मेशन कम्यूनिकेशन एण्ड एजूकेशन एज (युग)– अब शिक्षा और संचार में सूचना जुड़कर बहुत बड़ी शक्ति बन गई है । पुस्तकालय विज्ञान ने इस महत्व को स्वीकारते हुए नामकरण किया है – पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान । इसमें पुस्तकालय के लिए पुस्तकों की व्यवस्था, रखरखाव के साथ सूचना प्रबन्धन को विशेष महत्व दिया गया है । पुस्तकालय विज्ञान में इन सबका अध्ययन होने के कारण, इस विषय की महत्ता कई गुना बढ़ गई है । व्यापारी हो, वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, सरकारी कार्यालय, सार्वजनिक संस्थान, हर विभाग, हर कार्यालय में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की जानकारी काम आ रही है । रोजगार के साधन के रूप में भाग निरन्तर बढ़ रही है ।

आज सामान्य पुस्तकालयों के साथ वी०डी०ओ० लाइब्रेरी, कैसेट – सी०डी० लाइब्रेरी, कम्प्यूटर लाइब्रेरी जैसे सूचना संग्रह के कई तंत्र कार्य कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त सभी सरकारी संस्थानों, निजी क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्रों, सार्वजनिक सेवा–संस्थानों आदि में सन्दर्भ सेवा विभाग (रेफरेन्स सैक्शन) भी होता है । इन सभी में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है । इस प्रकार पुस्तकालय विज्ञान केवल पुस्तकालयों के संचालन, व्यवस्थापन की कला ही नहीं, अपितु सभी उपलब्ध सूचनाओं के प्रबन्धन की कला है ।

Scanned by CamScanner

अब तक पुस्तकालयों, वाचनालयों या संदर्भगृह (रेफरैन्स) का रख-रखाव, संचालन इस विज्ञान की मुख्य विषय वस्तु रही है लेकिन सूचना के नए माध्यम ने इस विषय के क्षेत्र में पर्याप्त विरत्तार किया है। सी०डी० रोम, इंटरनेट, फ्लॉपी, डिजिटल कैमरे, फोटो फिल्म, स्लाइड्स जैसी आधुनिक मीडिया से जुड़ी विभिन्न सामिग्रियों का व्यवस्थित संग्रह पुस्तकालय में होता है। केवल पुस्तकों, प्रलेखों या सूचना सामिग्री का संग्रह ही पुस्तकालय का काम नहीं, अपितु ऐसा व्यवस्थित संग्रह करना है, जिससे आवश्यकतानुसार वांछित सामिग्री तुरन्त उपलब्ध हो जाए।

पाठकों को पुस्तक सम्बन्धित सामिग्री देने व लेने की प्रक्रिया का कुशल संचालन सामान्य सेवाओं के अन्तर्गत आता है। वास्तव में पुस्तकालय विज्ञान के कार्य को तीन भागों में बाँटा जाता है- पाठकों को सामान्य सेवा देना, तकनीकी कार्य एवं प्रशासनिक कार्य। इनके लिए पुस्तकों को कई समूहों में विभाजित कर उन्हें पृथक-पृथक नम्बर अंकित करने के लिए दो में से एक वैज्ञानिक प्रणाली को चुना जाता है- कोलन प्रणाली अथवा बिन्दु प्रणाली।

यह तकनीकी कार्य विभिन्न विभागों, विषयों की पुस्तकों के न्यूनतम समय में सरलता से निकालने तथा पाक द्वारा वापिसी पर यथा स्थान रखने की दृष्टि से किया जाता है। इसके अतिरिक्त कतिपय पुस्तकों को अन्य पुस्तकालयों से उधार मंगाकर अपने पाठकों को उपलब्ध कराना, किसी भी विषय पर आधुनिकतम उपलब्ध सामिग्री से अवगत कराना- नवीन पुस्तकों, सूचना सामिग्री की सार-सूचना देना महत्वपूर्ण कार्य हैं। साथ ही आय-व्यय लेखन, बजट बनाना, कर्मचारियों का प्रशिक्षण, कुशल प्रबन्धन आदि कार्य हैं।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में कम्प्यूटर के प्रयोग तथा नई सूचना, तकनीकी की जानकारी आवश्यक हो जाती है। इनमें नेटवर्किंग, डाटाबेस मैनेजमेण्ट तथा इनफार्मेशन सिस्टम की जानकारी तथा पुराने दस्तावेजों के रख-रखाव तथा वर्गीकरण के सम्बन्ध में अर्काइब मैनेजमेण्ट की भी जानकारी दी जाती है। लैमीनेशन या स्कैनिंग जैसी विधियों का ज्ञान भी उपयोगी हो जाता है।

हमारे देश में 294 विश्वविद्यालय, 12342 कालेज तथा 60,000 पुस्तकालय हैं। इन सभी पुस्तकालयों में पुस्तकालय विज्ञान के स्नातक (बी०लिब०) परास्नातक (एम०लिब० एण्ड इन्फॉर्मेशन साइंस) तथा पुस्तकालय विज्ञान में नेट/स्लैट अथवा पी-एच०डी० कार्यरत हैं। विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के लिए

Scanned by CamScanner

अध्यापन के साथ शोध संस्थान तथा उनके अलग–अलग विभागों में सन्दर्भ पुस्तकालय में स्थान होते हैं । स्कूलों में भी एम.लिब., बी.लिब. तथा बुक–लिफ्टर आदि के लिए सी०लिब० (सर्टिफिकेट कोर्स) अथवा पुस्तकालय विज्ञान में 6 माह से दो वर्ष तक का डिप्लोमा करने वालों को रोजगार मिलता है । कोई भी स्नातक एक वर्ष में बी०लिब० तथा किसी भी विषय में एम०ए० करने वाला बी०लिब० में पचास प्रतिशत अंक लाने पर एक वर्ष में एम०लिब० कर सकता है । पुस्तकालय विज्ञान में पी–एच० डी० की सुविधा अनेक विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है । इस क्षेत्र में शोधार्थी तेजी से बढ़ रहे हैं ।

इलैक्ट्रोनिक मीडिया तथा प्रिन्ट मीडिया में प्रकाशित सामिग्री तथा टेप संग्रह के लिए लाइब्रेरी होती है । आंजकल डॉट–कॉम कम्पनियों में भी सूचना विधि के नियंत्रण के लिए पुंस्तकालय एंवं सूचना विज्ञान के विशेषज्ञ रखे जाते हैं । इसके अतिरिक्त अनेक क्षेत्र हैं – निजी संस्थानों एवं निजी कार्यों के लिए भी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के लोगों को रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं तथा इस क्षेत्र में भविष्य में भी रोजगार तेजी से बढ़ने की संभावना है ।

उदारीकरण तथा ग्लोबलाइजेशन होने से राष्ट्रीय तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, टी०वी० चैनलों आदि में भी सन्दर्भ सेवा के रूप में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के छात्रों को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हो रहे हैं ।

उत्तर प्रदेश में 13 स्टेट यूनिवर्सिटी, 107 राजकीय डिग्री कालेज तथा 345 सहायता प्राप्त कालेज हैं । स्ववित्त पोषित कालेज तथा तकनीकी कालेज पृथक हैं । डॉ० राधाकृष्णनन आयोग (1948) ने पुस्तकालय को विश्वविद्यालय सेवा का हृदय बताया था । उत्तर प्रदेश सरकार इण्टर कालेजों में भी पुस्तकालय के महत्व पर ध्यान दे रही है । डिग्री कालेजों में तो उत्तर प्रदेश में यू०जी०सी० के नए वेतनमान लागू होने के बाद से लाइब्रेरियन की नियुक्तियाँ ही नहीं हुई हैं । अतः निंकट भविष्य में पुस्तकालय सेवा में नए रोजगार की प्रबल संभावनाओं को देखते हुए इस क्षेत्र का भविष्य उज्जवल लगता है ।

पुस्तकें सबसे अच्छा मित्र मानी जाती हैं, लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी के युग में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान जीवन का अंग बनने जा रहा है ।

– डॉ० कुसुमलता शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्षा

*

Scanned by CamScanner

माँ सरस्वती पुस्तकालय–उद्घाटन समारोह

प्रवक्ता श्रीमती अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, मुख्य अतिथि प्राचार्या डॉ.मंजू सारस्वत, टी.आर. कालेज अलीगढ़ एवं अध्यक्ष आशा देवी द्वारा दीप प्रज्वलन

सचिव दीपक गोयल, प्रवक्ता डॉ.बी.डी. गुप्ता, अध्यक्ष आशा देवी एवं मुख्य अतिथि प्राचार्या डॉ.मंजू सारस्वत

मुख्य अतिथि प्राचार्या डॉ.मंजू सारस्वत द्वारा सम्बोधन

महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गान

प्राचार्य, सचिव, अध्यक्ष हवन करते हुए

Scanned by CamScanner

पुस्तकालय का महत्व

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इस संस्था ने 'पुस्तकालय उद्घाटन' के इस सुअवसर पर मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में याद किया। इसके लिए मैं सहृय आभार प्रकट करता हूँ।

एक लम्बे समय तक मेरा सम्बन्ध पुस्तकालय विभाग से रहा है। अतः अपने इसी अनुभव के आधार पर मैं यह कहना चाहूँगा कि कोई शिक्षा संस्था यदि विद्या मंदिर है तो पुस्तकालय उसका हृदय अर्थात् प्राण है। पुस्तकालय वस्तुतः ज्ञान अर्जन करने का मंदिर है, सरस्वती सदन है। पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य पाठक की मौखिक जिज्ञासा की पूर्ति करना और अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाना है। पुस्तकालय केवल पुस्तकों के आदान–प्रदान का ही कार्य सम्पन्न नहीं करता है अपितु जिज्ञासु के ज्ञानवर्धन में अपनी भूमिका निभाता है। ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले अन्वेषण, शोध आविष्कार और विकास सम्बन्धी नई–नई सूचनाओं से पाठक को अवगत करता है। अर्जित किया हुआ समस्त ज्ञान पुस्तकों में उपलब्ध है। पुस्तकें ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन और माध्यम होती हैं। हमारे ऋषियों, मुनियों, दार्शनिक और वैज्ञानिकों का अनुभव, शोध, ज्ञान सव इन पुस्तकों में संग्रहित है। पुस्तकों के गहन अध्ययन से शोधार्थी, जिज्ञासु अपनी ज्ञान पिपासा शान्त कर सकता है। वर्तमान ज्ञान की नई खोज की जानकारी भी पुस्तकों और पत्रिकाओं से ही प्राप्त होती है। अतः पुस्तकालय वस्तुतः ज्ञान का भंडार है। ज्ञानार्जन के मुख्य उद्देश्य से पाठक पुस्तकालय में अध्ययन कर अपने समय का सदुपयोग कर सकता है।

यह दुनियाँ जब से कायम है, तभी से मनुष्य ज्ञान अर्जन की खोज और संग्रह में संलग्न रहा है। उस ज्ञान के संवर्धन के लिए हर युग में परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक उपाय करता रहा है। जब कागज और प्रिंटिंग मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था तब भी ज्ञान संग्रह के लिए अन्य–अन्य उपाय होते रहे हैं। इसके साथ ही पुस्तकालय का स्वरूप भी बदलता रहा है। कागज तैयार होने पर और प्रिंटिंग मशीन के आविष्कार के बीच पुस्तकें हाथ

Scanned by CamScanner

से लिखी जाती थीं। उस समय राजघरानों में अथवा विद्वानों के निजी पुस्तकालय होते थे। सामान्य व्यक्ति अर्थात् जन साधारण उन पुस्तकों का उपयोग नहीं कर सकता था। आज परिस्थिति बदल चुकी है। आज आवश्यकतानुसार हर जगह पुस्तकालय स्थापित हो रहे हैं। आज पुस्तकालयों का जाल सा बिछा हुआ है।

जिज्ञासुओं के ज्ञान संवर्धन हेतु केन्द्रीय पुस्तकालय, प्रदेश पुस्तकालय, जिला और नगर पुस्तकालय, ब्लाक और पंचायत पुस्तकालयों की स्थापना हो रही है। ये सार्वजनिक पुस्तकालय कहे जाते हैं। विशिष्ट पुस्तकालयों में व्यावसायिक, अस्पताल, कारागार, नेत्रहीन, बाल पुस्तकालय आदि विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित हैं। डॉ० रंगानाथन ने भारत में ऐसे पुस्तकालयों को स्थापित करने के लिए विशेष प्रयास किये हैं। ऐकेडेमिक लाइब्रेरीज़ में स्कूल लाइब्रेरी, कालिज लाइब्रेरी और यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी आती हैं।

आपके महाविद्यालय में 'माँ सरस्वती पुस्तकालय' की स्थापना करके आपके प्राचार्य महोदय ने सही समय पर सही कदम उठाया है। सही समय पर सही कदम उठाना ही विद्वान् की पहचान है। इस पुस्तकालय की स्थापना से इस कालिज का शिक्षा स्तर ऊँचा उठेगा। विद्वान् शिक्षक और छात्रों का ज्ञान बढ़ेगा, प्रतिभा का विकास होगा और इसके साथ-साथ उत्तरोत्तर इस 'ज्ञान महाविद्यालय' का नाम रोशन होगा।

वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार छोटे बच्चों को चलाने के लिए लकड़ी या प्लास्टिक की गाड़ी (Walker) की आवश्यकता होती है। जब वह चलने लगता है तो दौड़ने के लिए उसे स्वयं प्रयास करने पड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार महाविद्यालय स्तर पर शिक्षक छात्र को अध्ययन के लिए निर्देश (Guide) ही करते हैं। अब यह छात्र का दायित्व बनता है कि उसको पूरा करने के लिए तथा कम्प्टीशन में आगे बढ़ने के लिए पुस्तकालय जाकर वहाँ गहन अध्ययन करे। आधुनिक युग में केवल कक्षा की शिक्षा से उद्धार नहीं हो पाता। विद्यार्थी को स्वयं परिश्रम करना ही होगा क्योंकि आज का युग प्रतियोगिता का युग है।

ज्ञान असीमित और अगाध है। इस कम्प्टीशन के युग में आगे बढ़ने की होड़ लगी हुई है। ज्ञान की शाखाएँ और प्रशाखाएँ तथा विषय अनन्त हैं। विषय सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म की ओर

Scanned by CamScanner

बढ़ता जा रहा है। महाविद्यालय स्तर पर अध्ययन का दृष्टिकोण विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक होता है। महाविद्यालय पुस्तकालय में पाठ्य सामिग्री पाठ्यक्रमों के आधार पर संग्रह की जाती है। इसके अतिरिक्त शोध विषयक सामिग्री भी पुस्तकालय में होती है। सन्दर्भ ग्रन्थ, शोध स्तर के सामान्य ग्रन्थ और पत्र–पत्रिकाओं का संकलन होता है। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि ज्ञान संवर्धन का एक मात्र स्थान एवं माध्यम पुस्तकालय ही है। अध्येता को पुस्तकालय से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। पुस्तकालय में आत्मनिर्भर होकर गहन अध्ययन करने से युवक और युवतियों की प्रतिभा का निरन्तर निखार होगा, ज्ञान में वृद्धि होगी और किसी कम्प्टीशन के लिये सक्षम होंगे। छात्र ही नहीं विद्वान् शिक्षकों को भी और अधिक परिपक्वता लाने के लिए पुस्तकालय का सदुपयोग करना चाहिए। ऐसा कहा भी जाता है कि किसी संस्था का स्तर उसके पुस्तकालय से ज्ञात हो जाता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और उसका पुस्तकालय एक अच्छा उदाहरण है। इस पुस्तकालय में बिना किसी भेद भाव के अर्थात् निष्पक्ष भाव से प्रत्येक पाठक की अविलम्ब सेवा प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय के पुस्तकालय में टैक्नीकल कार्य के साथ–साथ संदर्भ सेवा भी मनोयोग से प्रदान की जाय तो पाठकों को और अधिक सन्तुष्टि होगी। यदि जागरूकता से अविलम्ब, सेवा प्रदान की जाये तो निश्चित रूप से पाठक की रुचि पुस्तकालय में अध्ययन की ओर बढ़ेगी और अपने खाली समय (पीरियड) में पुस्तकालय का सदुपयोग करेगा और करना भी चाहिए। यदि सेवा से पाठक सन्तुष्ट न हुआ तो पुस्तकालय का महत्त्व ही घट जायेगा और इसके साथ ही संस्था का स्तर भी। वास्तविकता यह है कि ज्ञान संवर्धन में शिक्षण और पुस्तकालय सेवा दोनों का दामन–चोली जैसा सहयोग होता है।

लाइब्रेरियन को सदैव जागरूक, ईमानदार, मृदुभाषी, निष्पक्ष और सेवाभावी होना चाहिए। किसी के दबाव अथवा प्रलोभन से की गई सेवा से पुस्तकालय की छवि उज्जवल नहीं होगी।

अन्त में मैं पुस्तकालय की सफलता के लिए अपनी शुभकामनायें प्रदर्शित करता हूँ।

– डॉ० शिवदत्त शर्मा
भू.पू. डिप्टी लाईब्रेरियन
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

*

Scanned by CamScanner

INDIA : A Multifaceted Destination

India, a land of increadible contrast, geography and climate contribute in no small measure to from cultural contours. India is a land of exotic physical veriety. It ranges from world highest chain of mountains the Himalayas to luxurient valleys, dense jungles, arid deserts and swampy lands that lie below sea level.

The foregn elements in Indian society were encouraged to preserve their identity and find their own levels which explain the ennumerable religious practised in India. India an unusual cultural melting pot into which has been poured wave after wave of influences, each discovering its place in the varied mosaic culture.

India today reflects a culmination of the ancient civilisation that gave us strengths. The ancient city of Varanasi is probably the oldest city in the world. It was a thriving religious and commercial centre. Similarly, Khajuraho, Fatehpur Sikri and Agra stand testimony to the great influences that came to India.

Thousand years of history & culture have created our cities, temples, mosques, forts, places that evoke in today's Indian an enormous pride.

The eternal beauty of the Taj Mahal is ageless, while the edicts and stupas from the Mauryan age stand testimony to the enlightened vision of a glorious era. Rock cut temples and mural paintings at Ajanta and Ellara; the magnificent heritage of the chola and pallava kings; the thirteenth century Sun temple at Konark; an exquisite tradition of architecture set by Mugal emperors and the great places and forts across the country are the reflections of a magnificent civilisation. These provide India with the spiritual joy of belonging, a reminder of glorious heritage.

Apart from ancient cities and monuments, India has great number of exquisite flora & fauna. Wildlife sanctuaries contrinue to provide the green long for health environment. The conservation of wildlife and environment has assumed great importance in India. Today, in India tiger population has increased in appreciative numbers in various sanctuaries. The best place to view tiger in the nature is in Rantham bore of Rajasthan. Periyar in Kerala is natural habitat of the Asiatic elephants. Rajasthan's Bharatpur bird sanctuary is spectacular for

Scanned by CamScanner

migratory birds. Kaziranga in Assam provides best view for single horn rhinocerous.

In addition to these parks, India is blessed with an in comparable natural beauty. This enables visitors to enjoy the adventure of mountain climbing, trekking, skiing and walking on high mountain shopes and esotic valleys covered with beautiful wild flowers. Fishing and river rafting on the swift flowing rivers gives one the thrill of exploring Gulmarg in Kashmir is Indias finest ski resort. Mountaineering in the himalayan range, trekking in the lush·green valley of Kashmir, Himachal Pradesh, Garhwal and Kumaon, hand gliding over the western Ghats offer exciting experiences, fun and pleasure. Exploring the great Indiar thar Desert on camel back brings alive the fantasy of the Arabian Nights. And from mirages in the desert to the thrill of scuba diving in the Andaman and Nicobar Islands where a wealth of marine life leaves one truely breatheless. Sailing off at Bombay harbor is a life long experience, surfing on the lakes of Kashmir is purely joy, yatching in Nainital has a dream like quality and white water sports on the mighty. Indian river is almost a spiritual wonder.

India is a land of festival and tradition, a contineous celebration of life. Festivals are extravagance of emotion, a respect to all seasons nature and belief in the inborn peace and goodwill of man. In India festivals regulate the daily life and activity.

The most widely celebrated Hindu festival is Diwali, which comes after the moonsoon and after called festival of Light.

At this occasion, people worship the goddess of wealth, Lakshmi and fire crackers, traditional oil lamps and new clothes mark this celebration.

Many diverse faiths like Islam the second largest religion of India. Buddhists, Jainis, Sikhs and christian celebrate their festivals in close harmony with environment.

Fairs or Melas are another attraction of India. A variety of traditional handicrafts displays on sale attract crowds.

The Surajkund craft Mela and the Taj Mahotsav is held annually in february in tradional atmosphere at Surajkund near Delhi and Agra. Pushkar Fair in Rajasthan is one of the largest cattle fairs in India.

There are many faces of India that remain exciting and challenging, a harmoneous, a puzzling complexity, a unique diversity.

- Dr. Jugendra Kr. Sharma

*

Scanned by CamScanner

India

Definition :

The area of the continent that lies south of the Himalayas is called Bhartvarsh. It is also called Aryavrat, a land of Aryans, as referred in the Rigveda. During Muslim rule, Arabs called us Hindus which was their localised pronounciation of the word Sindu (inhibitants of the Sindu river area). Accordingly, the country of Hindus was called as Hindusthan (isthan) which subsequently became Hindustan (istan) due to speaking convinience of the Muslims. During British rule, English people used to call river Sindu as Indus and termed the Land of Indus as India and the people of India as Indians.

History :

Foreigners wrote the history of India by mentioning the rulers only and that too according to their taste and convinence. The true history of India is not only the history of its rulers but it includes a long unbroken continuity of Indian civilisation. The fact that India is a place which has been least affected by the natural calamities and disasters, the Indian history survived from the very begining of the human civilisation on the earth, whereas, the history of other countries may not be older than 6000 years.

Indian history is the description of sages, rishis, saints, devine personalities, philosophers, music and ayurvedic scholars, and also the kings who rule small and big pockets on this pious land. It is all described in Vedic literature and purans.

Vedic literature :

There are four vadas : Rigved, Yajurved, Samved, and Atharvaved; having many branches (Upnishads). Vedas have sociology, science of defence, music, medicine, astrology, sanskrit grammer, dictionary etc. Vedas have been since the advent of human civilisation and have been reproduced from time to time; latest reproduction being 5000 years ago by Ved Vyas. Ved Vyas lived during the time of king Santanu, the grand father of Pandavas. Krishan Dvaipayan was his real name and 'Vyas' was his title due to his profession of reproduction history. Vyas was the son of sage parashar and lived some time at Badrikashram area of Himalayas.

Besides Vedas and Upnishads, Mahabharata was also composed by Vedvyas. Verbal

Scanned by CamScanner

recitation was the only means for transmiting the texts from one generation to another. The latest verbal recitation was done by Sankadik in 2842 B.C.; 260 years after the begining of Kalyug. After this time, the ancient texts were written on Bhojptra-a bark of a native tree of the Himalayas.

The mahabharata war took place in 3139 B.C. which shattered many civilisations of India and as a consequence, big patches of northern India became barren lands. There were no roads in those days and so communication among small kingdoms was bleak. In that situation, the people, living in different locations of India, developed there own culture and language. Gradually Brahmi script and Pali language developed in India. Pali language was used extensively by Budhism. Sanskrit language with several variations-local or classical-was used at the main certres of Vedic civilisation, namely Mathura, Kashi, Prayag, Ujjain etc.

People living (2700 - 2500 B.C.) around Sindu river developed their own civilisation which was later recognised as Harappan civilisation.

Vedas and Upnishads : Each of the four Vedas have three sections: (1) Mantra or Sanhita, (2) Brahman, and (3) Aranyak. Mentras invoke celestial gods for Yagna (fire ceremony). Brahman section describes the process of yagya. Aranyak tells about God and devotion. Thus, there were two ways to worship : (i) Yagya to worship gods for material benefits, such as yagya for god Indra for rains and (ii) Devotion to worship God (Nirakar Brahma) for liberation (Moksha). Aranyak section of Vedas is called Upnishad also.

(i) Yagya type of worship : In this type of vedic worship celestial gods are evoked during yagya. There are 33 gods. Eight vasus, eleven rudras, twelve adityas, god Indra, and god prajapati. Vasus are : agni, prathvi, vayu, antarikch (god of space), aditya (sun god), dyo (god of sky) chandrma, and nakchatra (god of asterism). These gods are associated with material nature and are evoked during yagya for the gifts from nature. These gods have no concern with God realisation (Moksha).

(ii) Devotion type of worship : Upnishads recommend devotion to Nirankar God as means for liberation of soul from the bondage of Maya.

(a) Nirankar God : God is the devine personality whose prime

Scanned by CamScanner

quality is formless (nirakar). God is prevalent on its three dimensions, namely space, time and consciousness; holding the universe within himself with the help of his three energies, gravitational force, electrical force and magnetic force.

God has three functions : Brahma (creation, reproduction), Vishnu (preservation) and Shiva (destruction, death). For example, all living beings take birth (Brahma), grow and prosper (Vishnu) and then die (Shiva). In puranic period (200 B.C. to 100 A.D.), Vyas and other Brahmin scholars personafied these three functions of God as god Brahma, god Vishnu, and god Shiva respectively. Purans were written to glorify not only these three gods but also their families. Brahma was associated with godess Saraswati, Vishnu with Lakshmi and Shiva with Parvati and her nine dimensions, nava-durga and her sons, god Ganesh and god Kartikey.

(b) Soul : Soul is inherent within a body and so it is called as Jiva-atma. Jiva-atma is affiliated with Paratma (God), so it is also consciousness with its three properties, gravity, electricity and magneticism.

(c) Maya : It is lifeless power of God which has three traits (qualities) : Sattava, (enlightenment, but with ego), Rajas (dutyful but with selfish motive), Tamas (obedient but dull and lethargic). Every human sufferes from one of the gunas (qualities) of Maya. Freedom (liberation) from ego, selfishness and dullness is the aim of our life.

According to Upnishads, the purpose of human life is to lead a Mukta-life (liberated life) which in turn leads one to Moksha (union with God) through meditation. Moksha liberates the soul from the cycle of birth and death.

Purans : Purans were compiled earlier but rewritten by Brahmins in classical sanskrit during the rule of Gupta dynasty (4th to 6th century A.D.) in northern India. Atleast 18 Purans were compiled. In order to introduce 'Bhakti' (surrender to god) to the way of worship, theory of incarnation was developed.

Theory of Incarnation : Vishnu god is a heavenly being who periodically descends to worldly life-dasha-avtar (the ten forms of god). This ancient theory of India reminds the theory of evolution developed by Darwin in West which traces the evolution of species from fish-like forms to humans. According to Dash-avatar theory, Vishnu god incarnated earliest as Matsya avtar (fish), then Kurna

Scanned by CamScanner

(turtle) and so on, Varah (boar), Narsinha (half-man), Vaman (dwarf sized young Brahman), Rama (Grahstha Kshchatriya), Krishna (Yogiraj/Kshatriya) Budha (detached Kshatriya)

Dashavtar theory should be taken as more appealing than the Darwin's theory of evolution, as Darwin limited evolution to only Physiological level where as Puranic theory goes beyond physical level and reaches to emotional level (parushram avtar), social level (Ram avtar) and ultimately spiritual level (Krishna and Budh avtars); those who are spiritually 'fittest' survive and preserve their progeny. The tenth incarnation 'Kalki' is the Kalyug descent of Vishnu god. He may be Mahatma Gandhi (non-violent vaishey).

We are the only people in the world who still now direct our all religious rites to Vedic gods (Devtas) and Puranic Bhagwans (avtars) and we should be proud of maintaning the conitinuity of our old civilisation.

- Dr. B. D. Gupta
Ex-Member,
U.P. Higher Edu. Serv. Comm.
Member,
Gyan Mahavidhyalaya Managing Committee

*

Rules of Living

Never put off till tomorrow what you can do today.

Never trouble another for what you can do yourself.

Never spend your money before you have it.

Never buy what you do not want because it is cheap.

Pride costs us more than hunger thirst and cold.

We seldom repent having eaten too little.

Nothing is troublesome that we do willingly.

How much pain the evils have caused us that how never happened !

Take things always by the smooth handle.

- Faraz Uddin
Ex. Student

*

Scanned by CamScanner

Friend and Friendship

It is very difficult in the world
To find a friend who is your always
So if you get one do not treat him
A passer by crossed on roadways

Love a friend more than silver
Love a friend more than gold
True friendship is the only treasure
Which cannot over be sold

It is a blooming season which provids
Beauty and fragrance to your life
It consols you in your bad days
As a great teacher and a sincere wife

By god's grace I found a friend
Who was very helpful and dear
After a fragment of time know
My friend was transfered else where

I thought it was the end of the beginning
For her it was the start of a feeling
That solidates me's grip on life
For friendship tests on many a strike

True friendship does general & patience
True friendship awokens mind
True friendship brightens the soul
And updates those who are left behind

- Ashok Km. Yadav
Ex. Student

✳

Our Last Wish

When we die bury us deep four feet down fast sleep place our chemistry book on our head, tell sir sharma we are dead.

Place our Botany book on our chest.

Tell Ms. Sandhaya we are at rest. Place our Zoology book on our left,

Tell Mrs. Seema we tried our best.

Place our Computer book on our shoulder.

Tell Ms. Shikha, it has dissolved-our Bunder

Tell these teachers not to cry,

for they are the one who make us die.

We hope our teachers will understand,

At this painful junction we stand.

- Priyanka Gaur
Ex. Student

✳

Scanned by CamScanner

Jokes

1. The film 'Bhookamp" (Earthquake) was wideling adverlised on roadside hoordings. Unfortunately the signboard painter gave a new twist to the title of the film by splitting the word into two : it read Bhooka (hungry) M.P.

2. The boss asked a clerk working in his office, 'Why did not you take leave due to you this year ? 'sir; replied the clerk, 'I needed some rest:

3. Mrs. Santa was travelling by a DTC bus with her nine children who occupied seats all over the bus. An irate lady passenger admonished her : 'Behenji', apnee & raizgaree sambhaal leejiye'. (Please collect your small change).

   Mrs. Sants snapped back : 'Aisey lagta hai abhee aap ka nate toota nahin; (It appears your currency nats is still intact).

4. Written or the back of a Delhi three - wheelar :
   100 mein 80 beimaan,
   Phir Bhi mera Bharat Mahaan.
   Sanjhe ?

   It doesn't translate well in English, but it is very patriotic!

5. Mrs. Banta knitted a sweater and sent it to her husband by parcel post. With it she sent the following note : 'I have removed the buttons as they are too heaving and would add to the price of postage. You will find them in the right hand pocket of the sweater:

6. A lady went to a TV shop to buy a set. The shop Balesman, while recommending a particular set, emphasised the joys of remote control. It would naturally cost her more than the ordinary set, but it would be worth it just to relax in her armchair, slicking through a multichannelled set.

   'Listen, Son,' The lady replied. 'I don't need a remote control. With six children, may chances of controlling my TV are already remote. I will have the standard set, please:

Scanned by CamScanner

7. Our friend's daughter got married during her last year in college. The day she gave birth to her first child, her university results were also declared and she secured first position in the class.

Some of her classmates brought a large bouquet to the nursing home to congratulate her on her brilliant success, as well as on delivering a bonny baby. On a small card pinned to the bouquet was written in a neat hand: 'Congratulations, Rekha. We knew you HAD IT IN YOU !'

8. TEACHER : What is the sciencetific formula for water ?

Bright Pupil : 'H.I.J.K.L.M.N.O.'

Teacher : 'Nonsense ! How did you arrive at that ?'

Bright Pupil : Auntie, it is H & O (H_2O) !'

- Shwet Kumar
Ex. Student

✳

Believeness

I u believe yourself so u can do anything everything is possible for u when you believe your spirit. Nothing is impossible because impossible means. I am possible. So never think about the impossible only think PCS the mean of these word possible confidence and success. So any time, any where, do dare anything but take care. Believe means "Courageous and and Dare."

Whenever you feel you are lossing your power & courage than u should feel that "I am best. I can do anything. I can change the word and I have dare to do anything this time is not wastage. U are made for only do more and more, your path is waiting for U. Your glorious feture is inviting u for your bright carrer. Every body, who is important in your world, they are longly waiting for your success. So never waste your time, consider about P.C.S. "do dare write believe."

- Rahul Gupta
B.Com. (IInd Year)

✳

Scanned by CamScanner

Smile

A smile costs nothing, but it creates much.

It enriches those who receive it without impoverishing those who give it.

It happens in a flash, and the memory of it may last forever.

None are so rich that they can get along without it, and none so poor that they can not be richer for its benefits.

It creates happiness in the home, fosters goodwill in a business, and is the countersign of friends.

It is rest to the weary, daylight to the discouraged, sunshine to the sad, and nature's best antidote for trouble.

Yet it can't be begged, bought, borrowed, or stales for it is something that is worth nothing to anyone until it is given away.

In the course of the day, some of your acquaintances may be too tired to give you a smile. Give them one of yours. No body needs a smile so much as those who have none left to give.

Cheerfulness flows from goodness. A smile can be fake or genuine. The key is have a genuine one. It takes more muscles to frown than to smile. It is easier to smile these frown it improves face value. A smile is contagious and is an inexpensive way to improve looks. A smiling face is always welcome. Who likes to be around a grouch ? No one, except may be a bigger grouch. A warm sincere smile shows through just like an insincere one.

- Vikas Juneja
Ex. Student

✳

A Teacher

T A Teacher is the 'TORCH' of know large.

E A Teacher 'ENLIGHTENS' the mind of his taught.

A A Teacher always 'ADMONISHES'.

C A Teacher gives 'CLARITY' to the mind of a child.

H A good teacher is like a 'HEAVENLY-ANGLE' to his students.

E A Teacher helps luman to be 'ELITE'.

R A Teacher makes his faught 'RATIONAL'.

A Teacher is the best creation of the God on the earth.

- Km. Durgesh Sharma-II
B.Ed.

✳

Scanned by CamScanner

Chartered Accountancy

I thank Gyan Mahavidyalaya College for giving me this opportunity to communicate and share with all of you my views on the Chartered Accountancy course. I also take this opportunity to thank God, my parents, seniors and friends, to whom I owe my success. Chartered Accountancy is as much as examination of your mental toughness of your knowledge about the subjects. The time that you give for your studies is never enough. The important thing is how judiciously you utilise it. You have to determine a strategy for each subject. You have to find out what are your weak areas and also the ways to tackle them. You should make a proper time table, set targets and try the best to achieve.

You should decide at the outset, the books, materials that you are going to refer. You should also keep yourself updated and aware fo the latest pronouncements issued by the Institute from time to time and also of the amendments in various statutes. Your studies should be complemented by use of other material of the Institute like suggested answers, compilations, revision, test papers etc.

To sum up, it is very important to believe in yourself and never give up. At the end of day, you should be satisfied that you gave it all you had in your self believe me this is more satisfying than the final result.

ABILITY + DETERMINATION + WORKRATE + TECHNIQUE + COMPETING WITH YOUR SELF = ACHIEVEMENT

WINNERS DON'T DO DIFFERENT THINGS BUT THEY DO THE THINGS DIFFERENTLY

- Sumit Manglam
Ex. Student

*

Scanned by CamScanner

छात्र-संघ 2004-2005

1.	श्री आशीष कुमार शर्मा	अध्यक्ष	निर्वाचित
2.	श्री रोहित सिंह	कार्यकारी अध्यक्ष	मनोनीत
3.	श्री राम बाबू	महामंत्री	निर्वाचित
4.	मौ. सलीम	वरिष्ठ महामंत्री	मनोनीत
5.	श्री गौरव गौतम	कनिष्ठ महामंत्री	मनोनीत
6.	श्री मेहरोज सरदार	कक्षा प्रतिनिधि (बी.कॉम. फाइनल)	निर्वाचित
7.	मौ. नदीम	कक्षा प्रतिनिधि (बी.कॉम. द्वितीय वर्ष)	निर्वाचित
8.	श्री सचिन भार्गव	कक्षा प्रतिनिधि (बी.कॉम. प्रथम वर्ष)	निर्वाचित
9.	श्री देवेश रावत	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.-सी. फाइनल, पी.सी.एम.)	निर्वाचित
10.	श्री सिंह वीर प्रताप सिंह	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष, पी.सी.एम.)	निर्वाचित
11.	श्री कृष्ण कुमार कश्यप	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.-सी. प्रथम वर्ष, पी.सी.एम.)	निर्वाचित
12.	कु. फलक नाज	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.-सी. फाइनल, जैड.बी.सी.)	निर्वाचित
13.	श्री सोनू कुमार	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.-सी. द्वितीय वर्ष, जैड.बी.सी.)	निर्वाचित
14.	श्री राजकुमार	कक्षा प्रतिनिधि (बी.एस.-सी. प्रथम वर्ष, जैड.बी.सी.)	निर्वाचित
15.	श्री आकाश शर्मा	(बी.एस.-सी. द्वितीय वर्ष, जैड.बी.सी.)	मनोनीत
16.	कु. रीतू सिंह	(बी.एस.-सी. द्वितीय वर्ष, जैड.बी.सी.)	मनोनीत
17.	श्री अनुभव मित्तल	(बी.कॉम. द्वितीय वर्ष)	मनोनीत
18.	श्री सौरभ गिरि	(बी.कॉम. प्रथम वर्ष)	मनोनीत
19.	कु. प्रियंका गौड़	(बी.कॉम. फाइनल)	मनोनीत
20.	कु. गीता धरमानी	(बी.एस-सी. प्रथम वर्ष जैड.बी.सी.)	मनोनीत

Scanned by CamScanner

छात्र-संघ 2005-2006

1.	श्री देवेन्द्र कुमार अग्रवाल	अध्यक्ष	निर्वाचित
2.	श्री धीरेन्द्र कुमार शर्मा	महामंत्री	निर्वाचित
3.	श्री राजीव जौहरी	कोषाध्यक्ष	निर्वाचित
4.	श्री विपिन कुमार शर्मा	कक्षा प्रतिनिधि (B.Com. Ist)	मनोनीत
5.	श्री अभिषेक कुमार भारद्वाज	कक्षा प्रतिनिधि (B.Com. IInd)	मनोनीत
6.	श्री लवनीश जैन	कक्षा प्रतिनिधि (B.Com. IIIrd)	मनोनीत
7.	श्री विपिन कुमार शर्मा	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. Ist (P.C.M.)	मनोनीत
9.	श्री कृष्ण कुमार कश्यप	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. IInd (P.C.M.)	मनोनीत
9.	श्री महेन्द्र कुमार	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. IIIrd (P.C.M.)	मनोनीत
10.	श्री वीरपाल सिंह	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. Ist (Z.B.C.)	मनोनीत
11.	श्री मनोज कुमार	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. IInd (Z.B.C.)	मनोनीत
12.	श्री सुधांशु प्रताप सिंह	कक्षा प्रतिनिधि B.Sc. IIIrd (Z.B.C.)	मनोनीत
13.	श्री अभय शर्मा	सांस्कृतिक समिति B.Com. IIIrd	मनोनीत
14.	कु0 रितु सिंह	सांस्कृतिक समिति B.Sc. IInd (P.C.M.)	मनोनीत
15.	कु0 मीता धरमानी	सांस्कृतिक समिति B.Sc. IInd (Z.B.C.)	मनोनीत
16.	श्री आकाश कुमार शर्मा	साहित्यिक समिति B.Sc. IIIrd (Z.B.C.)	मनोनीत
17.	श्री सतेन्द्र कुमार	साहित्यिक समिति B.Sc. Ist (P.C.M.)	मनोनीत
18.	श्री आलोक कुमार गुप्ता	साहित्यिक समिति B.Com. Ist	मनोनीत
19.	श्री अनुभव मित्तल	खेल समिति B.Com. IIIrd	मनोनीत
20.	श्री विक्रमादित्य	खेल समिति B.Sc. IInd (P.C.M.)	मनोनीत
21.	श्री प्रदीप कुमार	खेल समिति B.Sc. Ist (Z.B.C.)	मनोनीत

डॉ0 योगेश कुमार गुप्ता
चुनाव अधिकारी

Scanned by CamScanner

कालेज का शैक्षिक–भ्रमण

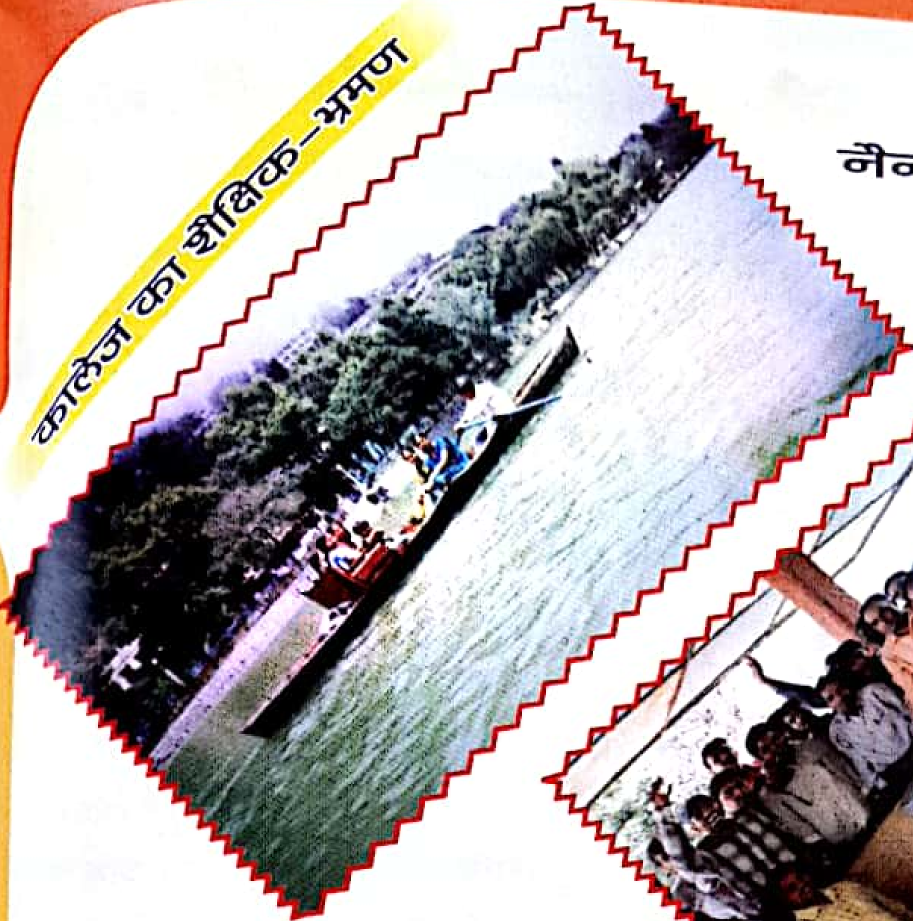

नैनीताल

मंसूरी

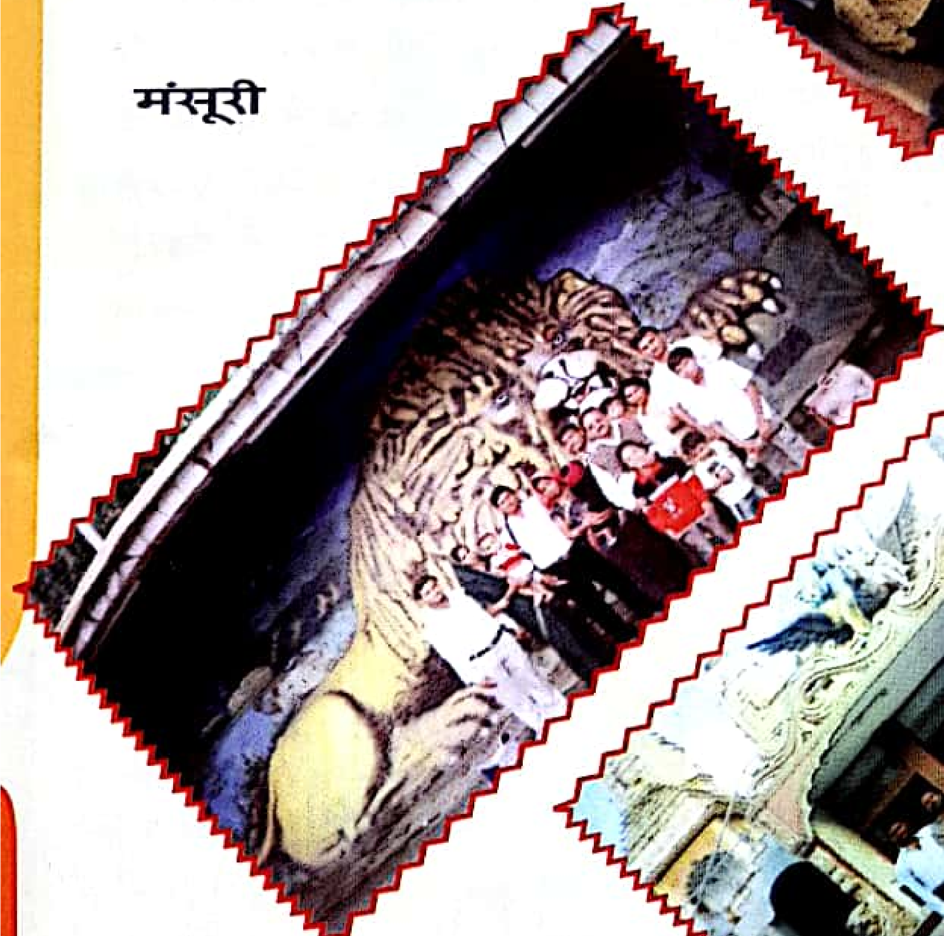

हरिद्वार

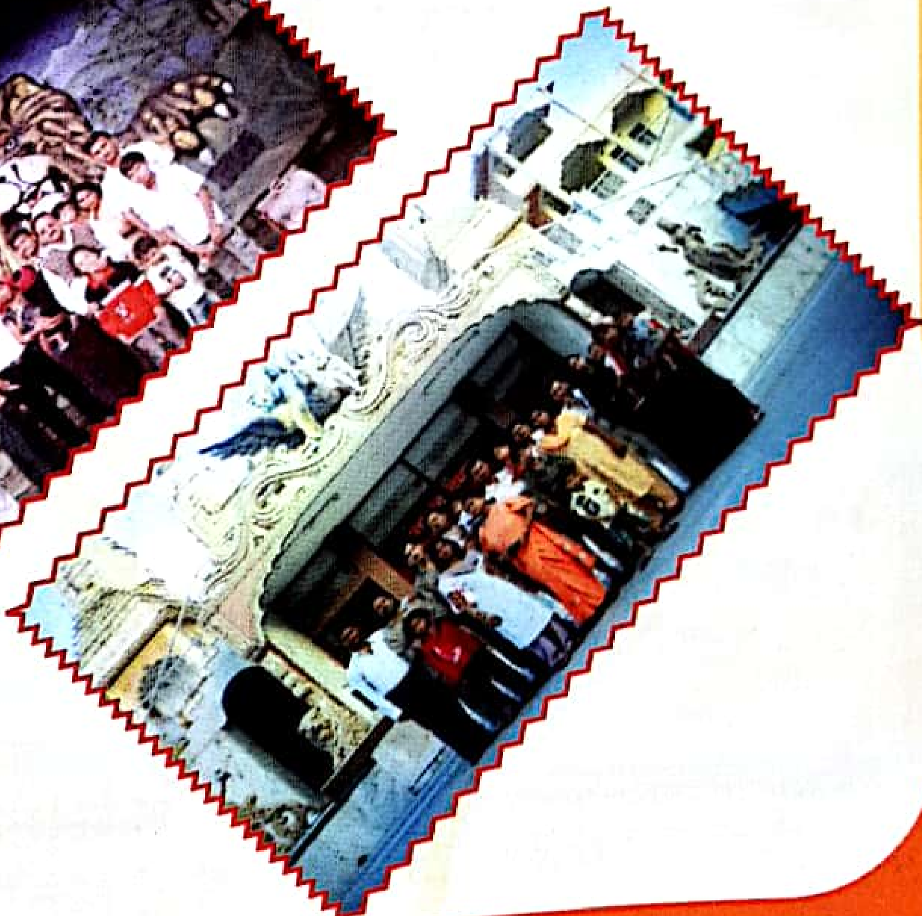

Scanned by CamScanner

शैक्षिक भ्रमण कुमाऊ मण्डल

दिनांक 21 अगस्त 2005 को शाम 6:30 बजे ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ के द्वार से बी०एड० के छात्र–छात्राओं का एक भ्रमण दल ने शैक्षिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से सर्वेक्षण करने के लिए बस द्वारा विभाग के प्राध्यापकों के साथ नैनीताल, रानीखेत (उत्तरांचल) के लिए प्रस्थान किया । वहाँ के मूल निवासियों, शिलालेखों, वर्णित तथ्यों एवं सूक्ष्म विश्लेक्षण के बाद जो जानकारी हमें प्राप्त हुई ।

नैनीताल 28° उत्तरी अक्षांश से 30° उत्तरी अक्षांश तथा 78° पूर्व से 80° पूर्वी देशान्तर के मध्य ऊँची–ऊँची प्राकृतिक प्राचीरों के मध्य एकदम शान्त एवं मनोहर वातावरण में रंगा बसा है ।

नैनीताल की स्थापना बैरन नामक अंग्रेज यात्री ने अनेक प्राकृतिक कठिनाइयों का सामना करते हुये दिसम्बर 1843 में की । बैरन ने अपने रहने के लिए दक्षिणी पहाड़ी पर पिलग्राम नाम का छोटा सा मकान वनाया था ।

नैनीताल का नाम उसके मल्लीताल के दक्षिणी–पश्चिमी किनारे पर स्थित नैना देवी के मन्दिर (नैना) तथा सरोवर (ताल) से मिलकर वना है । यह क्षेत्र 152 वर्ष पूर्व निर्जन क्षेत्र था ।

नैनीताल अलीगढ़ से 353 किमी. तथा दिल्ली–नैनीताल वाया अलीगढ़ 488 किमी. की दूरी पर अवस्थित है ।

जलवायु

नैनीताल की जलवायु समशीतोष्ण है । यहाँ मौसम लगभग समान रहता है । सर्दियों में वर्फ पड़ती है, औसत तापमान 15° से 20° सेन्टीग्रेट के मध्य रहता है । औसत वर्षा 100 से 200 सेमी. होती है ।

प्राकृतिक वनस्पति

नैनीताल के निकटवर्ती पर्वतीय सदाबहार वनों में अनेक प्रकार के वृक्ष एवं छोटी–छोटी वनस्पतियाँ पाईं जाती हैं । इनमें वांच, देवदार, सुरई, पांगर, अयार, ब्रुश, तिलौज तथा यू.के. लिपिस्टिक प्रमुख हैं । यहाँ एक बिच्छू नाम का पौधा भी पाया जाता है, जिसे छूने पर बिच्छू के डंक की तरह पीड़ा होती है । इसके अतिरिक्त सूरजमुखी आदि के छुटपुट फूल भी मिलते हैं ।

मिट्टी

यहाँ पर्वतीय मिट्टी पायी जाती है । जिसमें नमक की मात्रा अधिक होती है । इस मिट्टी का रंग हल्का काला है ।

Scanned by CamScanner

जल संसाधन

नैनीताल में तालों एवं झरनों से प्राप्त पानी का उपयोग किया जाता है। वर्षा काल में मझोड़ा नदी से सिंचाई की जाती है।

पशु–पक्षी

यहाँ मुख्य रूप से गाय, बकरी, भैंस पशु मिलते हैं। पक्षियों का इस क्षेत्र में नितान्त अभाव है, इसका मुख्य कारण इस क्षेत्र में फलदार वृक्षों का न होना है।

वेशभूषा एवं शारीरिक बनावट

यहाँ के निवासी पेन्ट–शर्ट; कुर्ता–पैजामा तथा आध्यात्मिकता से जुड़े व्यक्ति कुर्ता–धोती पहनते हैं। महिलाएं सलवार कुर्ता तथा धोती पहनती हैं।

इनका बदन छरहरा, टांगे मजबूत, चेहरा लम्बा, नाक हल्की चपटी तथा रंग गोरा होता है।

प्रमुख व्यवसाय

यहाँ के अधिकांश व्यक्ति सरकारी सेवा करते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन काष्ठ तथा मोमबत्ती उद्योग प्रमुख हैं।

भाषा

नैनीताल के निवासियों की प्रमुख भाषा हिन्दी है, इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू एवं कुमायूनी भी बोली जाती है।

मानवीय क्रियाकलाप

पूर्णतः प्राकृतिक इस नगर के निवासी अपने क्रियाकलापों के द्वारा इसे बहुत प्रभावित करते हैं। दुर्गम पहाड़ियों को काटकर सड़कों एवं पगडंडियों का निर्माण किया गया है। वैज्ञानिक ज्ञान के प्रयोग द्वारा ऊँची–ऊँची पहाड़ियों में सुचारू विद्युत व्यवस्था है। ऊपर पानी पहुँचाने के लिए वाटर पाइप लाइन बिछाई गई है। पहाड़ी पर शीघ्रता से चढ़ने के लिए विद्युत कृत ट्राली व्यवस्था भी उपलब्ध है।

प्रमुख शिक्षा संस्थान

शेरवूड–: यह दक्षिणी अयांरपाटा पहाड़ी पर स्थित है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन ने इसी कालेज में अध्ययन किया था।

चेतरामशाह ढुलघुटिया कालेज–: यह सरोवर के उत्तरी पश्चिमी पहाड़ी ढलान पर स्थित है। इसके बांई ओर कुछ दूरी पर अशोका टाकीज स्थित है।

सेन्ट्रल तिब्बत डे स्कूल–: इसकी स्थापना तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा ने की थी, यह स्नोव्यू पहाड़ी के ढलान पर सड़क के दायीं ओर स्थित है। इसकी प्रमुख सेविका का नाम सनम है।

Scanned by CamScanner

राजकीय महाविद्यालय-:

यह कालेज कचहरी तथा फांसीघर गधेरा के पास स्थित है। गधेरा में 1857 में रोहिला शासक को फांसी दी गई थी।

इसके अतिरिक्त औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा सौरभ बिज स्कूल प्रमुख शिक्षा संस्थान हैं।

ठहरने के प्रमुख स्थान

सरकारी पर्यटन केन्द्र सूखातल, वैलकम होटल, मानसरोवर, शेरवानी लॉज, प्रेम सरोवर, यूथ हॉस्टल मल्लीताल, शिलवटन होटल, सूखातल, एल्विन होटल माल रोड, ग्रांड होटल, 31 माल रोड आदि हैं।

यातायात के साधन

नैनीताल मुख्य रूप से सड़क यातायात द्वारा जुड़ा है। दिल्ली, बरेली, अलीगढ़, काठगोदाम आदि स्थानों से नियमित बस सेवा उपलब्ध है। रेल यातायात का नजदीकी स्टेशन काठगोदाम है जो लखनऊ, बरेली, आगरा आदि स्थानों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा है।

नैनीताल वायुसेवा द्वारा पहुँचने के लिए पन्तनगर हवाई अड्डा पड़ता है। दिल्ली से पंतनगर वायुदूत सेवा उपलब्ध है। हाल फिलहाल पवनहंस सेवा भी शुरु की गई है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

नैनीताल के मध्य तथा चारों ओर फैली पहाड़ियों में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

1. नैनादेवी मन्दिर

नैना झील के उत्तरी पश्चिमी किनारे पर नैनादेवी मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के परिसर में पर्यटकों की चहल पहल होती रहती है। मुख्य मन्दिर के पास अन्य देवी देवताओं के मन्दिर भी स्थित हैं। नैनाझील में नौकायन करते समय मन्दिर बहुत ही आकर्षक दिखायी देता है।

2. नैनाझील (मल्लीताल व तल्लीताल)

नैनाझील ऊँची-ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है। इसके उत्तर में चीनाश्रेणी 2448 मीटर, पश्चिम में देवपथ की चोटी 2285.7 मीटर, दक्षिण में अयारपाटा श्रेणी 2142 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। मल्लीताल व तल्लीताल जल में ड्रामों की संकेत रूप जलसीमा बनाकर विभाजित किया जाता है।

इस झील की लम्बाई 1.5 किमी. चौड़ाई 0.75 किमी. तथा गहराई 34.1 मीटर है। झील के चारों ओर धार्मिक स्थल हैं, जिनमें नैनादेवी मन्दिर, पांषाण देवी मन्दिर, हनुमान मन्दिर, बौद्ध मन्दिर तथा चर्च प्रमुख हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ विभिन्न धर्मावलम्बी निवास करते हैं।

Scanned by CamScanner

झील में देश विदेश के विभिन्न भागों से आने वाले पर्यटकों के नौका विहार के लिए विभिन्न प्रकार की रंग–बिरंगी गद्दीदार तथा पालवाली नौकाओं की सुविधा उपलब्ध है । प्राकृतिक प्राचीरों से घिरे सरोवर में नौकाओं का थिरकना अपने आप में अनोखा सौन्दर्य है । झील का पानी हरा दिखायी देता है, इसका मुख्य कारण पहाड़ियों पर उगे लम्बे–लम्बे वृक्षों की छाया का झील पर पड़ना है ।

3. *स्नोव्यू*

नैनाझील से उत्तर की ओर 2500 मीटर चढ़ाई चढ़ने के बाद 7450 फुट की ऊँचाई पर स्थित इस स्थान पर पहुँचा जा सकता है । पहाड़ी पर 7400 फुट की ऊँचाई पर इन्दिरा काटेज स्थित है । इस काटेज का निर्माण हरदेव जी ने 2 फरवरी 2004 में कराया था । जिस विन्दु पर ट्राली स्टेशन स्थित है, उसे व्यू पाइंट कहते हैं । इसके कुछ दूरी पर श्रीदेव मन्दिर स्थित है । रमणीय प्राकृतिक सौन्दर्य इसे अनूठे दर्शनीय स्थल का रूप प्रदान करता है । श्रीदेव मन्दिर के बांये कुछ कदम की दूरी पर स्नोव्यू दूरबीन कक्ष है । इस दूरबीन कक्ष का निर्माण 1918 में कराया गया था । दूरबीन कक्ष के दाहिने एक शिला पर हिमालय की श्रेणियों को देखने का कम्पास बना है ।

दूरबीन कक्ष से रानीखेत और उस ओर की हिमालयी चोटियों का सुन्दर दृश्य दिखायी देता है । स्नोव्यू से रातीघाट की ओर गहरी घाटी जाती है, पूर्व काल में खेरना से नैनीताल पहुँचने के लिए रातीघाट मार्ग का उपयोग किया जाता था । स्नोव्यू दूरबीन कक्ष से रातीघाट 11 किमी. तथा चाइना पीक 15 किमी. दूर है ।

4. *भीमताल*

भीमताल नैनीताल के उत्तर पूर्व में 15 किमी. की दूरी पर स्थित है । भीमताल झील की लम्बाई 500 फुट, चौड़ाई 1490 फुट तथा गहराई 90 फुट है । वर्षा काल में यह नदी का रूप धारण कर लेता है । इसके पानी को नियंत्रित करने के लिए उत्तर पूर्व में एक अर्द्धचन्द्राकार बांध बनाया गया है जिसे भीम बांध के नाम से जाना जाता है । झील की जल भरण क्षमता 3500 क्यूसेक है ।

भीम बांध ठीक सामने झील में एक वृत्त रूप टापू स्थित है, जिसकी किनारे से दूरी 200 फुट, जल धरातल से ऊँचाई 30 फुट तथा क्षेत्रफल 4000 फुट है । सुन्दर हरे भरे वृक्षों के मध्य इस वृत्त में एक रेस्तरां खोला गया है, जो दूर से देखने पर पालदार नाव सा दिखाई देता है ।

भीम बांध के नीचे घाटी में बायें तट पर भीम मन्दिर स्थित है । इस मन्दिर का

Scanned by CamScanner

निर्माण मार्च 2003 में पूरा किया गया । बाँध से देखने पर यह बहुत आकर्षक दिखायी देता है ।

बताया जाता है कि पूर्व काल में इस क्षेत्र में मल्लाह राजा भीम का राज्य था तथा इसे भीमसिकिल के नाम से जाना जाता है । इसके हिमालयी वन क्षेत्र को सन्टीवन कहा जाता था । भीमताल तथा सातताल के मध्य नलदयमन्ती ताल स्थित है, जो इस बात का प्रमाण है कि नरवर के राजा नल ने औखा के समय अपनी पत्नी दयमन्ती के साथ इस क्षेत्र में निवास किया था । दयमन्ती राजा भीम की पुत्री थी । यहाँ की पूछ कटी मछलियाँ इसकी पुष्टि करती हैं ।

5. *राजभवन*

इसका निर्माण अंग्रेजों ने करवाया था । इसे गवर्नर हाउस के नाम से जाना जाता है । इसमें 113 कमरे हैं । राजभवन दक्षिणी अयांरपाटा श्रेणी पर स्थित है ।

अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल तथा उनकी नैनीताल से दूरी–

नाम	दूरी
टिफिन टाप	04 किमी.
नैना पीक	45 किमी.
वेधशाला	05 किमी.
लेंडस एंड	04 किमी.
किलवरी	08 किमी.
नौकुचीया ताल	15 किमी.
मालवा ताल	29 किमी.
कार्बेट नेशनल पार्क	118 किमी.

प्राकृतिक सौन्दर्य –: चारों ओर ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ, उन पर हरी भरी वनस्पति इस नगर को प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान करती है । सुबह की सुनहरी किरणें जब पश्चिमी ढालों पर पड़ती हैं तो एक अनोखा दृश्य उत्पन्न होता है । छाया वाले पहाड़ी ढाल काले दिखायी देते हैं । ऊपर नीचे घुमड़ाते कपासी बादल और उनसे निकलती सूर्य की छिछली किरण मनमोहक लगती है ।

रानी खेत

रानी खेत, नैनीताल से 71 किमी. भीमताल से 56 किमी. तथा खरेना (कुटौली) से 21 किमी. की दूरी पर अवस्थित है । 12वीं सदी में यह क्षेत्र कत्यूरी राज्य के नाम से जाना जाता था । कत्यूरी नरेश सुधारदेव यहाँ के शासक थे । यह क्षेत्र कत्यूरी नरेश सुधारदेव की रानी का विहार क्षेत्र था, इसलिये इस क्षेत्र को राणी के नाम से पुकारा जाने लगा । कालान्तर में मुख–सुख की दृष्टि से इसका नाम रानी और बाद में कृषि को ध्यान में रखते हुए रानी खेत हो गया ।

Scanned by CamScanner

जलवायु-: यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है औसत तापमान 10^{0} सेन्टीग्रेट से 20^{0} सेन्टीग्रेट रहता है। नैनीताल की तुलना में वर्षा यहाँ पर कम होती है। सर्दियों में हिमपात होता है। यहाँ की स्वास्थ्यप्रद जलवायु एवं ताजे फल विश्व प्रसिद्ध हैं।

प्राकृतिक वनस्पति-: पाइन, ओक, देवदार, सुरी, पापुलर, दमदम, अकेसिया तथा कायफल प्रमुख वृक्ष हैं। यहाँ पाया जाने वाला राज्य पुष्प बुराँस उच्च रक्त चाप के रोगियों के लिये बहुत उपयोगी औषधि है।

पशु-पक्षी-: गाय, भैंस तथा बकरी प्रमुख हैं। जंगली जानवरों में बारहसिंगा तथा बन्दर पाये जाते हैं। प्रायः पक्षी दिखायी नहीं देते।

वेशभूषा एवं शारीरिक बनावट-: यहाँ के निवासी पेन्ट–शर्ट, कुर्ता–पैजामा तथा आध्यात्मिकता से जुड़े व्यक्ति कुर्ता–धोती पहनते हैं। महिलाएं सलवार कुर्ता तथा धोती पहनती हैं।

इनका बदन छरहरा, टांगे मजबूत, चेहरा लम्बा, नाक हल्की चपटी तथा रंग गोरा होता है।

प्रमुख व्यवसाय-: अधिकांश व्यक्ति सरकारी सेवा में लगे हैं। इसके अतिरिक्त सीढ़ीदार खेतों में दलहन, तिलहन एवं सब्जियाँ उगाई जाती हैं। गर्म शॉल उद्योग तथा ताड़ी खेत का शराब उद्योग प्रमुख उद्योग हैं।

खाद्य पदार्थ-: रानीखेत क्षेत्र के व्यक्ति, महुआ, चावल, जौ, गोवी, चना, बाजरा, चौलाई, भट्ट गौहत, उड़द, मसूर तथा राई आदि खाद्य पदार्थों का उपयोग करते हैं।

कृषियन्त्र-: कृषि यन्त्रों में हल, कुदाली, खुरपी, बेलचा, कटारनुमा हेंसिया प्रमुख हैं।

भाषा एवं बोली-: हिन्दी, अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रूप में बोली जाती है यहाँ के मूल वासिन्दे पहाड़ी कुमायूँनी बोलते हैं। जिसे ऐंपण कहा जाता है।

यातायात के साधन-: रानीखेत, मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, दिल्ली आदि नगरों से सड़क यातायात से जुड़ा है। यहाँ का निकटतम हवाई अड्डा पंतनगर है। निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम है।

Scanned by CamScanner

प्रमुख दर्शनीय स्थल

झूला देवी मन्दिर-: इसे दुर्गा माँ के मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण 700 वर्ष पूर्व किया गया था। दुर्गा माँ की भव्य मूर्ति झूले में स्थापित है। मुख्य मन्दिर के बायीं ओर काल भैरों का मन्दिर स्थित है। वर्तमान में यहाँ के मुख्य पुजारी प्रकाश चन्द्र पन्त हैं।

राम मन्दिर-: राम मन्दिर, झूला देवी मन्दिर के ठीक सामने सड़क के किनारे दाँये टापू पर स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण 1985 में मौनी बाबा प्रेमदास जी ने करवाया था। इस स्थान की ऊँचाई 6500 फुट है। मौनी बाबा प्रेमदास एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिसकी दिव्यात्मा और मुखमण्डल का तेज भक्तों को स्वतः अपनी ओर आकर्षित करता है।

मन्दिर परिसर में संस्कृत विद्यापीठ स्थापित है। जिसके वर्तमान प्राचार्य बद्रीदत्त हैं। इसमें संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी तथा गणित की शिक्षा भी दी जाती है।

चौबटिया-: रानीखेत से लगभग 12 किमी. की दूरी पर 6700 फुट की ऊँचाई पर चौबटिया उद्यान स्थित है। इस उद्यान में सेब, अखरोट, बादाम आदि के अनेक बाग हैं। फूलों तथा फलों की नई प्रजातियों की खोज तथा पुरानी प्रजातियों के संरक्षण के लिये, निदेशालय उद्यान एवं प्रसंस्करण संस्थान, श्याम कृषि विज्ञान केन्द्र एवं राजकीय फल अनुसन्धान शाल स्थापित है।

चौबटिया अखिल गार्डन, पुष्प वाटिका की सुरक्षा व्यवस्था उच्च कोटि की है। उद्यान के चारों ओर विद्युत करन्ट युक्त तारों की बाड़ लगायी गयी है, उस पर जगह-जगह चेतावनी बोर्ड लगाये गये हैं।

अन्य प्रमुख दर्शनीय स्थल

अन्य दर्शनीय स्थलों के विषय में 'बॉटनी लैब सुपरना हजर' के सुपरवाइजर अक्ष भट्ट ने हमें निम्नलिखित जानकारी दी :-

1. कालिका मन्दिर
2. चिलिया नोला का संगमरमर मन्दिर
3. रामजी हरबेरियम (रामलाल शाह द्वारा स्थापित जड़ी-बूटियों के लिये विख्यात)
4. गोल्फ का मैदान
5. शीतला खेत
6. द्वाराहाट (कत्यूरी स्थापत्य कला का परिचायक)

Scanned by CamScanner

फॉरिस्ट रेस्ट हाउस-: हिमालय की ओर का मनोहारी दृश्य पर्यटन आवास गृह के पास स्थित फॉरिस्ट रेस्ट हाउस माल रोड से देखा जा सकता है। इस बंगले का निर्माण अंग्रेजों ने 1906 में करवाया था। 1883 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एफ०आर०एच० के इन्चार्ज गोविन्द वल्लभ जोशी ने शिलालेख दिखाकर हमें महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत कराया। एफ०आर०एस० से हिमालय की निम्नलिखित चोटियों का अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है :-

दूना गिरि (7066 फुट), हाथी पवर्त (6727 मीटर), नन्दा घुन्टी (6309 मीटर), त्रिसूल (7120 मीटर), त्रिशूल ईस्ट (7074 मीटर), नन्दा देवी (7817 मीटर), नन्दा कोट (6861 मीटर)

पन्चाकुली-: ये पाँच चोटियाँ हैं –

प्रथम	6355 मीटर
द्वितीय	6904 मीटर
तृतीय	6312 मीटर
चतुर्थ और पंचम	6334 मीटर

प्राकृतिक सौन्दर्य-: रानीखेत को प्रकृति ने अनुपम उपहार से नवाजा है यहाँ का नैसर्गिक सौन्दर्य देखते ही बनता है। हिमालय की ओर से वनस्पति को पार करके आने वाली शीतल पवन, चारों ओर वनस्पतियों से ढका-सजा धरातल और मीठे रसदार फलों की वहार पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। यहाँ के निवासियों के अनुसार सर्दियों में इस नगर का धरातल वर्फ से ढक जाता है।

रानी खेत के सौन्दर्य को देखते ही देखते 12.15 बज गये। पर्यटन आवास गृह आकर सभी छात्र-छात्राओं एवं प्रध्यापकों ने भोजन ग्रहण किया, तत्पश्चात दोपहर 2.20 बजे हमारे दल ने अलीगढ़ की ओर प्रस्थान किया। शाम 7.25 बजे हम काठगोदाम पहुँचे। रात के अंधेरे में हमारी बस हल्द्वानी जाकर रुकी जहाँ रात्रि 12.00 बजे सभी ने भोजन प्राप्त किया। रात्रि 2.00 बजे बस अलीगढ़ की ओर रवाना हुई, सुबह 6.00 बजे बस नरौरा जाकर रुकी। सभी ने गंगा स्नान किया। नाश्ता करने के बाद गाड़ी अपने गन्तव्य की ओर बढ़ी। दोपहर 1.45 बजे बस विद्यालय के द्वार पर जाकर रुकी।

– ब्रजेश कुमार
पूर्व छात्र

*

खेलों की महत्ता

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है । यह व्यायाम के द्वारा ही संभव होता है क्योंकि व्यायाम से शरीर स्वस्थ रहता है । शारीरिक एवं मानसिक दोनों का विकास व्यायाम से ही होता है । खेलों की महत्ता आज ही नहीं बल्कि प्राचीनकाल से ही चली आ रही है । पहले मनुष्य खेलों को मनोरंजन के लिये ही खेला करते थे । मगर आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश के लिये खेल अति आवश्यक हो गये हैं । आज सरकार ने खेलों के महत्व को समझते हुए शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है जिससे खेलों में रुचि ज्यादा हो गयी है । आज के छात्र/छात्रायें भी खेलों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने को उत्सुक दिखाई पड़ते हैं । आजकल अभिभावक भी बच्चों को खिलाने के लिये काफी हद तक जागरुक दिखाई देते हैं ।

महाविद्यालय में खेलों के वर्तमान स्तर का श्रेय हमारे प्रबन्ध समिति के सचिव श्री दीपक गोयल जी तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० एल०सी० गौड़ को है, जिनके अथक प्रयास से कालेज में खेलों का स्तर निरन्तर प्रगति के पथ पर है और आशा है कि यदि हमारी प्रबन्ध समिति इसी प्रकार से खेलों में रुचि लेती रही तो वो दिन दूर नहीं जब ज्ञान महाविद्यालय का नाम उच्च शिखर पर होगा ।

हमारे महाविद्यालय के छात्र इसी तरह से अन्य खेलों में जैसे क्रिकेट, शतरंज आदि में भी अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं । हमारे यहाँ पर क्रिकेट, हॉकी का मैदान पूरी तरह से तैयार है तथा बास्केट बॉल, वालीवाल तथा बैडमिन्टन के मैदान भी तैयार होने की स्थिति में है ।

– डॉ० योगेश कुमार गुप्ता
क्रीड़ा प्रभारी

*

Scanned by CamScanner

माँ

जब मैं पैदा हुई तब सबसे पहले,
स्पर्श मुझे मेरी माँ ने किया ।
जब मैंने चलना सीखा तब,
मेरी माँ ने मुझे चलना सिखाया ।।

जब मैं स्कूल गई तो,
माँ ने स्नेहपूर्ण पहले दिन स्कूल भेजा ।
जब मैं परेशान होती हूँ तो,
माँ ने सबसे पहले पूछा ।।

दुख पर दुखी, सुख पर सुखी,
मेरी माँ होती है ।
मेरी हर शैतानी व गलती को,
माफ करती मेरी माँ ।।

मेरी सबसे अच्छी सहेली,
माँ माई बेस्ट फ्रेन्ड मेरी ।
माँ मेरा प्यार मेरी माँ (माई लव),
यही तो मेरी अनौखी दुनिया मेरी माँ ।।

– सुमन
बी.एड.

*

दुनिया

कैसी ये दुनिया कैसे लोग यहाँ के,
खोए हुए जाने सपनों में किस जहाँ के ।
यहाँ हर एक का अदांज है निराला,
कोई है रोता तो कोई है भोला-भाला ।।
अमीर समझे खुद को खुदा है,
गरीब समझे खुद को दुखी सबसे ज्यादा,
उसके लिए तो जग में एक वो है अभागा ।
बच्चों का तो अंदाज ही अलग है,
पल में जो दुश्मन वो दोस्त अब है ।
इन सबको देखकर तो मुश्किल में खुद भी हैं,
बनाया इन्हें क्या, ये बने क्या गजब है ।
अब, हमसे ना पूछना इन बातों का क्या, सबब है ।
अरे! हम कौनसा, इन सबसे अलग हैं ।।

– प्रेक्षा
बी.एड.

*

यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी होता, तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े ग्रन्थ हो जाते, और विश्व कोष महान ऋषि बन जाते। सत्यता यह है कि बालक अनन्त अन्तर्निहित शक्तियों का भण्डार है। उनको प्रकाश में लाना और बालक को क्रियाशील बनाना ही शिक्षा है।

– स्वामी विवेकानन्द

Scanned by CamScanner

क्या प्रभावशाली शिक्षण के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है ?

जी हाँ जरुर ही,

प्रभावशाली शिक्षण के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है क्योंकि–

दुनियाँ कुछ भी कहे मैं मानूँ नहीं ।
जो मुझे सही दिखाये मैं मानूँ वही ।।

जिस प्रकार से कमल सरोवर की गहरी दलदल में स्थायी होने और शीतल जल की तरंगों के ऊपर तैरने के बावजूद भी बिना प्रभात समय की सूर्य की किरणों के अपनी मनभावन आकृति को बन्द ही पाता है। किन्तु जब प्रभात सूर्य की किरणों को स्पर्श करता है तो फिर इस संसार में वह दिल खोलकर हँसने के बाद सारे व्यक्तियों के मनोभावों को लुभाता है। ठीक उसी प्रकार से हम लोग भी पी.जी. तो कर लेते हैं, किन्तु हम अपने विषय में सरोवर रूपी दलदल की भाँति अपने ज्ञान की तुष्टि न होने के कारण उलझे रहते हैं और पी. जी. करने के बाद भी लक्ष्य निर्धारित न होने से भावनाओं रूपी तरंगों में हिलोरे लेते रहते हैं। जब प्रशिक्षण रूपी सूर्य की नवीन किरणें हमारे ऊपर पड़ती हैं तो हमें जीवन का नया मार्ग मिलता है व इसमें हमारे अन्दर की छिपी आभा के कपाटों को धीरे–धीरे अति विकसित कर खोल दिया जाता है और हम किसी एक मार्ग में विकसित होकर खिले पुष्प की भाँति सारे संसार को अपने ज्ञान द्वारा सन्तुष्ट करते हैं।

जो हमारे साथी प्राचीन काल को आधार मानकर प्रशिक्षण की बुराई करते हैं, उनके अनुसार जो भी हो पर मैं तो कहना चाहूँगा कि–

जो करते बातें प्राचीन की,
शायद नहीं उन्हें सूझ है नवीन की ।
प्राचीन में परलोक था भावी विश्राम,
आज सच में पहुँच लेकर पैगाम प्रशिक्षण की जो करते बुराई,
वह नहीं जानते इसकी सच्चाई को
मुनियों ने थी सिर्फ गाथा गाई,
प्रशिक्षण ने है कर दिखलाई ।

जिस प्रकार से प्राचीन काल में बुद्धि होने के बावजूद हम सब कुछ होते हुए भी सिर्फ भावी कल्पना कर सकते थे। लेकिन प्रशिक्षण रूपी तर्क के अभाव में प्राप्त नहीं कर पाते थे। आज हमारा प्रशिक्षण दिन प्रतिदिन हर क्षेत्र में अपनी नई छाप छोड़कर भावी ज्ञान को सत्य कर दिखाता है। व्यक्ति कभी चन्द्रमा पर जाता है, कभी मंगल ग्रह पर जाता है और वहाँ से साक्ष्य भी लाता है तथा फिर से अन्य ग्रह की ओर अग्रसर हो जाता है। यही नहीं प्रशिक्षण के बल पर ही

आज व्यक्ति ने अपने द्वारा निर्मित कृत्रिम उपग्रह भी आकाश में लटका दिये हैं। यह सब प्रशिक्षण की ही देन है। प्रशिक्षण के महत्त्व को हम फिर से एक वार सूर्य के प्रकाश रूपी पूर्णता पाने से बताना चाहेंगे कि जिस प्रकार से हरे पौधों के पास अपना पर्णहरिम, कार्बनडाईआक्साइड तथा पानी सब कुछ होने के वावजूद भी सूर्य के प्रकाश के न मिलने से वह अपने भोजन की पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जव सूर्य का प्रकाश मिलता है तव वह प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा अपने भोजन का निर्माण कर पूर्णता को प्राप्त करते हैं। उसी प्रकार से हम भी पी.जी. करने के वावजूद भी बिना प्रशिक्षण के अपनी अपूर्णता ही स्वीकार करते हैं। जब प्रशिक्षण प्राप्त करके निकलते हैं तो अपने को पूर्ण परिपक्व कहते हैं।

अव मैं अपने साथियों को वताना चाहूँगा कि क्या एक अप्रशिक्षित कम्प्यूटर का अध्यापक केवल किताबी ज्ञान के आधार पर छात्रों की लिखित, मौखिक, प्रायोगिक तथा तार्किक सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है, शायद नहीं। क्या अप्रशिक्षित मेडीकल अध्यापक छात्रों की उपरोक्त सारी समस्यायें हल कर सकता है, नहीं। क्या अप्रशिक्षित इन्जीनियर अध्यापक इंजीनियरिंग के छात्रों को सम्पूर्ण समस्याओं को सुलझा कर सन्तुष्टि दे पायेगा, शायद नहीं। ये लोग यदि शिक्षण का कार्य करते हैं, तो समाज भले ही कुछ भी महत्त्व दें लेकिन मैं तो सिर्फ यही कहूँगा कि विना प्रशिक्षण के हम छात्रों के तर्कों में फँस कर मार्ग प्रशस्त करने में उलझ सकते हैं। लेकिन प्रशिक्षण के बाद ज्यादा से ज्यादा हम छात्रों की शिक्षण समस्याओं को सुलझाने में समर्थ हो जाते हैं। इसके पक्ष में मैं कहना चाहूँगा कि–

प्रशिक्षण लेकर जो जाते हैं, वे विषम समय हर्षाते हैं।
करो न "इन्द्र" तुम इसकी बुराई, अप्राप्य रही जो जीवन में यहाँ जाती है सिखलाई
प्रशिक्षण की तो बात है निराली, हर मोड़ पर करता यह रखवाली।
कितना भी लुटाओ ज्ञान तर्क को, फिर भी न हो नीची डाली।
प्रशिक्षण है तर्कों का हर क्षण, सच्चे मन से तुम लेना बहिनों-भाई जहाँ गुड्ड निगल्ले मिल जायें, तब काम आयेगी ये चतुराई।

अतः मैं और विस्तार में न जाकर सिर्फ यही कहना चाहूँगा कि छात्रों की सारी समस्याओं को लिखित, मौखिक, प्रायोगिक तथा तार्किक आदि ज्ञान के द्वारा पूर्ण सन्तुष्टि देने के लिए प्रशिक्षण अति आवश्यक है। इसे किसी भी वास्तुविक रूप से नकारा नहीं जा सकता है। अपनी हठधर्मिता और घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण ही लोग उसे महत्वहीन बताते रहते हैं।

– सुरेन्द्र बाबू चेतक "इन्द्र"
बी०एड०

*

Scanned by CamScanner

Education ?

- "By education I mean an all round drawing out of the best in child and man body, mind and spit."

  — Mahatma Gandhi

- "Education is a process of living and not a preparation for future living."

  — John Dewcy

- "Education is the development in the individual of all the perfection of which he is capable."

  — Kant

- "Education means the brigning out of the ideas of universal validity which are latest in the mind of every man."

  — Socratus

- "Education is a process by which the child makes its internal external."

  — Frobel

- "Education is the complete development of individuality so that man can make an original contribution to human life according to his best capacity."

  — T. P. Nunn

- "Education is the natural, harmonious and progressive development of man's innate powers."

  — Pestalozzi

- "Education should be man making and society making"

  — S. Radha Krishnan

- Sandhya Singh

✳

Scanned by CamScanner

Allergy

Allergy has only been recognised in the last 20 years, as it was originally defined by Von Pirquet (1906) to described abnormal and modified immune reactivity such a hypersensitivity and anaphylaxis. The incidence of common allergic diseases such as bronchial asthma, allergic rhinitis and atopic dermatitis has dramatically increased over the last decades in the most of the countries.

Airborne biopollutants pose many health problems due to their allergic properties. As a result of urbanization and industrialization the number of allergens have increased. Microorganisms may enter building from outside but the most important sources are usually within the buildings. Mould growth occurs in many homes and spores may come from fungi growing on condensation on walls, rotting food, food scraps and house dust. They may become dispersed by human activity within the buildings. Concentrations of airborne spores are usually greatest with heavy moulding vigorous disturbance and little ventilations. The inhalation of such aeroallergens spores and their subsequent deposition on mucosa initiates allergic respiratory diseases.

In India about 10 millions people suffer from asthma and another 15 millions from recurrent allergic rhinitis due to various inhalant allergens.

- *Dr. Antima Kulshrestha*
Lecturer in Botany

Scanned by CamScanner

Students and Politics

Students are the make up of modern India. The question whether students should be allowed to take part in politics should be discussed. Some politicians, educationists and teacher think that the student should be given pratical training in politics. Opposition speak in favour of students participation. In the battle of freedom their active role with the nationalists and patriots. They made their memorable contribution in uprooting the foriegn rule from our country. The question of students participation in politics disputed one. The first aim of an student is to dispossed their fundamental duties of acadamic enrichment and moral character. Hence inspite of taking an active part in the politics, they should devote themselves whole heartedly to their studies. It is true that politics is not a game for half developed powers and immature mind. Students need great cultivation and disciplane before taking active part in politics. If students are immature then they will be harmful as much to themselves as to their country. Debates on politics will help the students to frame their views, students should know the political system of the country and be acquainted with the political problems they may express their views on political problems but they must refrain from active participation during their students life.

- Brajesh Kumar Sharma
Ex. Student

*

Value of Time

1. To realise the value of one year, Ask a student who has failed in his exams.
2. To realise the value of one month, Ask a patient who has the long to lire.
3. To realise the value of one week, Ask an editor of a weekly.
4. To realise the value of one hour, Ask the friend who are waiting to meet.
5. To realise the value of one minute, Ask a person who has missed a train.
6. To realise the value of one millisecond, Ask a player who has won a gold.

- Lalitendra Kumar
Ex. Student

*

Scanned by CamScanner

Humanism of Mahatma Gandhi

Gandhi is the most gigantic personality of the modern world. He was a religious minded, God like figure whose influence was tremendous on the life and literature of the modern world. His philsophy of simpleton humanism deeply influeneed human thought. His cosmopolition philanthropism has become almost universally accepted creed of the whole humanity it is called Gandhism. The stream of Gandhian thought pervades the whole domain of human thought; religion, politics, sociology, philosophy, economics, low, justic and ethies. The basic of Gandhian creed is selfless service of humanity. It is a cult having the synthesis of the prominent religious faiths of the world. Gandhism contains not any complicated, system of metaphysics but it is a creed that emphasis the fundamental human values - love, charity spirit of selfless service of poor and downtrdden, truth and non violence.

Gandhi was one of the greatest humanists of the world like Jesus Christ, Buddha and Mahavir. He was a great prophet born to alleviate the sufferings and misery of the afflicted humanity. He identified himself with the lowest of the low and proved himself the friend of the poorest of the poor and champion of the most degraded sections of the society. Although he worked for the freedom of India from the British. C.F. Andrews called him the most cristlike man. He believed in the fundamental equality of all human beings. So he fought against imperialism and did a commendable service to remove untouchabilety from the hindu religion and uplifting the status of women. **Gandhi wrote :**

"It is sin to believe that any one else is superior or inferior to ourselves. We are all equal. None are high and none are low... The distrinction between high and low is a blot on Hinduism, which we must obliterate. "

Because of his love of truth, he is not the least ashamed of such frank confessions. **He puts :**

"Truth is like vast tree, which yields more and more fruit, the more you nature it, the deeper is the search in the mine of truth, the richer is the discovery of the gems buried there, in the shape of openings for an every grater variet of service."

In a world of nuclear giants and ethical infants - Gandhi was an ethical giant. We know more about war and kelling but Gandhi know nothing about killing. He was the true spokesman of the conscience of mankind and the great minionary of love, Truth and Non-violence.

- Pawan Kumar
B.Ed.

*

Scanned by CamScanner

प्रबन्ध-तन्त्र

अध्यक्ष
श्रीमती आशा देवी

सचिव
श्री दीपक गोयल

प्राचार्य
डॉ. एल. सी. गौड़

सम्पादक
डॉ. वाई. के. गुप्ता

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner